अंक 22

सत्र 2018-19

ऋतम्भरा

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय

अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

(चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध)

(NAAC ACCREDITED COLLEGE WITH CGPA 2.71)

Web.: www.dpbscollegeanoopshahr.org • E-mail : mails_principaldpbs@rediffmail.com • Phone : 05734-275450

सैन्य सेवा

Quality Enhancement in Higher Education
The Contemporary Challenges
D.P.B.S. (P.G.) COLLEGE, ANOOPSHAHR

DPBS. P.G.
41 UP Bn. NCC BULANDSHAHAR

॥ वन्दना ॥

हे हंस वाहिनी ज्ञान-दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥
जग सिरमौर बनायें भारत,
वह बल विक्रम दे, अम्ब विमल-मति दे॥
साहस शील हृदय में भर दे,
जीवन त्याग तपोमय कर दे॥
संयम सत्य स्नेह का वर दे,
स्वाभिमान भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
लव-कुश ध्रुव प्रहलाद बनें हम,
मानवता का त्रास हरें हम।
सीता सावित्री दुर्गा माँ,
फिर घर घर भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
हे हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥

ऋतम्भरा

सम्पादक मण्डल

डॉ॰ यू॰ के॰ झा
(प्राचार्य/संरक्षक)

डॉ॰ वी॰ के॰ गोयल
(प्रधान सम्पादक)

श्री सीमान्त कुमार दुबे
(सम्पादक)

श्री सचिन अग्रवाल
(सम्पादक)

डॉ॰ भुवनेश कुमार
(सम्पादक)

डॉ॰ एस॰ के॰ सिंह
(सम्पादक)

ज्योति शर्मा
(बी.एड. द्वितीय वर्ष)

सुरभि शर्मा
(बी.ए. तृतीय वर्ष)

हे कर्मनिष्ठ, हे धर्मनिष्ठ, तुम शासन प्रिय हे सेनानी,
तुम सदा कर्म में लीन रहे, सबके हित के तुम कल्याणी।
तुम मरकर भी हो अमर सदा, जन-मन के हे तुम महाप्राण,
हम हैं श्रद्धांजलि अर्पित करते, शत प्रणाम, शत-शत प्रणाम।

श्रद्धेय स्व. श्री दुर्गा प्रसाद जी

श्रद्धेय स्व. श्री बलजीत सिंह जी

श्रद्धेय स्व. श्री भगवती प्रसाद गर्ग जी

A Source of Eternal Inspiration

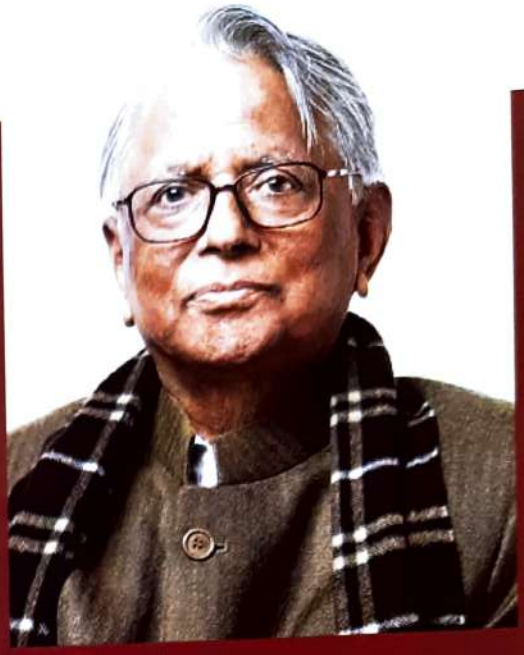

Jaipraksh Gaur

Founder Chairman, Jaypee Group

On the path of progress, education is the medium that can allow our beloved country to not only conserve its culture but also ignite the minds of our newer generation and empower them to be at per the citizens of other developed countries.

Science and technology in the 21st century will unleash a revolution of progress that is beyond our imagination today and take us to universal horizon beyond the limits of the world around.

We are determined to provide quality education to our students through the most modern educational institutions to make them financially empowered while shaping them into self reliant and confident citizens of a modern India. These institutions would strive to inculcate discipline and character building along with serious pursuit of knowledge utilizing the most advanced teaching practices and high moral standards, so that our teachers and students can strive forward and see the transformation of the country into an advanced nation within their life time.

"Education is an instrument of empowerment to equip our people to help them become economically independent and self sustaining."

My best wishes

MANOJ GAUR
Executive Chairman

JAIPRAKASH
ASSOCIATES LIMITED

12 Dec. 2018

संदेश

गंगा के रम्य तट पर स्थित एवं "छोटी काशी" के नाम से विख्यात प्राचीन नगर अनूपशहर में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह मेरे लिये अत्यन्त हर्ष का विषय है कि यह महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका ऋतम्भरा का बाईसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

पत्रिका एक विचार मंच है जो विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को सम-सामयिक समस्याओं पर अपने मन के भाव व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में न केवल साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास होता है बल्कि उनके सामान्य ज्ञान का भी संवर्द्धन होता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होगी। मैं इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

प्राचार्य
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलिज
अनूपशहर, बुलन्दशहर

मनोज गौड़

JAYPEE GROUP

Head Office : 'JA House' 63, Basant Lok, Vasant Vihar, New Delhi-110 057 (India)
Ph.: +91 (11) 26141540, 26147411 Fax : +91(11) 26145389, 26143591
Corp. & Regd Office : Sector-128, Noida - 201 304, Uttar Pradesh (India)
Ph.: +91 (120) 4609000, 2470800 Fax : +91 (120) 4609464, 4609496

डि. प्रशांत कुमार रेड्डी, भा.प्रशा.से.

भारत के उप-राष्ट्रपति के निजी सचिव
PRIVATE SECRETARY
TO THE VICE-PRESIDENT OF INDIA
नई दिल्ली/NEW DELHI - 110011
TEL.: 23016344/23016422 FAX : 23018124

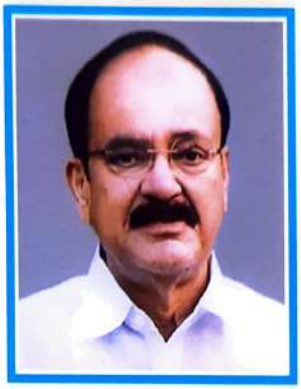

संदेश

महामहिम उपराष्ट्रपति जी को यह जानकर हर्ष हुआ है कि शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालयों में अग्रणी दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर, उत्तरप्रदेश द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के बाईसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। जो कि सराहनीय प्रयास है।

दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर, उत्तर प्रदेश के सभी पदाधिकारियों के उज्जवल भविष्य की मंगल कामना के साथ महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के बाईसवें अंक की सफलता हेतु माननीय उपराष्ट्रपति जी अपनी सदाकांक्षा और शुभाकांक्षा संप्रेषित करते हैं।

प्रशांति
(डि. प्रशांत कुमार रेड्डी)

नई दिल्ली
12 दिसम्बर, 2018

Sunil Sharma
Executive Vice Chairman

JAIPRAKASH
ASSOCIATES LIMITED

MESSAGE

It gives me great pleasure to know that Durga Prasad Baljeet Singh (PG) College, Anoopshahr, is going to publish the 22nd edition of its annual magazine "Ritambhara". I am sure that the entire student fraternity of your institution must be impatiently waiting for the magazine to come out, which I believe would be as impressive as yester years.

College magazines provide an ideal platform for integration of knowledge & idea of the students which otherwise may not find the light of the day. It is the best place for the young writers to express their literary skills and exhibit their analytical abilities on myriad subjects.

D.P.B.S. (PG) College has been doing yeomen service to the marginalised sections of the society by providing educational infrastructure to students from such communities also, to enable them to reap the benefits of higher education. This way, institutions like yours are strengthening the shoulders of our young generation to prepare them to carry the nation to a path of sustained development.

Educational methods are continuously evolving to make it more purposeful. So, along with 'literacy' & 'numeracy', which are the pillars of our education system, a great deal of emphasis needs to be placed on the areas which relate education to Life Skills & Productivity. Such an approach will equip each student to make the right choices in life and excel in their chosen field. I exhort your institution to be conscious of this challenge in its functioning.

While recognizing the hardwork put in by everyone associated with the publication, I also take this opportunity to wish the College, its students & faculty all the very best in their quest to excel.

With Best Wishes

S. K. Sharma

SUNIL KUMAR SHARMA

JAYPEE
GROUP

Regd. & Corporate Office :
Sector 128, Noida - 201304, Uttar Pradesh (India)
Ph : +91 (120) 4609000, 2470800 Direct : +91 (120) 2465504
Fax : +91 (120) 4609496, 4609464, Email: sunil.sharma@jalindia.co.in

प्रो॰ धीरेन्द्र पाल सिंह
अध्यक्ष
Prof. D. P. Singh
Chairman

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
Ministry of Human Resource Development, Govt. of India
बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002
Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002
दूरभाष Phone कार्यालय Off.: 011-23234019, 23236350
फैक्स Fax : 011-23239659, email: cm.ugc@nic.in | web: www.ugc.ac.in

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर, उत्तर प्रदेश, सत्र 2018-19 में अपनी वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** का बाईसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

वार्षिक पत्रिका के माध्यम से कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने का अवसर प्राप्त होता हैं। मैं आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक छात्र इस अवसर का लाभ उठायेगें तथा अपने विचारों से समाज व राष्ट्र को नई दिशा देने में अग्रणी भूमिका निभायेगें।

इस अवसर पर मैं कॉलेज के प्राचार्य, संकाय एवं कर्मचारियों, सभी छात्र-छात्राओं तथा सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(धीरेन्द्र पाल सिंह)

3 दिसम्बर, 2018

संजय शर्मा विधायक
अनूपशहर, जिला-बुलन्दशहर
मो.: 9818326000, 8887150867

क. 6 No. 212940
दिनांक : 22.12.2018

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका ऋतम्भरा संस्करण 2018-19 का प्रकाशन करने जा रहा है। वार्षिक पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा एवं कौशल अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका में शैक्षणिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश होगा जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होंगी तथा इनसे विद्यार्थियों की बौद्धिक प्रतिभा में अभिवृद्धि होगी।

राज्य एवं केंद्र सरकार द्वारा छात्र हित में अनेकों योजनाओं का संचालन किया जा रहा है, सभी विद्यार्थी इन योजनाओं का लाभ लें। मैं आशा करता हूँ कि महाविद्यालय परिवार अपनी प्रतिष्ठा, गरिमा एवं ख्याति के साथ शिक्षा के सभी आयामों का निर्वहन करता रहेगा। मैं इस पत्रिका के सफल एवं सार्थक प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ तथा सभी छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(संजय शर्मा)

डॉ. प्रीति गौतम
निदेशक, उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा निदेशालय, उ० प्र०
इलाहाबाद
0532-2623874 (का.)
0532-2423919 (फैक्स)
0532-2256785 (आ.)
9411036685 (मो.)

दिनांक 05.12.2018

संदेश

अत्यधिक हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलेज, अनूपशहर, बुलन्दशहर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **"ऋतम्भरा"** का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिका के प्रकाशन से छात्र-छात्राओं के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास तथा रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का अवसर प्राप्त होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय की छात्र-छात्राएं अपने लेखों, कविताओं, कहानियों आदि के माध्यम से अपने देश की स्वस्थ परम्पराओं से जुड़ने का प्रयास करेगी।

आशा है कि सार्थक लेखों के संग्रह के द्वारा पत्रिका छात्र-छात्राओं के लिये सृजनशीलता, सुरूचिपूर्ण रचनात्मक प्रतिभा व उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के साथ ही देश प्रेम की भावना को विकसित करने में सहायक सिद्ध हो सकेगी तथा उनके लिये पथ-प्रदर्शक का कार्य करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. प्रीति गौतम)

प्राचार्य, दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलेज, अनूपशहर, बुलन्दशहर।

प्रोफेसर (डॉ.) राजीव कुमार गुप्ता
(एम.कॉम., एल-एल.बी., पी-एच.डी., एम.बी.ए., एम.जे.)
क्षेत्रीय उच्च अधिकारी, मेरठ

दूरभाष : 0121-2400444, 09868106027
Office : Regional Higher Education Officer,
E-mail : rheomeerut@yahoo.com
www.rheomrt.org

पत्र संख्या : 44/दिनांक 12.12.2018

संदेश

महोदय,

यह हर्ष का विषय है कि डी.पी.बी.एस.(पी.जी.) कॉलिज, अनूपशहर, बुलंदशहर अपनी पत्रिका "ऋतम्भरा" का 22वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन सामूहिक प्रयास से संभव हो पाता है। यह पत्रिका महाविद्यालय की रचनात्मक भूमिका का एक सराहनीय प्रयास है। आशा है कि पत्रिका समयान्तर्गत प्रकाशित होकर समस्त विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध होगी। यह पाठकों को रूचिकर तो लगेगी ही, साथ में देश और समाज के लिये कुछ करने की प्रेरणा भी देगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

महाविद्यालय परिवार और विद्यार्थियों को प्रेरणादायी और समाजोपयोगी पत्रिका के प्रकाशन के लिये बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(राजीव कुमार गुप्ता)

डॉ. यू.के. झा
प्राचार्य,
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलेज, अनूपशहर, बुलन्दशहर।

चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ - 250 004 (उ.प्र.)

पत्रांक : एस.वी.सी./20/1231 दिनांक : 03.12.2018

प्रोफेसर नरेन्द्र कुमार तनेजा
पी-एच.डी. (अर्थशास्त्र)
कुलपति

संदेश

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर (बुलन्दशहर) द्वारा सत्र 2018-19 की वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** के बाईसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। विश्वास है कि यह पत्रिका छात्र/छात्राओं को सृजनात्मक प्रतिभा के निखार का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ ज्ञानोपयोगी लेखों को प्रकाशित करेगी। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है। महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन करने हेतु शुभकामनायें।

नरेन्द्र तनेजा
(एन. के. तनेजा)

डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य)
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर (बुलन्दशहर) - 202390

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर
मेरठ-250 004
कार्यालय : +91-0121-2760554, 2760551, फैक्स : 2762838
शिविर कार्यालय : +91-0121-2600066, फैक्स : 2760577
वैबसाइट : ccsuniversity.ac.in
ई-मेल : vc@ccsuniversity.ac.in

Prof (Dr.) Rajiv Saxena
Vice Chancellor
Jaypee University, Anoopshahr
(Established under the Govt. of Uttar Pradesh Act No. 8 of 2014)
Aligarh Road, Anoopshahr, Distt. Bulandshahr (UP) - 203390
www.jaypeeu.ac.in

संदेश

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' के 22वें अंक के प्रकाशित होने के अवसर पर मैं आनंदित महसूस कर रहा हूँ। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के समग्र एवं चतुर्मुखी विकास के लिए शिक्षा के साथ-साथ साहित्यिक गतिविधियों का होना भी अति आवश्यक है।

शिक्षा का वास्तविक मतलब होता है- विद्यार्थियों की संकीर्ण विचारधारा एवं उनके वैचारिक दारिद्रय का नाश हो, उनके मन एवं मस्तिष्क में से अवैज्ञानिक एवं अप्रांसगिक मान्यताओं की खरपतवार जड़ से साफ हो और वे उच्च आदर्शों तथा नीतियों को अपनाते हुए अपने जीवन समाज एवं देश को उत्कृष्टता की ओर ले जा सकने वाले बनें। मैं कामना करता हूं कि यह पत्रिका इन स्थापित उद्देश्यों की लब्धि में समर्थ होगी।

ऋतम्भरा के सफलतापूर्वक प्रकाशन के इस पावन मौके पर मैं पत्रिका के संपादक मंडल, महाविद्यालय के विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं प्राचार्य महोदय को दिली मुबारकबाद एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं, साथ ही साथ उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

जय हिन्द

प्रो. राजीव सक्सेना

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय

महाशय दुर्गा प्रसाद मार्ग, अनूपशहर (बुलन्दशहर) उ.प्र.-203390
(सम्बद्ध चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
Web.: www.dpbscollegeanoopshahr.org । E-mail : mails_principaldpbs@rediffmail.com । Phone : 05734-275450
NAAC Certification Grade B (CGPA 2.71)

अजय गर्ग
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

संदेश

दिनांक : 13.12.2018

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका ऋतम्भरा का बाईसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका का यह अंक निश्चित ही विविध सम-सामयिक विषयों से युक्त तथा छात्रोपयोगी विषय-वस्तु से परिपूर्ण होगा। यह पत्रिका छात्र-छात्राओं की रचनात्मक अभिव्यक्ति को विकसित करने में सहायक होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

Ajay Garg

(अजय गर्ग)

MESSAGE

I am very happy to know that 22nd edition of college magazine **'RITAMBHARA'** is going to be published shortly. I am sure that the articles contributed by the authors will be of high quality and make this volume attractive and valuable asset.

I would like to appeal to the faculty of the college, to continue their pursuit of excellence by equipping themselves with the modern teaching techniques and also maintain discipline at any cost.

I have the good fortune of being associated with the growth of this institutions and the progress it has recorded in last decade.

I convey my appreciations to all those who are associated in the publication of this magazine.

(Dr. K.P. Singh)
Secretary
College Management Committee

From the desk of the Principal....

Education, according to Albert Einstein, "is not the learning of facts, but the training of mind to think." A thinking mind can find solution to any problem and face any challenge that comes in his/her ways. It is in this context that the publication of magazines, newspapers, journals, books etc., that promote intellectual thinking, assumes significance.

We are pleased to get the publication of 22nd volume of our annual magazine RITAMBHARA done in time despite several odds. The magazine showcases our latest activities, intellectual strength and the progress made over the years. It is the product of a joint endeavour of our teachers, students and other staff members. My thanks to all the members of the editorial board, our faculty members and students who have enriched the magazine with their valuable contributions.

Jha

(Dr. U.K. Jha)
Principal

प्रधान सम्पादक की कलम से...

सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में रोजगार के अवसर संकुचित होते जा रहे हैं। मंहगाई अपनी चरम सीमा पर है। जाति की काली छाया ने आम लोगों के जीवन को जकड़ रखा है। ऐसे में आवश्यकता है अपने धैर्य एवं संयम को बनाये रखकर, गंभीर आत्म-चिन्तन करने की। आम जिन्दगी में चुनौतियाँ विकट हैं और यह दुर्गम, किन्तु तर्कपूर्ण वाद-विवाद एवं संवाद के माध्यम से कठिन से कठिन समस्या का भी समाधान ढूँढा जा सकता है। पत्र-पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जो चिंतनशील व्यक्तियों को न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है बल्कि सम-सामयिक समस्याओं पर समाज का मार्गदर्शन करने का भी अवसर प्रदान करती है।

वार्षिक पत्रिका '**ऋतम्भरा**' का नियमित प्रकाशन हमारे महाविद्यालय में बौद्धिक चिन्तन की परंपरा को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी और मुझे खुशी है कि पत्रिका की गुणवत्ता को और अधिक विकसित करने के लिये प्रधान सम्पादक के रूप में मुझे यह अवसर प्रदान किया गया है। वास्तव में यह पत्रिका हमारे विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक, रचनात्मक एवं भावात्मक अभिव्यक्ति की क्षमता को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करती है। इसके साथ-साथ इस पत्रिका द्वारा महाविद्यालय की बहुमुखी उपलब्धियों को रेखांकित करने के साथ ही पर विशिष्ट उपलब्धियाँ अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित एवं प्रोत्साहित भी किया जाता है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए पत्रिका का वर्तमान अंक को अधिक रोचक, तथ्यात्मक तथा त्रुटिरहित बनाने का प्रयत्न किया गया है।

पत्रिका के बाईसवें अंक के प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग प्रदान करने के लिए मैं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों का आभार प्रकार करता हूँ। उन विद्यार्थियों, प्राध्याकों एवं कर्मचारियों का आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका को बौद्धिक रूप से समृद्ध करने की चेष्टा की है। साथ ही मैं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यू.के. झा तथा उन सभी महानुभावों का भी आभार प्रकट करना चाहूँगा जिन्होंने अपना शुभ संदेश प्रेषित कर हमारा उत्साहवर्द्धन एवं मार्गदर्शन किया है। अन्त में मैं डी.के. पब्लिशर्स एवं प्रिंटर्स नई दिल्ली का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप '**ऋतम्भरा**' को मुद्रित किया।

डॉ. वी.के. गोयल

प्रधान सम्पादक

प्राध्यापक मण्डल (वित्त पोषित)

बाँये से दाँयें : श्री सीमान्त कुमार दुबे, श्री यजवेन्द्र कुमार, डॉ. आर. के. अग्रवाल, डॉ. वी. के. गोयल, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), डॉ. मुनेश कुमार, डॉ. पी. के. त्यागी, डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती, श्री लक्ष्मण सिंह

प्राध्यापक मण्डल (स्ववित्त पोषित)

बाँये से दाँयें (बैठे हुए प्रथम पंक्ति) : श्री पंकज गुप्ता, डॉ. जी.के. बंसल, डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह, श्री सचिन अग्रवाल, श्री मयंक शर्मा, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), डॉ. भुवनेश कुमार, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, डॉ. सुनीता गौड़, डॉ. सुधा उपाध्याय, डॉ. के.सी. गौड़।

बाँये से दाँयें (खड़े हुए प्रथम पंक्ति) : डॉ. तरूण बाबू, श्रीमती ममता शर्मा, डॉ. जागृति सिंह, श्री रविकान्त गौड़, श्री सत्य प्रकाश, डॉ. विशाल शर्मा, डॉ. राजीव गोयल, श्री देव स्वरूप गौतम, श्री अमित सोम, श्री गुरूदत्त शर्मा, कु॰ कूशमाण्डे आर्य।

बाँये से दाँयें (खड़े हुए द्वितीय पंक्ति) : श्री सत्यपाल सिंह, श्री चन्द्रप्रकाश, श्री गौरव जैन, श्री योगेन्द्र, श्री ऋषभ वार्ष्णेय, श्री ललित शर्मा।

बाँये से दाँयें (बैठे हुए) : श्री सुनील कुमार, श्री अनिल कुमार अग्रवाल, श्री सुनील कुमार गर्ग (कार्यालय अधीक्षक), डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), श्री के. के. श्रीवास्तव, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री पंकज शर्मा

बाँये से दाँयें (खड़े हुए) : श्रीमती पार्वती, श्री कपूर चन्द्र, श्री नारायण देव मिश्रा, श्री सुनील कुमार निर्मल, श्री अमरनाथ राय, श्री विजय कुमार, श्री गजेन्द्र सिंह, श्री राम अवतार

बाँये से दाँयें (बैठे हुए) : श्री प्रमोद कुमार, श्री चन्द्र पाल सिंह, श्री सुरेश रावत, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), श्री दीपक कुमार शर्मा, श्री विजय कुमार शर्मा

बाँये से दाँयें (खड़े हुए) (प्रथम पंक्ति) : श्री सुबोध कुमार, श्री नितिन कुमार, श्री त्रिलोक चन्द गर्ग, श्री विजय कुमार, श्री रामबाबू, श्री जितेन्द्र कुमार, श्री योगेश कुमार।

बाँये से दाँयें (खड़े हुए) : श्री मान सिंह, श्री विक्रम कुमार, श्री साहब सिंह, श्री सोनू कुमार

D.P.B.S. (P.G.) COLLEGE

GYMNASEUM

अनुक्रमणिका

प्रगति आख्या (2017-18)	डॉ. उमेश कुमार झा, प्राचार्य	3
दुनिया के विनाश की तस्वीर	डॉ. विनोद गोयल, विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग	5
भूला दिए गए भारतीय योद्धा	यजुवेन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग	6
राजकोषीय घाटा बन गया चुनौती	डॉ. भुवनेश कुमार, विभागाध्यक्ष वाणिज्य विभाग	8
देश की एकता के सूत्रधार, आधुनिक भारत के निर्माता	अनिल अग्रवाल, नैत्यिक लिपिक	9
पिता	सृष्टि अग्रवाल, बी.एससी. प्रथम वर्ष	10
स्वच्छता, सरकार और सरोकार	के.के. श्रीवास्तव, पुस्तकालय सहायक	11
दुःख ही सुख का प्रसाद	रीता कुमारी, बी.एड. द्वितीय वर्ष	12
जीडीपी से जो पता नहीं चलता	विशाल शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग	13
विश्वास की ताकत	प्रीती पाल, बी.एड. द्वितीय वर्ष	14
अनूपशहर वासी भगवती प्रसाद गर्ग	डॉ. शशि रानी गोयल, अनूपशहर वासी	15
ऐसे करें भोज्य पदार्थों में मिलावट की पहचान	डॉ. मुनेश कुमार, एसो. प्रो. एवं विभा., रसा. वि. विभाग	16
हो गई ईश्वर की पूजा	हीरेश, बी.एड., द्वितीय वर्ष	17
नहाने का वैज्ञानिक तरीका	डॉ. आर. के. अग्रवाल, एसो. प्रो. एवं वि., गणित विभाग	18
आपको पता है कि हम कितने विशेष हैं... नही...	डॉ. चन्द्रावती, एसोसिएट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग	19
कोचिंग का इंजेक्शन	सीमान्त कुमार दुबे, असि. प्रो. एवं वि., शा. शिक्षा विभाग	20
श्री कृष्णायःवयम् नमः	देव स्वरुप गौतम, असिस्टेंट प्रोफेसर, बी. एड. विभाग	21
कर्ज वाली लक्ष्मी	गुरुदत्त शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, बी. एड. विभाग	22
सामाजिक समरसता व्यवहार	सत्य प्रकाश, असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग	23
गजल	आसमा परवीन, बी.एड. द्वितीय वर्ष	24
आखिर अंतर रह ही गया	सुनील कुमार गर्ग, कार्यालय अधीक्षक	25
कुछ पल	सुनील कुमार, प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग	25
चरित्रहीन	लक्ष्मण सिंह, कार्यालय सहायक	26
हमारे अंग	दीपक शर्मा, लेखाकार	26
2018 के नोबेल पुरष्कार से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण बातें	विजय शर्मा, प्रयोगशाला सहायक, बी.सी.ए. विभाग	27
दिल को छू लेने वाली कुछ पंक्तियां	जीतेन्द्र कुमार, कार्यालय सहायक	27
नोबल पुरस्कार 2018	विजय शर्मा, प्रयोगशाला सहायक, बी.सी.ए. विभाग	27
पिता	चंद्रपाल सिंह, कंप्यूटर ऑपरेटर	28
बेटियाँ	रेनू, बी.ए., द्वितीय वर्ष	28
साइबर अपराध (क्राइम) और सुरक्षा	डॉ. सुधा उपाध्याय,	29
माँ का महत्व	पूजा पाल, बी.ए., द्वितीय वर्ष	31
अनमोल वचन	आकाश, बी-एस.सी., तृतीय वर्ष	32
झूठा कौन है	प्रीती पाल, बी.एड., द्वितीय वर्ष	32
बड़प्पन सूट बूट और ठाठ में नहीं है।	जिसकी आत्मा महान है वही बड़ा है।	33
ईश्वर से प्रार्थना	कु.शीतल, बी.एड., द्वितीय वर्ष	33
आधुनिक शिक्षा प्रणाली	रूबी, बी.एड., द्वितीय वर्ष	33
राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में उद्‌बोधक नारे	प्रगति शर्मा, बी.एड., प्रथम वर्ष	34
सामान्य ज्ञान	प्रगति शर्मा, बी.एड., प्रथम वर्ष	34
मुझे कदम-कदम पर	मोनिका कुमारी, बी.ए. प्रथम वर्ष	35
दोस्ती	सोनम राघव, बी.ए., तृतीय वर्ष	36
वो कहते हैं मुझे पाकिस्तानी	जहानवी सैफी, बी.एस-सी. तृतीय वर्ष	36
मेरे भारत का सार	37	
माँ ने दिया पेन्सिल जैसा बनने का आशीर्वाद	शजनाज खान, बी.ए. प्रथम वर्ष	37
अनमोल वचन आदमी की औकात	पिंकी शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष	38

समय बदलाव का	स्नेहा, बी.ए., तृतीय वर्ष	38
जिन्दगी की सीख	मनीषा, बी.ए., तृतीय वर्ष	39
चाणक्य के शब्द	मनोरमा, बी.ए. तृतीय वर्ष	40
शिक्षक है भगवान	बबली कुमारी, बी.ए., तृतीय वर्ष	40
जीवन का रहस्य		41
बेटी की जिज्ञासा	सुरभि शर्मा, बी.ए. तृतीय वर्ष	41
हाय रे पॉपुलेशन	आदित्य गौतम, बी.एस.सी, द्वितीय वर्ष	42
जीवन का मूलमंत्र	कु. सविता, एम.ए., प्रथम वर्ष	42
कम्प्यूटर की महिला	मोनिका, बी.एड. द्वितीय वर्ष	43
पाप का गुरु 'लोभ'	पूजा रानी, बी.एड., द्वितीय वर्ष	44
जीवन उद्देश्य	दिव्या बंसल, बी.एड. द्वितीय वर्ष	44
हिन्दी-भाषा और उच्चारण : मेरे विचार	डॉ. सुनीता गौड़, असिस्टेन्ट प्रोफेसर शिक्षा विभाग	45
राजा की सीखें (प्रेरणादायक कहानी)	सतेन्द्र कुमार, बी.एड., प्रथम वर्ष	46
समाज में नैतिकता का आधार	कुमारी कुशमाण्डे आर्या	47
माता निर्माण भवति	भावना सिंह, बी.एड. प्रथम वर्ष	48
रामजी और वह बूढ़ा पागल	निकिता गोयल, बी.एड. द्वितीय वर्ष	50
भिखारी के ख्वाब और उसके कर्म	ज्योति शर्मा, बी.एड., द्वितीय वर्ष	50
जमीर	सुनीता कुमारी, बी.एड., द्वितीय वर्ष	51
क्यों फैल होते हैं छात्र	आर.सी. गौड़, बी.एड. द्वितीय वर्ष	51
मन का सूरज बुझने ना दो	कु. अल्का, बी.एड., द्वितीय वर्ष	52
मेरी नजर में शिक्षा	कु.संजय, बी.एड., प्रथम वर्ष	52
समय	रिवानी गोयल,	53
बेटियों के लिए	कु.अंजली, बी.एड. प्रथम वर्ष	53
बिटिया	कु. अजंली, बी.एड. प्रथम वर्ष	54
माँ	दिव्या बंसल, बी.एड. द्वितीया वर्ष	54
ताजमहल	कु.साधना, बी.एड. प्रथम वर्ष	54
कितना उन्नत और कीर्तिमान	ज्योति चौहान, बी.एड. प्रथम वर्ष	55
आत्मविश्वास	कु.साधना, बी.एड. प्रथम वर्ष	55
सभी महिलाओं/बेटियों को समर्पित	रिंकी, बी.एड., प्रथम वर्ष	55
प्रेरक प्रसंग	सत्यपाल सिंह लोधी, प्रवक्ता, हिन्दी विभाग	56
कविता	नीरज कुमार, बी.एड. प्रथम	56
मेरा भारत महान	निधि गौर,	57
खुश रहने के सार्थक सुझाव	निधि गौर,	57
माँ	शालिनी शर्मा, बी.ए. तृतीय वर्ष	58
जीवंतभाषा - संस्कृत		
इदं ज्ञानमन्दिरम्	श्री लक्ष्मण सिंह, सहायक प्राध्यापक संस्कृत विभाग	61
संस्कृत-संभाषण-कार्यशालायाः प्रतिवेदनम्		62
प्रियं भारतम्	करिश्मा, बी.एड. द्वितीय वर्ष	63
Statistics in Our Daily Life	Dr. P. K. Tyagi, Ass. Prof. & Head, Statistics Dep.	64
Glimpses of Indian Mathematics	Dr. R. K. Agrawal, Ass. Prof. & Head, Math. Dep.	65
Introduction of New Elements	Dr. Chandrawati, Ass. Prof., Chemistry Department	67
Career in Sports	Seemant Kumar Dubey, Ass. Prof. & Head,	68
Corruption: Self Examination	Dr. P. K. Tyagi, Ass. Prof. & Head, Stat. Dep.	70
Action Research	Dr. Shailendra Kumar Singh, Ass. Prof., B.Ed. Dep.	71
Talent or Hardwork	Pankaj Kumar Gupta, Head, BCA Department	74
Cheating at College is getting worse	Mayank Sharma, Assistant Professor, BCA Department	75
Behave decently - Children observe and learn from you	Amit Soam, Assistant Professor, BCA Department	77
Quality Management in Teacher Education	Dr. K.C. Gaur, Head, Faculty of Education	78
Girl Education	Sakshi Agrawal, BCA (III) Year	81
Role of English is the Present day	B.Ed. IInd Year	82
महाविद्यालय परिवार		84
विभिन्न समितियाँ		87

प्रगति आख्या (2018)

डॉ. उमेश कुमार झा, प्राचार्य

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी स्थापना के 53 वर्ष पूर्ण कर चुका है। सन् 1965 से 2018 तक की इस अवधि में महाविद्यालय ने उत्तरोतर संरचनात्मक एवं गुणात्मक प्रगति की है। महाविद्यालय के अनेक छात्र एवं छात्राओं ने विश्वविद्यालय स्तर पर शैक्षिणक तथा विभिन्न पाठ्यसहगामी कार्यक्रमों में महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। वर्तमान समय में चार अनुदानित एवं चार स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं, जिनमें कुल 1527 छात्र-छात्रायें अध्ययनरत हैं। शैक्षणिक उपलब्धियों एवं अनुशासन की दृष्टि से यह महाविद्यालय चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

1. सत्र 2017-2018 का विश्वविद्यालय परीक्षाफल विगत वर्ष की भाँति उत्तम रहा है। महाविद्यालय में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार परीक्षाफल निम्न प्रकार है–

पाठ्यक्रम	परीक्षाफल (उत्तीर्ण प्रतिशत)
बी.ए.	96.03%
बी.एस-सी.	100%
बी.कॉम.	90.90%
बी.सी.ए.	90.72%
एम.ए. (संस्कृत)	93.33%
एम.एस-सी. (भौतिकी)	83.33%
एम.एस-सी. (रसायन)	92.85%
बी.एड.	100%

2. प्रबन्ध समिति द्वारा महाविद्यालय में सभी कक्षायें सुचारू रूप से चलाने हेतु विभिन्न विषयों में शासन स्तर से शिक्षकों के रिक्त पदों के सापेक्ष अंशकालिक शिक्षकों (ट्यूटर) की व्यवस्था की गयी है।
3. महाविद्यालय में रेडियो फ्रिकवेंसी लिंक द्वारा 4G की गति से सभी विभागों, पुस्तकालयों तथा कार्यालयों मे इंटरनेट की सुविधा प्रदान की गयी है ।
4. "आन्तरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC)" के तत्वाधान में शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों की गुणवत्ता संवर्धन का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है।
5. उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग प्रयागराज द्वारा चयनित श्री लक्ष्मण सिंह ने संस्कृत विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर दिनांक 24-09-2018 को कार्यभार ग्रहण किया।
6. जयप्रकाश सेवा संस्थान द्वारा महाविद्यालय में जिमनेजियम, मुख्य द्वार तथा सुरक्षाकर्मीयों हेतु शौचालय का निर्माण कराया गया इसके साथ प्राचार्य कक्ष एवं कैफेटेरिया जीर्णोद्वार भी कराया गया।
7. महाविद्यालय में दिनांक 24 फरवरी 2018 को "उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धनः सम सामयिक मुद्दे" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया।
8. दिनांक 21-06-2018 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा कर्मचारियों को योगाभ्यास का प्रशिक्षण दिया गया।
9. 10 अगस्त 2018 को साहित्य संचतेना मंच द्वारा प्रायोजित एक कवि सम्मेलन का आयोजन महाविद्यालय में किया गया।
10. महाविद्यालय में राष्ट्रीय पर्व के रूप में 15 अगस्त 2018 को स्वतंत्रता दिवस तथा 02 अक्टूबर 2018 को गांधी जयंती को उत्साह पूर्वक मनाया गया।
11. महाविद्यालय में वर्ष भर अनेक महापुरूषों की जयंती तथा राष्ट्रीय महत्व के दिवसों जैसे "राष्ट्रीय खेल दिवस", "राष्ट्रीय शिक्षक दिवस", "राष्ट्रीय हिन्दी दिवस", "राष्ट्रीय शिक्षा दिवस", "राष्ट्रीय गणित दिवस", "राष्ट्रीय युवा दिवस" तथा "राष्ट्रीय मतदाता दिवस" पर विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित कर मनाया गया।

हेतु प्रेरित किया।

12. 17-09-2018 को शासन के निर्देशानुसार महाविद्यालय में विश्वकर्मा जंयती को उत्साह पूर्वक मनाया गया।
13. 25-09-2018 को उपजिलाधिकारी, अनूपशहर की गरिमामयी उपस्थिती में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
14. 06-07 अक्टूबर 2018 को अंतरमहाविद्यालयी बास्केटबाल (पुरूष एंव महिला) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके माध्यम से विश्वविद्यालय की बास्केटबाल पुरूष एवं महिला टीम का चयन किया गया। महाविद्यालय से रवि गिरि का पुरूष टीम में तथा कुमारी प्रियंका का विश्वविद्यालय की महिला टीम में चयन हुआ।
15. 20-10-2018 को महाविद्यालय में महार्षि बाल्मकि जंयती पर एक विचार गोष्ठी का अयोजन किया गया।
16. 31 अक्टूबर 2018 को सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयंती को राष्ट्रीय अंखड़ता दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर 'एकता के लिये दौड़' तथा सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।
17. 02-11-2018 को भाषा कार्यशाला सह अतिथि व्याख्यान का बी.एड. विभाग में आयोजन किया गया। अतिथि व्याख्यता के रूप में लाल बाहदुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली के प्रोफेसर रमेश प्रसाद पाठक ने हिन्दी एवं संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण दिया।
18. महाविद्यालय में 11 नवंबर 2018 को राष्टीय शिक्षक दिवस मनाया गया जिसमें स्वंतत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौ. अबुल कलाम के व्यक्तित्व एवं कृतितत्व पर विचार गोष्ठी का अयोजन किया गया।
19. संस्कृत विभाग में 13-11-2018 से 17-11-2018 तक संस्कृत भाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के विभिन्न विद्यार्थियों ने संस्कृत भाषा की बारिकियों को सीखा।
20. छात्र कल्याण समिति द्वारा दिनांक 20-11-2018 को एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 450 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। दिनांक 24-12-2018 को सोशल मीडिया समाज के लिये हानिकारक है विषय पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
21. दिनांक 03-12-2018 से 08-12-2018 तक छः दिवसीय 'स्काउट एवं गाइड शिविर' का आयोजन किया गया जिसमें बी.एड. प्रशिक्षुओं ने व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास की अनेक विधाओं को सीखा तथा विभिन्न सामाजिक बुराईयों जैसे-कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, अशिक्षा आदि को मिटाने हेतु एक जनजागरण रैली भी निकाली।
22. महाविद्यालय में वार्षिक 'खेलकूद प्रतियोगिता' का आयोजन दिनांक 18 एवं 19 जनवरी 2019 को किया गया, जिसमें अनेक छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।
23. 23-01-2019 को महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जंयती के अवसर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।
24. दिनांक 26-01-2019 को महाविद्यालय में 'गणतंत्र दिवस' समारोह धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय स्तर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।
25. दिनांक 01 फरवरी 2019 को वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर प्रत्येक कक्षा के मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया तथा महाविद्यालय की पत्रिका 'ऋतम्भरा के बाईसवें अंक' का विमोचन किया गया।

श्रद्धेय श्री जयप्रकाश जी गौड़ अध्यक्ष, ऐंग्लो वैदिक शिक्षा समिति के नेतृत्व में महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

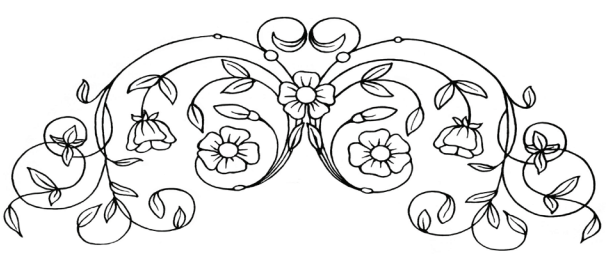

दुनिया के विनाश की तस्वीर

डॉ. विनोद गोयल, विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग

यह कोई नया सवाल नहीं है कि धरती आज की तरह की सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को झेलते हुए कितने समय तक ऐसे ही मानवीय आवास के अनुकूल बनी रहेगी। इस सदी के सबसे प्रखर वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग ने अपनी मृत्यु से दो सप्ताह पहले यह कहकर लोगों को आगाह कर दिया था कि 2600 तक धरती आग का गोला बन जाएगी, जिस पर जीवन संभव नहीं रहेगा। विज्ञान की सर्वमान्य पत्रिका नेचर सस्टेनेबिलिटी ने विगत फरवरी में डेनियल ओ नील और साथियों का एक शोधपत्र प्रकाशित किया, जो मानवीय उपभोग की वर्तमान प्रवृत्तियों के जारी रहने पर सात अरब की आबादी की धरती पर जीवन निर्वाह की सीमा निर्धारित करती है। दुनिया की आबादी 7.7 अरब तक पहुंचने वाली है। यानी धरती की धारण क्षमता से लगभग दस फीसदी ज्यादा। एक अनुमान के अनुसार, 2025 तक यह गिनती आठ अरब, 2040 तक नौ अरब और शताब्दी पूरा होते-होते ग्यारह अरब तक पहुंच जाएगी। इन शोधार्थियों ने आगे कहा है कि उपभोग, विकास और संतुष्टि के पैमाने (पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, पानी, गरीबी उन्मूलन आदि) ऊंचे कर दिए जाएं, तो उपलब्ध संसाधनों की कार्यक्षमता दो से छह गुना तक बढ़ानी पड़ेगी। नहीं तो मानवता का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। लेखकों ने इसके लिए जो उपाय सुझाए हैं, उनमें प्रमुखतः जीडीपी बढ़ाने की मारामारी से बचने, संसाधनों की अंधाधुंध खपत करने वाले देशों की हवस कम करने, जीवाश्म ईंधन छोड़कर कम कार्बन उत्सर्जन वाले परमाणु व सौर ऊर्जा को अपनाने ,भोजन में मांस के स्थान पर अन्न को प्राथमिकता देने, नई टेक्नोलॉजी में ज्यादा निवेश के साथ भ्रष्टाचार उन्मूलन जैसे सामाजिक कारक शामिल हैं।

इन दिनों एक नए शब्द ओवरशूट की खूब चर्चा है, जिसका अर्थ है, धरती के पास जितने प्राकृतिक संसाधन हैं, उनके दोहन की अंतिम सीमा को लांघ जाना। ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क ने इस वर्ष यह तारीख एक अगस्त बताई है। यानी दो अगस्त से हम संसाधनों के घाटे वाले दौर में चल रहे हैं। अमेरिका में यह तारीख 15 मार्च, 2018 को ही आ पहुंची। भारत में उपलब्ध संसाधनों के दोहन की रफ्तार अपेक्षित स्तर से 2.5 गुना, चीन में 3.8 गुना , जापान में 7.8 गुना और दक्षिण कोरिया में 8.5 गुना है।

धरती की धारण क्षमता के बारे में सबसे पहले चालीस के दशक में अमेरिकी अर्थशास्त्री विलियम फोख्त ने विचार किया था, जिसके केंद्र में पर्यावरण विनाश और खेतों की उर्वरता के प्रति चिंता थी। उन्हीं के पदचिन्हों पर बाद में पॉल एरलिच और क्लब ऑफ रोम के पुरोधा आगे बढ़े और भूख से दुनिया के विनाश की तस्वीरें प्रस्तुत करने लगे। इसी सिलसिले में आगे चलकर अमेरिका में फ्यूचरिस्टिक स्टडी का एक पूरा स्कूल बना, जिसने दुनिया के विनाश की तारीखें बारबार निर्धारित कीं। दुर्भाग्य से किसी की भविष्यवाणी सही साबित नहीं हुई।

अनेक विद्वान मानते हैं कि 19 वीं शताब्दी के मध्य में पहली बार समुद्री जहाजों के संदर्भ में धारण क्षमता की बात सामने आई, जो यह निर्धारित करने में मदद करती थी कि किस प्रकार के जहाज पर अधिकतम भार कितना दिया जा सकता है। कुछ दूसरे विशेषज्ञ धरती को जहाज जैसी किसी स्थैतिक वस्तु मानने से इनकार करते हैं। वे कुछ ऐसे अकाट्य तथ्य गिनाते हैं, जिनकी विनाश की भविष्यवाणी करने वाले आम तौर पर अनदेखी करते हैं-जैसे आज से नौ हजार साल पहले एक इंसान का भोजन उपलब्ध कराने के लिए आज की तुलना में छह गुना भूमि की दरकार होती थी, जबकि आज ज्यादा पुष्टिवर्धक भोजन उपलब्ध है। यानी आधुनिक विज्ञान और तकनीक ने भूमि की उर्वरता कई गुना बढ़ा दी है। इसी तरह ऊर्जा के बेहद

कम कार्बन उत्सर्जन वाले परमाणु, सौर और वायु रूप के बारे में पहले अनुमान नहीं लगाया जा सकता था।

नवंबर, 2017 में विलियम रिप्पल व अन्य वैज्ञानिकों ने जब 'वर्ल्ड साइंटिस्ट्स वार्निंग टू ह्यूमैनिटी : ए सेकंड नोटिस नामक पर्चा प्रकाशित किया, तो दुनिया भर के वैज्ञानिक समुदाय का ध्यान उधर गया। छब्बीस साल पहले 1992 में यूनियन ऑफ कन्सर्नड साइंटिस्ट्स में इसी तरह का एक पर्चा छपा था, जिस पर नोबेल पुरस्कार विजेताओं समेत 1,700 वैज्ञानिकों ने अपने हस्ताक्षर दिए थे। हालिया पर्चे के लिए अब तक बीस हजार वैज्ञानिकों ने हस्ताक्षर किए हैं। इसमें कहा गया है कि आबादी के विस्फोट, संसाधनों के असमान उपभोग, अंधाधुंध औद्योगिकीकरण और जलवायु परिवर्तन पर अंकुश लगाने के लिए कारगर उपाय नहीं किए गए, तो आसन्न संकट से निपटने में बहुत देर हो चुकी होगी।

उम्मीद ही नहीं, बल्कि मानव विवेक पर भरोसा है कि देर भले हो जाए, पर वह समय जल्दी ही आएगा, जब विनाश के लिए जिम्मेदार समाज का हाथ जीवन के पक्ष में खड़ा बहुमत पकड़ लेगा। साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त कश्मीरी लेखक की एक कहानी में अनपढ़ मां अपने पढ़े-लिखे वकील बेटे को यही समझाती है कि जब कुछ लोग बम छोड़कर विनाश करने की कोशिश करेंगे, तो उससे बड़ी तादाद में लोग उन्हें रोकने के लिए बढ़ आएंगे।

भूला दिए गए भारतीय योद्धा

यजुवेन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, भौतिकी विभाग

बीते ग्यारह नवंबर को प्रथम विश्वयुद्ध को सौ वर्ष पूरे हो गए। प्रथम विश्वयुद्ध में भारतीय उपमहाद्वीप के सैनिकों की भागीदारी, भूमिका और महत्व के बारे में हमारे पास बहुत कम जानकारी है, जबकि यूरोप में इसको लेकर भारी दिलचस्पी है, जो हमें गहरे तक छूती है। हालांकि कुछ भारतीय अखबारों में इस महान युद्ध के शुरू होने की सौवीं सालगिरह को व्यापक कवरेज दिया गया है। साहसी प्रयासों के बावजूद भारतीय उपमहाद्वीप के लेखकों की चुप्पी अखरती है, हालांकि भारतीय मूल के कुछ इतिहासकारों एवं विद्वानों ने ब्रिटिश या अन्य क्षेत्रों के शिक्षाविद के रूप में इस पर लिखा है।

इस पृष्ठभूमि में यह देखना परेशान करता है कि भारत की भूमिका और उसके योगदान को अक्सर भुला दिया जाता है। भारत ने जवानों और सामग्री, दोनों के मामले में इस विश्वयुद्ध में पर्याप्त योगदान दिया था। भारतीय सैनिकों ने दुनिया भर के कई युद्ध क्षेत्रों-फ्रांस, बेल्जियम, अदन, अरब, पूर्वी अफ्रीका, गैलीपोली, मिस्त्र, मेसोपोटामिया, फलीस्तीन, फारस, सैलोनिका, रूस और यहां तक कि चीन में गरिमा और सम्मान के साथ सेवाएं दीं।

इस तरह से हम भारत के लोग ब्रिटिश सेना के एक हिस्से के रूप में अपने रिश्तेदारों और पूर्वजों के योगदान को अनदेखा करने के दोषी हैं। हमने उस वक्त भारत की आबादी 32.5 करोड़ लोगों में से प्रथम विश्वयुद्ध में हिस्सा लेने वाले 17 लाख लोगों को भुला देना बेहतर समझा, जिनमें से ग्यारह लाख लोग सैनिक थे और छह लाख श्रमिक। इनमें से 62,000 लोग वापस नहीं आ सके, जबकि अन्य 67,000 लोग घायल हो गए। कुल मिलाकर युद्ध के दौरान कम से कम 74,187 भारतीय सैनिकों की मृत्यु हो गई।

हालांकि प्रथम विश्वयुद्ध में भारतीय योगदान पर डला पर्दा अब उठने लगा है, क्योंकि उत्साही भारतीय शोधकर्ता इस दिशा में काम कर रहे हैं। लेकिन इतना पर्याप्त नहीं है और ऐसा

संभवतः जानकारी के अभाव के कारण है। ऐसा माना जाता है कि मीडिया भारी सेंसरशिप के तहत काम कर रहा था, क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध के समय प्रेस की स्वतंत्रता जैसी कोई अवधारणा विकसित नहीं हुई थी।

प्रेस का उपयोग उस समय प्रचार के उपकरण के तौर पर किया जाता था। प्रत्येक देश ने अपनी सकारात्मक छवि बनाने के लिए मीडिया को तैनात किया था। मासूम कुंवारे युवाओं में देशभक्ति की भ्रमित भावना भरकर प्रेस ने उन्हें युद्ध में शामिल होने के लिए उकसाया था। वर्ष 1914 से 1919 के बीच पत्रकारों की तीन श्रेणियां थीं-आधिकारिक पत्रकार, मुक्त प्रेस और शौकिया पत्रकार या सैनिक, जो बंकरों से रिपोर्टिंग करते थे। केवलं आधिकारिक पत्रकारों को ही युद्ध क्षेत्र में जाने की इजाजत थी और आधिकारिक तस्वीरें ही युद्ध क्षेत्र की छवियों के प्राथमिक स्रोत थे।

बाद में विद्वानों ने भारत के बौद्धिक परिवेश की इस चूक को समझने का प्रयास किया। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में सेंट एंथोनी कॉलेज के पश्चिम एशिया केंद्र के फेलो और पश्चिम एशिया के आधुनिक इतिहास के एसोसिएट प्रोफेसर यूजीन रोजान लिखते हैं, 'प्रथम विश्वयुद्ध में सैनिकों, गैर-योद्धा और श्रमिकों के रूप में अपनी सेवाएं देने वाले भारतीय लोगों की बड़ी संख्या को देखते हुए यह हैरान करने वाला है कि हम उनके युद्ध अनुभवों के बारे में कितना कम जानते हैं। युरोप और मध्य पूर्व के सैनिकों के विपरीत भारतीय सैनिकों और अधिकारियों की बहुत कम डायरी, पत्रिकाएं या संस्मरण प्रकाशित हुए हैं। विद्वान लोग इस खाई को पाटने के लिए सक्रियता से काम कर रहे हैं।

'यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन में शांतनु दास और यूनिवर्सिटी ऑफ हल के डेविड ओमिशी, दोनों ने भारतीय सैनिकों द्वारा लिखे गए पत्रों और डायरी सहित नए स्रोत जुटाए हैं। फिर भी उपलब्ध सामग्री की मात्रा भारतीय सैनिकों (जिन्होंने युद्ध लड़ा, जो पीड़ित हुए और जो मारे गए) के एक मामूली अनुपात का प्रतिनिधित्व करती है। प्रथम विश्वयुद्ध को याद करने के इस मौसम में भारतीय सैनिकों की विपुल संख्या, जितने मोर्चों पर वे लड़े और जितनी कठिनाइयां उन्होंने झेली, इन सबको देखते हुए उनके योगदान की उपेक्षा करके उस महायुद्ध का कोई भी विवरण पूरा नहीं हो सकता।

जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में इतिहास के प्रोफेसर और नार्वे के ओस्लो स्थित पीस रिसर्च के ग्लोबल फेलो कौशिक राय लिखते हैं, 'इतिहासकार भारतीय सैनिकों की भूमिका के प्रति उदार नहीं रहे हैं। ब्रिटिश और अमेरिकी विद्वानों ने मिस्त्र देश और जर्मन सैनिकों के बीच के घमासान युद्ध संबंधी अपने आलेखों में भारतीय सैनिकों को मामूली जगह दी है। उनकी नजर में भारतीय सेना एक औपनिवेशिक पुलिस बल थी, जो बड़े पैमाने पर युद्ध संचालन के लिए अनुकूल नहीं थी। और भारतीय नागरिक इतिहासकारों ने कभी सैन्य मामलों में ज्यादा रुचि नहीं दिखाई।

विदेशी औपनिवेशिक शासन के लिए लड़ने और मरने वाले सिपाही चर्चा में कभी प्रमुखता में नहीं रहे, जिसने उपनिवेश विरोधी संघर्ष पर जोर दिया। भारत के उच्च शिक्षण संस्थान भी भारतीय संस्कृति के सैन्यीकरण होने के भय से प्रथम विश्वयुद्ध के सैन्य इतिहास को प्रायोजित करने के इच्छुक नहीं थे।

'भारत में अब भी प्रथम विश्वयुद्ध के आधिकारिक इतिहास का अभाव है। भारतीय सेना का इतिहास आम तौर पर सेवानिवृत्त सैन्य इतिहासकारों का उपयोग ड्रम्स ऐंड बटन्स (परेड़ वगैरह जैसे औपचारिक दिखावे) की कहानियां लिखवाने के लिए करता है, जिसे पेशेवर इतिहासकारों द्वारा गंभीरता से नहीं लिया जाता है।'

यह आलेख प्रथम विश्वयुद्ध में भारतीय सैनिकों के योगदान को याद करने का एक विनम्र प्रयास है, उम्मीद है कि भारत के इतिहासकार इस तरफ ध्यान देंगे।

अंकों का चमत्कार

$(11)^2 = 121$

$(111)^2 = 12321$

$(1111)^2 = 1234321$

$(11111)^2 = 123454321$

$(111111)^2 = 12345654321$

$(1111111)^2 = 1234567654321$

राजकोषीय घाटा बन गया चुनौती

डॉ. भुवनेश कुमार, विभागाध्यक्ष वाणिज्य विभाग

यकीनन बढ़ते राजकोषीय घाटे से आम आदमी से लेकर अर्थव्यवस्था तक की मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। चालू वित्त वर्ष 2018-19 में जहां एक ओर सरकारी आमदनी लक्ष्य के अनुरूप नहीं है। वहीं दूसरी ओर सरकारी खर्च लक्ष्य से अधिक बढ़ते गए हैं। परिणामस्वरूप सरकार के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य पूरा करना कठिन चुनौती है।

सरकार का लक्ष्य है कि 2018-19 के दौरान राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद के 3.3 फीसदी से ज्यादा न हो। लेकिन हाल ही में 14 अक्टूबर को प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार चालू वित्त वर्ष 2018-19 के पहले पांच महीने अप्रैल से अगस्त के बीच राजकोषीय घाटा लक्ष्य के 94.7 प्रतिशत पर पहुंच चुका है। यह 5.91 लाख करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच चुका है और अभी चालू वित्त वर्ष के चुनौतीपूर्ण सात महीने बकाया हैं। इस साल अप्रैल-अगस्त के दौरान कुल व्यय 10.7 लाख करोड़ रुपये है, जबकि पिछले साल की समान अवधि में यह 9.5 लाख करोड़ रुपये था। ऐसे में राजकोषीय घाटा निर्धारित लक्ष्य से कुछ अधिक जीडीपी के 3.5 प्रतिशत पर पहुंच सकता है।

निश्चित रूप से सुस्त जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) संग्रह और अतिरिक्त व्यय प्रतिबद्धताओं की वजह से सरकार संतुलन स्थापित करने की कोशिश कर रही है। प्रत्यक्ष कर संग्रह उत्साहजनक है, लेकिन जीएसटी और विनिवेश से आमदनी का निर्धारित लक्ष्य पाना मुश्किल है। विगत पांच अक्टूबर को पेट्रोल-डीजल के उत्पाद शुल्क में कटौती से 10,500 करोड़ रुपये का कुल राजस्व नुकसान हो सकता है। इसमें से केंद्र सरकार 6,100 करोड़ रुपये का बोझ उठाएगी। केंद्र सरकार के आंतरिक व्यय अनुमान से पता चलता है कि सितंबर 2018 में मोटे अनाज और दलहन के लिए घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य बाध्यताओं को पूरा करने के लिए 20,000 करोड़ रुपये अतिरिक्त आवंटन की जरूरत होगी। यह बजट में अनुमानित 1.69 लाख करोड़ रुपये खाद्य सब्सिडी के ऊपर होगा। इस साल के लिए ईंधन सब्सिडी 25,000 करोड़ रुपये रखी गई है। बहरहाल कच्चे तेल की कीमत बहुत ज्यादा बढ़ जाने के कारण सरकार को अब इस मद में भी 12,500 करोड़ रुपये अतिरिक्त खर्च करने होंगे।

चार नवंबर को ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंधों के प्रभावी होने के बाद कच्चे तेल की कीमतों के आसमान छूने की आशंकाएं बढ़ जाने से राजकोषीय घाटे की चिंताएं और भी बढ़ गई हैं। जाने माने पत्रकार और अमेरिकी नागरिक जमाल खशोगी की हत्या को लेकर यदि ट्रंप प्रशासन सऊदी अरब के खिलाफ कोई बड़ी कार्यवाही करता है, तो सऊदी अरब ऐसा होने पर कच्चे तेल का उत्पादन घटा सकता है।

दुनिया का सबसे बड़ा तेल निर्यातक सऊदी अरब प्रतिदिन एक करोड़ बैरल तेल का उत्पादन करता है। 1973-74 में इस्राइल और अरब देशों के बीच लड़ाई के दौरान सऊदी अरब ने कच्चे तेल का इस्तेमाल एक हथियार के रूप में करके पूरी दुनिया की मुश्किलें बढ़ा दी थी। दुनिया के तेल विशेषज्ञों का कहना है कि यदि सऊदी अरब तेल उत्पादन घटाकर तेल निर्यात घटाता है और नवंबर से ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध भी लागू हो जाएंगे, तब कुछ समय में ही कच्चे तेल के दाम 150 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच सकते हैं! और यदि एक डॉलर की कीमत 74 रुपये मानी जाए, तो देश का आयात बिल 17.46 लाख करोड़ रुपये होगा। इस आसमान छूते कच्चे तेल के दाम से देश के सामने राजकोषीय घाटे की भारी आशंका दिखाई दे रही है।

छिलने से लकड़ी का सौन्दर्य बढ़ता है।
खिलने से फूलों का सौन्दर्य बढ़ता है,
सौन्दर्य बढ़ाने के कितने भी साधन ढूँढो,
मगर कर्म से ही मनुष्य का सौन्दर्य बढ़ता है।

देश की एकता के सूत्रधार, आधुनिक भारत के निर्माता

अनिल अग्रवाल, नैत्यिक लिपिक

वर्ष 1947 के पहले छह महीने भारत के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे थे। साम्राज्यवादी शासन के साथ-साथ भारत का विभाजन भी अपने अंतिम चरण में पहुंच गया था। हालांकि, उस समय यह तस्वीर पूरी तरह से साफ नहीं थी कि क्या देश का एक से अधिक बार विभाजन होगा। कीमतें आसमान पर पहुंच गई थीं, खाद्य पदार्थों की कमी आम बात हो गई थी, लेकिन इन बातों से परे सबसे बड़ी चिंता भारत की एकता को लेकर नजर आ रही थी, जो खतरे में थी।

इस पृष्ठभूमि में 'गृह विभाग का बहुप्रतीक्षित गठन वर्ष 1947 के जून महीने में किया गया। इस विभाग का एक प्रमुख लक्ष्य उन 550 से भी, अधिक रियासतों से भारत के साथ उनके रिश्तों के बारे में बातचीत करना था, जिनके आकार, आबादी, भू-भाग अथवा आर्थिक स्थितियों में काफी भिन्नताएं थीं। उस समय महात्मा गांधी ने कहा था कि, 'राज्यों की समस्या इतनी ज्यादा विकट है कि सिर्फ 'आप' ही इसे सुलझा सकते हैं।' यहां पर 'आप' से आशय किसी और से नहीं, बल्कि सरदार वल्लभभाई पटेल से है, जिनकी जयंती आज हम मना रहे हैं और जिन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दे रहे हैं।

अपनी विशिष्ट सरदार पटेल शैली में उन्होंने सटीक तौर पर सुदृढ़ता और प्रशासनिक दक्षता के साथ इस चुनौती को पूरा किया। समय कम था और जवाबदेही बहुत बड़ी थी। लेकिन, इसे अंजाम देने वाली शख्सियत कोई साधारण व्यक्ति नहीं, बल्कि सरदार पटेल ही थे, जो इस बात के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थे कि वह किसी भी सूरत में अपने राष्ट्र को झुकने नहीं देंगे। उन्होंने और उनकी टीम ने एक-एक करके सभी रियासतों से बातचीत की और इन सभी रियासतों को आजाद भारत का अभिन्न हिस्सा, बनाना सुनिश्चित किया। सरदार पटेल ने पूरी तन्मयता और लगन से दिन-रात एक करते हुए इस कार्य को पूरा किया और इसी शैली की बदौलत ही आधुनिक भारत का वर्तमान एकीकृत मानचित्र हम देख रहे हैं।

कहा जाता है कि वी.पी. मेनन ने स्वतंत्रता मिलने पर सरकारी सेवा से अवकाश लेने की इच्छा व्यक्त की। इस पर सरदार पटेल ने उनसे कहा कि समय आराम करने या सेवा निवृत्त होने का नहीं है। वी.पी. मेनन विदेश विभाग के सचिव बनाए गए। उन्होंने अपनी पुस्तक द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ इंडियन स्टेट्स में लिखा है कि किस तरह सरदार पटेल ने इस मुहिम में अग्रणी भूमिका निभाई और अपने नेतृत्व में किस प्रकार पूरी टीम को परिश्रम से काम करने के लिए प्रेरित किया।

हमने 15 अगस्त, 1947 को नए भारत के उदय का उत्सव मनाया। लेकिन राष्ट्र निर्माण का कार्य अधूरा था। स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री के रूप में उन्होंने प्रशासनिक ढांचा बनाने का काम प्रारंभ किया, जो आज भी जारी है-चाहे यह दैनिक शासन संचालन का मामला हो तथा लोगों विशेषकर, गरीब और वंचित लोगों के हितों की रक्षा का मामला हो। सरदार पटेल अनुभवी प्रशासक थे। प्रशासन में उनका अनुभव विशेषकर 1920 के दशक में अहमदाबाद नगरपालिका में उनकी सेवा का अनुभव, स्वतंत्र भारत के प्रशासनिक ढांचे को मजबूत बनाने में सहायक साबित हुआ। उन्होंने पूरे शहर में स्वच्छता और जल निकासी प्रणाली सुनिश्चित की। उन्होंने सडक, बिजली तथा शिक्षा जैसी शहरी अवसंरचना के अन्य पहलुओं पर भी जोर दिया। आज यदि भारत जीवंत सहकारिता क्षेत्र के लिए जाना जाता है, तो इसका श्रेय सरदार पटेल को जाता है। ग्रामीण समुदायों, विशेषकर महिलाओं को सशक्त बनाने का उनका विजन अमूल परियोजना में दिखता है।

सरदार पटेल निष्ठा और ईमानदारी के पर्याय रहे। वह किसान पुत्र थे, जिन्होंने बारदोली सत्याग्रह के दौरान अगली कतार से

नेतृत्व किया। श्रमिक वर्ग उनमें आशा की किरण देखता था, एक ऐसा नेता देखता था, जो उनके लिए बोलेगा। व्यापारी और उद्योगपतियों ने उनके साथ इसलिए काम करना पसंद किया, क्योंकि वे समझते थे कि सरदार पटेल भारत के आर्थिक और औद्योगिक विकास के विजन वाले दिग्गज नेता हैं। उनके राजनीतिक मित्र भी उन पर भरोसा करते थे। आचार्य कृपलानी का कहना था कि जब कभी वह किसी दुविधा में होते थे और यदि बापू का मार्गदर्शन नहीं मिल पाता था, तो वह सरदार पटेल का रुख करते थे। 1947 में जब राजनीतिक समझौते के बारे में विचार-विमर्श अपने चरम पर था, तब सरोजिनी नायडू ने उन्हें संकल्प शक्ति वाले गतिशील व्यक्ति की संज्ञा दी। उनके शब्दों और उनकी कार्य प्रणाली पर सभी को पूरा विश्वास था। जाति, धर्म, आयु से ऊपर उठकर सभी लोग सरदार पटेल का सम्मान करते थे।

इस वर्ष सरदार की जयंती और अधिक विशेष रही। 130 करोड़ भारतीयों के आशीर्वाद से 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का उद्घाटन हुआ। नर्मदा के तट पर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमाओं में से एक है। धरती पुत्र सरदार पटेल हमारा सिर गर्व से ऊंचा करने के साथ हमें दृढ़ता प्रदान करेंगे और हमें प्रेरणा देते रहेंगे। मैं उन सभी को बधाई देना चाहता हूँ, जिन्होंने सरदार पटेल की इस विशाल प्रतिमा को हकीकत में बदलने के लिए दिन-रात काम किया। मैं 31 अक्टूबर, 2013 के उस दिन को याद करता हूँ, जब हमने इस महत्वाकांक्षी परियोजना की आधारशिला रखी थी। रिकॉर्ड समय में, इतनी बड़ी एक परियोजना तैयार हो गई और प्रत्येक भारतीय को इससे गौरवान्वित होना चाहिए। मैं आप सभी से आग्रह करता हूं कि आने वाले समय में 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' को देखने आएं।

'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' दिलों की एकता और हमारी मातृभूमि की भौगोलिक एकजुटता का प्रतीक है। यह याद दिलाती है कि आपस में बंटकर शायद हम डटकर मुकाबला नहीं कर पाएं। एकजुट रहकर, हम दुनिया का सामना कर सकते हैं और विकास तथा गौरव की नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं। सरदार पटेल ने उपनिवेशवाद के इतिहास को ढहाने के लिए अभूतपूर्व गति से काम किया और राष्ट्रवाद की भावना के साथ एकता के भूगोल की रचना की। उन्होंने भारत को छोटे क्षेत्रों अथवा राज्यों में विभाजित होने से बचाया और राष्ट्रीय ढांचे में सबसे कमजोर हिस्सों को जोड़ा। आज, हम, 130 करोड़ भारतीय नए भारत का निर्माण करने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे हैं, जो मजबूत, समृद्ध और समग्र होगा। प्रत्येक फैसला यह सुनिश्चित करके किया जा रहा है कि विकास का लाभ भ्रष्टाचार अथवा पक्षपात के बिना समाज के सबसे कमजोर वर्ग तक पहुंचे जैसा कि सरदार पटेल चाहते थे।

पिता

सृष्टि अग्रवाल, बी.एससी. प्रथम वर्ष

मेरा साहस मेरी इज्जत, मेरा सम्मान है पिता।
मुझको हिम्मत देने वाले मेरा अभिमान है पिता॥

मेरी ताकत मेरी पूँजी, मेरी पहचान है पिता।
सारे रिश्ते उनके दम से, सारी बातें उनसे है।

घर की एक-एक ईंट में, शामिल उनका खून-पसीना।
सारे घर के दिल की धड़कन, सारे घर की जान पिता॥

सारे घर की रौनक उनसे, सारे घर की शान है पिता।
शायद रव ने देकर भेजा, फल ये अच्छे कर्मों का।

मेरी इज्जत मेरी शोहरत, मेरा रुतबा मेरा मान है पिता।
उसकी रहमत उसकी बेअमत, उसका है वरदान पिता॥

स्वच्छता, सरकार और सरोकार

के.के. श्रीवास्तव, पुस्तकालय सहायक

आप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समर्थक हों या आलोचक, आपको एक बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि उन्होंने 'स्वच्छता' जैसे विषय को विमर्श का एक बड़ा मुद्दा बना दिया है, वर्ना एक समय इसे उबाऊ और बोझिल माना जाता था। स्वच्छता को लेकर अब काफी गंभीरता नजर आती है और यह सरकारों की प्राथमिकता में है। हाल ही में भारत ने स्वच्छता पर एक वृहत सम्मेलन आयोजित किया।

गांधी जी की डेढ़ सौ वीं जयंती के मौके पर बीते दो अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय स्वच्छता दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें मोदी ने कहा, 'राजनीतिक नेतृत्व, सार्वजनिक कोष और लोगों की भागीदारी से दुनिया को पूर्ण रूप से स्वच्छ बनाने के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि बनकर तैयार हो चुके 90 फीसदी शौचालयों का उपयोग किया जा रहा है और सरकार इस बात पर नजर रख रही है कि जिन शहरों को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जा चुका है, वहां के लोग अपनी पुरानी आदतों की ओर न लौटें। हालांकि स्वतंत्र आकलनों में स्वच्छता के मामले में तस्वीर इतनी उजली नजर नहीं आती।

स्वच्छ भारत अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार से निश्चित रूप से कुछ ठोस नतीजे हासिल हुए हैं, जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन इसके साथ ही यह जानना भी अहम है कि सिर्फ बड़ी संख्या में शौचालयों का निर्माण करने भर से भारत स्वच्छ नहीं हो जाएगा। जिन शौचालयों का निर्माण हो रहा है, उनकी व्यापक रूप से देखभाल जरूरी है। शौचालयों के साथ पानी की निरंतर व्यवस्था जरूरी है, उसके बिना इनका उपयोग नहीं किया जा सकता। शौचालयों के आसपास व्याप्त गंदगी स्वच्छ भारत के लक्ष्य में बाधक है। निश्चित रूप से भारत ने शौचालयों के निर्माण में भारी धन खर्च किया है, लेकिन उसकी तुलना में लोगों के व्यवहार में बदलाव और उनमें स्वच्छता के प्रति आग्रह पैदा करने के लिए कम निवेश किया गया है। सामान्य तौर पर स्वच्छता का संबंध लोगों के व्यवहार में बदलाव लाने से भी है और यह अपने आप नहीं हो सकता।

इसके लिए जमीनी स्तर पर माहौल बनाने और लोगों को जागरूक करने की जरूरत है। और ऐसे अभियानों में निरंतरता भी होनी चाहिए। आज भी किसी भारतीय शहर में कचरे के ढेर का दिख जाना अजूबा नहीं है। सिर्फ कचरा एकत्र करना ही जरूरी नहीं है, बल्कि कचरे के पहाड़ का प्रबंधन कैसे हो यह देखना भी बेहद जरूरी है, क्योंकि इसका पर्यावरण और स्वास्थ्य पर बहुत गंभीर असर पड़ता है।

देश की राजधानी दिल्ली तक में अभी यह व्यवस्था नहीं बन पाई है कि नगर निगम सूखे और गीले कचरे को अलग अलग एकत्र कर सके। कागज, प्लास्टिक बोतलें, कैन आदि सूखे कचरे को सब्जी और खाद्य सामग्री जैसे कार्बनिक कचरे से अलग किए बिना बड़े पैमाने पर कचरे की रिसाइक्लिंग नहीं की जा सकती। पूरे देश भर में नगर निकायों के 33 फीसदी वार्डों में ही कचरों को अलग करने की व्यवस्था है।

यह हाल गंदे पानी या नालियों में बहने वाली गंदगी का है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के मुताबिक हमारे शहरों में रोजाना 62 अरब लीटर अपशिष्ट जल पैदा होता हैं। और इसमें से सिर्फ 23 अरब लीटर का ही प्रबंधन हो पाता है। बचा दो तिहाई अपशिष्ट जल बिना ट्रीटमेंट के नदियों में ऐसे ही बहा दिया जाता है। साफ पानी में ऐसी गंदगी मिलने से गंदे पानी का प्रबंधन बेमतलब रह जाता है। हाल ही में एक रिपोर्ट में कचरा प्रबंधन के संबंध में गंभीर संकेतक सामने आए हैं। सारे राज्यों में महाराष्ट्र में सर्वाधिक गंदगी निकलती है, जिसमें से वह 63 फीसदी गंदगी का प्रबंधन करता है। केरल, पश्चिम

बंगाल और बिहार उनके यहां पैदा होने वाली गंदगी में से सिर्फ दस फीसदी का ही ट्रीटमेंट कर पाते हैं। अलबत्ता देश के कुछ बड़े शहरों में कचरा प्रबंधन की स्थिति बेहतर है, लेकिन छोटे शहरों और कस्बों का बुरा हाल है।

लखनऊ पर जरा गौर कीजिए, वहां से आपको भारतीय शहरों की स्थिति का अंदाजा हो जाएगा। शहर का सिर्फ 55 फीसदी हिस्सा ही सीवर नेटवर्क से जुड़ा हुआ है। जन शिकायतों में नालियों के ऊपर से बहती गंदगी और जलभराव आम है।

लोग नालियों की नियमित सफाई न होने की शिकायत करते हैं। घरों के सामने से बहने वाली नालियों को लोग अस्थायी तरीके से ढक देते हैं या फिर उनके ऊपर प्लेटफार्म बना दिए गए हैं। तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के अभी संयुक्त राजधानी हैदराबाद में रोजाना पैदा होने वाली गंदगी में सिर्फ पचास फीसदी का प्रबंधन हो पाता है और बाकी की गंदगी मूसी नदी में बहा दी जाती है।

आखिर लोगों को अपना व्यवहार बदलने के लिए कैसे तैयार किया जाए? मुझे इसकी एक शानदार मिसाल कर्नाटक के मैसूर शहर में नजर आई, जोकि देश के साफ सुथरे शहरों में से एक है। मैसूर में कचरे को अलग-अलग किया जाता है, और फिर उसका ट्रीटमेंट किया जाता है। मुझे एक गैर सरकारी संगठन स्त्री शक्ति की एक कार्यकर्ता ने बताया कि आठ से दस वर्ष पहले शहर में अधिकांश निवासी सूखे और गीले कचरे को अलग करने के प्रति रुचि नहीं दिखाते थे।

गृहणियों का कहना होता था कि इससे उनका काम बढ़ जाएगा। लेकिन इस गैर सरकारी संगठन के कार्यकर्ताओं ने लोगों को समझाने का काम जारी रखा। उन्होंने घर-घर जाकर लोगों से मुलाकात की और उन्हें पर्चे बांटे। उन्होंने वहां कुछ नियम बनाए और इनका पालन नहीं करने वालों पर जुर्माना लगाना शुरू कर दिया। इसके अच्छे नतीजे सामने आए और नतीजतन स्वच्छता के अपने प्रयासों के लिए मैसूर को अवार्ड भी मिला।

जाहिर है, बदलाव लाया जा सकता है, बशर्ते की बातें कम हों और काम अधिक।

दुःख ही सुख का प्रसाद

रीता कुमारी, बी.एड. द्वितीय वर्ष

महान जीवन दुःख और सुख का भण्डार है। क्योंकि दोनों का अटूट सम्बंध है। मेरी दृष्टि में दुःख ही सुख का पूरक है। जिसे इस संसार में दुःख नहीं मिला समझो वह सुख के वास्तविक आनन्द से वंचित रह गया। यदि हम पर सदैव सुख की बरसात होती रहे तो हमें दुःख का अहसास कभी नहीं हो सकता है। क्योंकि पेड़ की शीतल छाया का आनन्द तो वही बता सकता है, जो धूप से अति आकुल रहा हो, रोटी की मिठास वही बता सकता है जिसे कई दिनों से भोजन न मिला हो, पानी का स्वाद वही बता सकता है जो प्यासा हो, परीक्षा में उत्तीर्ण होने का आनन्द वही बता सकता है; जिसने मेहनत से प्रथम श्रेणी प्राप्त की हो।

वह तो इस आनन्द की एक बूँद भी नहीं पा सकेगा। इससे स्पष्ट होता है कि हमें कभी-भी दुःखी नहीं होना चाहिए। बल्कि गमों के सागर से निकलकर फूलों की तरह मुस्कराना चाहिए।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि –

"एक मुस्कान सौ गयों की दवा होती है।" अतः गमों में मुस्कराना चाहिए। जीवन तो दुःख-सुख का सागर है। हमें उच्च उद्देश्यों और आदर्शो को प्राप्त करने के लिए तैयार रहना चाहिए। क्योंकि दुःख ही सुख का प्रसाद है।

"खाली मस्तिष्क झगड़ों का घर है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिए।"

जीडीपी से जो पता नहीं चलता

विशाल शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

हम सब जानते हैं कि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) किसी देश की आर्थिक सेहत को आंकने का एक बुनियादी सूचकांक है। हाल के समय में भारत के जीडीपी विकास को लेकर बहुत से सवाल उठे हैं। लेकिन यह कोई नई बात नहीं है, क्योंकि जीडीपी के आकलन की कई तरह की धारणाएं हैं और इस बात को लेकर भिन्न तरह की राय और दृष्टिकोण हैं कि वास्तविक जीडीपी कितनी है। इसके साथ ही यह सार्वभौमिक स्वीकार्यता है कि भारतीय जीडीपी अगले कुछ दशकों में तेजी से आगे बढ़ेगी, जिससे विकास के सर्वाधिक तेज आंकड़े मिलेंगे और भारत वैश्विक रूप से एक बड़ी ताकत बनकर उभरेगा।

ऐसा होना तय दिख रहा है, क्योंकि जीडीपी के मामले में हम पहले ही वैश्विक रूप से शीर्ष पांच देशों में आ चुके हैं। लेकिन यदि हम अपने आसपास देखें, तो पता चलता है कि इसका आम आदमी के लिए न तो कोई मतलब है और न ही उसका कोई उस पर प्रभाव पड़ता है, क्योंकि आगे बढ़ती और उच्च जीडीपी भारतीय नागरिकों की समृद्धि का कोई संकेत नहीं देती। दो साल पहले जारी किए गए जीडीपी के नए आधार को लेकर की जाने वाली राजनीति या फिर संसद की प्राक्कलन समिति की मसौदा रिपोर्ट पर सरकार की आपत्ति, जिसमें जीडीपी के आकलन के मौजूदा तरीके की समीक्षा की सिफारिश की गई है, को जरा दरकिनार कर दीजिए।

वास्तविकता यह है कि जीडीपी के आकलन या फिर जीडीपी तक पहुंचने के लिए इस्तेमाल किए गए डाटा को लेकर हमेशा विशेषज्ञों में मतभेद होंगे। लेकिन सवाल है कि आखिर हम जीवन स्तर को प्रभावित करने वाले आंकड़ों का विश्लेषण कैसे करें? हमारे जीवन स्तर को बताने वाला एक संकेतक प्रति व्यक्ति जीडीपी है। लेकिन यदि कोई प्रति व्यक्ति आय के स्तर को देखे तो भारत ऐसे कई देशों से पीछे है, जिन्हें हमने जीडीपी विकास दर के मामले में काफी पीछे छोड़ रखा है। जरा फ्रांस पर गौर कीजिए, जिससे हम राफेल लड़ाकू विमान खरीद रहे हैं, उससे हम जीडीपी के मामले में जरा आगे निकल गए हैं, लेकिन भारत की प्रति व्यक्ति आय 7,060 डॉलर है, वहीं फ्रांस की 43,720 डॉलर और यह हमसे छह गुना से भी अधिक है।

यदि हम परचेजिंग पॉवर पैरिटी (क्रय शक्ति समता) या पीपीपी के आधार पर जीडीपी को देखें, जोकि एक आर्थिक सिद्धांत है, जिसमें विभिन्न देशों की मुद्राओं की कुछ वस्तुओं के आधार पर तुलना की जाती है, तो इसमें हम काफी पीछे हैं। वास्तव में पीपीपी के स्तर के आधार पर प्रति व्यक्ति आय के मामले में हम 123 वें स्थान पर हैं, जबकि फ्रांस 25वें स्थान पर है। पीपीपी कुछ और नहीं, बल्कि एक अवधारणा है जिसमें दो मुद्राएं तब साम्य में होती हैं, जब कुछ निश्चित वस्तुओं की कीमतें विनिमय दर को ध्यान में रखते हुए दोनों देशों में समान हों। निश्चित रूप से सिर्फ जीडीपी के आधार पर किया जा रहा आकलन न तो भारत के लिए और न ही भारतीय नागरिकों के लिए अच्छा है।

हाशिये पर जाता आम आदमी

आदर्श रूप में देखें तो आर्थिक विकास का प्रभाव आम आदमी के दैनिक जीवन पर पड़ना चाहिए। इससे आम आदमी के पास बेहतर स्वास्थ्य सेवा, पानी की व्यवस्था, स्वच्छता, शिक्षा और आय के बेहतर साधन होने चाहिए यानी कुल मिलाकर उसका जीवन स्तर बेहतर होना चाहिए। लेकिन उत्तरोत्तर सरकारों ने जीडीपी की दौड़ में इन कारकों को नजरंदाज किया। वे जिस विकास की बात करती रहीं, वह समावेशी नहीं था और जिससे समाज के बड़े तबके की कीमत पर सिर्फ कुछ लोगों को लाभ हुआ। आज आम आदमी का सबसे बड़ा बोझ रोज की सबसे अनिवार्य आवश्यकता भोजन पर होने वाला खर्च है।

शहरी क्षेत्रों में बढ़ते खर्चों को बेहतर ढंग से समझने के लिए हम बचत की घटती दर पर गौर कर सकते है, जोकि कुछ दशक पहले के पचास फीसदी की तुलना में तीस फीसदी रह गई है। बचत में आई गिरावट की कई वजहें हैं, जिनमें जीवन-यापन का बढ़ता खर्च, कर्ज, धन की घटती कीमत, महंगाई में वृद्धि और बचत पर घटती ब्याज दर हैं। हम बचत करने वाले देश से कर्ज लेने वाले देश में बदल चुके हैं। पूरे भारत में देखा जा सकता है कि अमीर हो या गरीब या वंचित तबका, सब कर्ज ले रहे हैं। आसान कर्ज का मतलब है कि लोगों ने भी रोज की जरूरतों तक के लिए भी सामान्य से अधिक खर्च करना शुरू कर दिया है।

भारतीयों की एक पीढ़ी अपने जीवन स्तर को बनाए रखने को लेकर आज दुविधा में है, इसके लिए उन्हें दीर्घकाल की बचत में सेंध लगाने के साथ ही अपनी संपत्ति तक को दांव पर लगाना पड़ रहा है। देश की तेज गति से आगे बढ़ती जीडीपी के आधार पर कोई व्यक्तिगत तौर पर विकास का अनुभव नहीं कर सकता। इस अलगाव का संबंध रोजगार क्षेत्र में सुस्ती, महंगाई बढ़ने के साथ जीवन यापन की बढ़ती कीमत और इनसे भी कहीं अधिक अमीरों और वंचितों के बीच बढ़ती खाई है।

दुनिया के शीर्ष 62 लोगों के पास निचले क्रम के 3.5 अरब लोगों से भी अधिक संपत्ति है, जिसका मतलब है कि आय का भारी असमान वितरण है। इससे जीवन स्तर में भी फर्क बढ़ जाता है।

विकास को और समावेशी बनाने के लिए समाज विज्ञानियों और अर्थशास्त्रियों ने जीवन स्तर और मानव विकास को संयुक्त रूप से मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) के रूप में वर्गीकृत किया है। एचडीआई का आय पैमाना वास्तव में सकल राष्ट्रीय आय है, जिसमें उस देश के नागरिकों द्वारा देश में और विदेश में अर्जित उत्पादन शामिल है और इसलिए जीवन स्तर को आंकने का यह बेहतर पैमाना है। एचडीआई वास्तविक प्रति व्यक्ति आय के साथ ही अपने पैमाने में जीवन प्रत्याशा और शिक्षा को भी जोड़ता है। इस पैमाने पर भी यूएनडीपी द्वारा जारी सूची में भारत 189 देशों की सूची में 130 वें स्थान पर है।

राजनेता और सरकारें अपनी सुविधा से भिन्न पैमाने पर निकाले गए जीडीपी आंकड़े पेश करती हैं। पर ऐसे समय जब हम बुराई पर सच्चाई की जीत का जश्न मना रहे हैं, हम अपने मिथकों से ऐसे सिद्धांत को अपनाएं जो विकास को व्यक्ति की इकाई के रूप में देखे। सो, अगली बार जब आप जीडीपी के बारे में सुनें तो बेसब्र होने की जरूरत नहीं है, यह एक और आंकड़ा होगा जिससे आपके जीवन पर बहुत कम फर्क पड़ेगा।

विश्वास की ताकत

प्रीती पाल, बी.एड. द्वितीय वर्ष

एक व्यक्ति अपनी नवविवाहित पत्नी के साथ जहाज में सवार होकर सफर पर निकला। रास्ते में समुद्र में जोर का तूफान आ गया। मुसाफिर घबरा उठे। पर वह व्यक्ति जरा भी नहीं घबराया।

उसकी पत्नी भी व्याकुल हो गई थी। उसने अपने पति से पूछा इतना खतरनाक तूफान आया है। सब की हालत खराब है। पर आप इतने आराम से कैसे बैठे हैं। यह सुनते ही उस व्यक्ति ने म्यान से तलवार निकाली और पत्नी के सिर पर रखकर पूछा-बताओ, तुम्हें डर लग रहा है या नहीं पत्नी ने कहा भला मुझे डर क्यों लगेगा, मुझे पता है कि आप मेरी जान नहीं लेंगे क्योंकि आप मेरे दुश्मन नहीं हैं। आप तो मुझे अपनी जान से भी ज्यादा चाहते हैं। फिर मैं क्यों डरुँ?

इस पर व्यक्ति बोला बिल्कुल सही, जिस तरह तुम्हें मुझ पर भरोसा है उसी तरह मुझे ईश्वर पर भरोसा है। वह हम सबका अभिभावक है। वह हम सबका रखवाला है। वह हमारा बुरा क्यों चाहेगा? वह तो हमारे पिता के समान है। वह हर संकट में हमारी सहायता ही करेगा। जीवन में विश्वास सबसे बड़ी चीज है। इससे हमें बड़ी ताकत मिलती है। हम इसी ताकत के सहारे जीते हैं। वही लोग घबराते हैं या अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते हैं, जिनमें विश्वास की ताकत नहीं होती।

संयोग से उसी समय तूफान थम गया।

अनूपशहर वासी भगवती प्रसाद गर्ग

डॉ. शशि रानी गोयल, अनूपशहर वासी

श्री भगवती प्रसाद गर्ग का जन्म 1908 में श्री रघुवरदयाल गर्ग जी एवं श्रीमती कमला देवी के यहां हुआ। गर्ग साहब का परिवार अनूपशहर का प्रतिष्ठित परिवार था।

लेकिन फूफाजी की शिक्षा अलीगढ़ में हुई। शहर में आने के पश्चात उन्हें लगा कि शहर में प्राथमिक आवश्यकताओं का अभाव है। शहर में चिकित्सीय सुख सुविधाएं नहीं हैं, बीमारों को आस-पास के क्षेत्र में ले जाया जाता है या फिर अलीगढ़। अधिकांश मरीज रास्ते में दम तोड़ देते थे क्योंकि आवागमन का मार्ग और वाहन की स्थिति भी अच्छी नहीं थी। बैलगाड़ी आदि में डालकर ले जाया जाता था। एक अत्यंत छोटा सा राजकीय पुरूष चिकित्सालय था, उसमें चिकित्सीय औजार आदि तक नहीं थे। यह वर्ष 1938 का समय था जब फूफाजी का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ उन्होंने तत्कालीन जिलाधीश डॉ. एस. बैरन से नजूल की भूमि अस्पताल के नाम कराकर उसके स्थान पर सुख सुविधा सम्पन्न चिकित्सालय बनवाने का निश्चय किया इसके लिए प्रथम राशि दान में अपने दादा जी से श्री मदनलाल जी से ही मांगी। उनकी कार्य प्रतिबद्धता ही थी कि कुछ ही वर्ष में वह किसी भी स्तरीय अस्पताल के समकक्ष हो गया। साथ ही उनका ध्यान महिलाओं की परेशानी पर भी था महिलाओं का प्रसव दाइयां करती या घर की बुजुर्ग महिला प्रसव के दौरान महिलाओं की मृत्यु हो जाती थी महिला चिकित्सालय की कमी से व्यथित फूफाजी को ज्ञात हुआ कि गांधी ऑई हॉस्पीटल के संस्थापक श्री मोहनलाल के साथ खड़े होकर हॉस्पीटल के निर्माण में सहयोग किया। इस कैम्प में करीब 1000 मरीजों का निरीक्षण परीक्षण होता था। इतने मरीजों की व्यवस्था करना भी श्री भगवती प्रसाद गर्ग के ही बस की बात था। शिक्षिकाओं और छात्राओं के घर से चारपाई मंगवाते और शिक्षिकाओं को डॉक्टरों की सहायता के लिये खड़ा करते व सब सहर्ष सहयोग करती थी। अनूपशहर में स्व. लक्ष्मण प्रसाद जी एवं उनके सुपुत्र दुर्गा प्रसाद जी के प्रयासों से एंग्लोवैदिक इंटर कॉलेज एवं दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नाकोत्तर महाविद्यालय प्रारम्भ हुए।

दुर्गाप्रसाद जी बी.जी.पी. की प्रतिभा और शिक्षा के उन्नयनों के भावों से बहुत प्रभावित थे उन्होंने बी.जी.पी. से अपने साथ दोनों स्कूलों को कार्यभार संभालने का अनुरोध किया और दुर्गाप्रसाद जी के बाद 1970 से पूरी तरह यह भार गर्ग साहब पर आ गया, उन्होंने तन, मन, धन से शिक्षा के केन्द्रों के विकास में ध्यान दिया, साथ ही उच्च शिक्षा प्रसार हेतु 1965 में डिग्री कॉलेज के स्तर तक पहुंचा दिया और दुर्गाप्रसाद डिग्री कॉलेज की स्थापना हुई। लेकिन वहां विज्ञान संकाय ही था बी.जी.पी. को ज्ञात हुआ देश के जाने माने जे.पी. समूह के चैयरमेन जे.पी. गौड़ अनूपशहर एल.डी.वी. के छात्र रहे हैं उन्होंने तुरंत एक पत्र जे.पी. गौड़ के नाम लिखा। श्री जे.पी. गौड़ ने बचपन से ही बी.जी.पी. को देखा था जब बी.जी.पी. को पम्पशू पहने सूट में कार में बैठे देखते तब उनके मन में उनका सा बनने की इच्छा होती थी। उनकी यह दृढ़ इच्छा शक्ति थी कि वे इतने बड़े जे.पी. समूह के मालिक बने।

बी.जी.पी. उनके रोलमॉडल बने थे इसलिए उनसे मिलने तुरंत तैयार हो गये और स्वयं उन्हें लेने बाहर तक आये। उनके कहने मात्र से 45 करोड़ उसके विकास में खर्च कर दिये अब वहां इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना कर रहे हैं तब 1983 में गर्ग साहब के कला संकाय का उत्तरदायित्व अपने उपर ले लिया एक वर्ष में कला संकाय भवन बन गया उसके पश्चात गौड साहब के जुड़ने से शिखा क्षेत्र में निरंतर प्रगति होती चली गई और अनूपशहर में शिक्षा केन्द्र स्थापित होते चले गये। कहना नहीं चाहिए अनूपशहर की प्रगति में मुख्यरूप से श्री भगवान प्रसाद गर्ग जी का हाथा है। बी.जी.पी. एक वट्वृक्ष के समान

थे। जिनकी शाखाओं ने अनेक वृक्षों का रूप ले लिया है और सबको छाया प्रदान कर रहा है। 20 नवंबर 1991 का फूफाजी अल्प बीमारी के पश्चात् सभी कार्य भार से मुक्त होकर ईश्वरीय सेवा में पहुंच गये। गर्ग साहब के बड़े पुत्र जिनका नाम मान प्रकाश गर्ग जो कि 1964 से एम.बी. प्रकाश स्टोर सदर बाजार को पूर्ण जिम्मेदारी व समाजसेवा के भाव से संचालित करते हुए आ रहे हैं और छोटे पुत्र श्री रविन्द्र कुमार गर्ग भी इस प्रतिष्ठान को सफलता पूर्वक चलाते आ रहे हैं।

ऐसे करें भोज्य पदार्थों में मिलावट की पहचान

डॉ. मुनेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग

हमें अपने बेशकीमती शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए नित्य कई प्रकार के भोज्य पदार्थों का सेवन करना पड़ता है जिससे प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन एवं खनिज लवण जैसे अनगिनत पोषक तत्व प्राप्त होते हैं किंतु अधिकांश दुकानदार अधिकाधिक पैसा कमाने की लालसा में इन सभी खाद्य पदार्थों में मिलावट करने से जरा भी गुरेज नहीं करते हैं। परिणामस्वरूप, व्यक्ति का स्वास्थ धीरे-धीरे गिरने लगता है और वह न चाहते हुए भी डॉक्टरों की शरण में जा पहुंचता है।

इतना ही नहीं, आज की तारीख में सब खाद्य पदार्थों विशेषतः गेहूं, चावल, दालों, दूध मसालों, चाय की पत्ती, तेल, घी, और नमक इत्यादि में मिलावट का पाया जाना एक आम बात हो गई है जिसकी वजह से व्यक्ति को अपना शरीर स्वस्थ बनाए रखना बड़ी टेढ़ी खीर साबित हो रहा है।

जब किसी भोज्य पदार्थ में किसी बाहरी वस्तु का मिश्रण कर उसमें से जरूरी तत्वों को निकाल लिया जाता है या अनुचित तरीकों से संग्रहित किया जाता है और इससे उसकी शुद्धता में कमी आ जाती है तो उस खाद्य सामग्री अथवा भोज्य पदार्थ को मिलावट युक्त पदार्थ कहा जाता है।

इस तरह की मिलावट से उपभोक्तागणों को खाद्य पदार्थों में से मिलने वाले जरूरी पोषक तत्वों से वंचित होना पड़ता है और इसी अधिक मिलावटी आहार को लेने से अनेक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। इसलिए उपभोक्ताओं को सदैव समान खरीदते समय उसके गुणों रंगों के अलावा शुद्धता को जाँचने की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। अंततः भोज्य पदार्थों में मिलावट लाभ कमाने हेतु की जाती है।

कैसे करें मिलावट की पहचान?

वैसे तो मिलावटी पदार्थों की पहचान करना काफी मुश्किल है परन्तु यदि आप कुछ घरेलू तरीकों से जांच करते हैं तो अवश्य ही इसकी वास्तविक शुद्धता की परख कर सकते हैं। उपभोक्ताओं को इस बात की जानकारी जरूर होनी चाहिए कि खाद्य पदार्थों में किस-किस प्रकार की मिलावट की जाती है और इसे किस तरह जांचा जा सकता है। आइए जानें–

नमक– नमक सभी मसालों में बेहद सस्ता होता है लेकिन मिलावट करने वाले दुकानदार इसमें भी मिश्रण करने से बाज नहीं आते हैं। परिणामस्वरूप, उसमें भी पत्थर पीस कर या फिर मिट्टी अथवा रेत को मिश्रित कर देते हैं। आप नमक की कुछ मात्र को लेकर साफ कांच के गिलास में घोल लें तथा कुछ देर स्थिर रखने के उपरांत देखें। नमक घुल जाएगा, पत्थर और रेत अथवा मिट्टी गिलास की तली में बैठ जाएंगी। इस प्रकार समझ लें कि नमक में मिलावट है। इससे गले संबंधी बीमारियां हो सकती हैं।

दालें– प्रायः दालों का रंग-रूप संवारने हेतु उनमें हानिकारक दालें मिलाई जाता हैं या दालों को मेनेटिल एलो से रंगा जाता है। इसकी परख करने के लिए कुछ दाल को पानी में डाल कर 'हाइड्रोक्लोरिक एसिड' की चार बूंदें डालें। यदि दाल में कोई

मिलावट की गई होगी तो स्वतः पानी का रंग लाल हो जाएगा। तभी सावधान हो जाएं अन्यथा शरीर के पाचन तंत्र को प्रभावित होने तथा गुर्दे में पथरी की समस्या पैदा होने से कोई नहीं रोक सकता।

दूध– दूध की सच्चाई जानने के लिए आपको लैक्टोमीटर की आवश्यकता पड़ेगी। तभी इसकी वास्तविक जांच हो सकती है। इसके अलावा आप दूध की शुद्धता को नाइट्रिक एसिड के जरिये भी नाप सकते हैं। इसके लिए दूध में दो बूंद नाइट्रिक एसिड की मिलायें। आप देखेंगे कि दूध और पानी दोनों अलग-अलग हो गये हैं। इससे भी व्यक्ति का स्वास्थ्य काफी हद तक प्रभावित होता है।

हल्दी– बेसन और हल्दी में अक्सर रंग मिलाया जाता है जिसके लिए एक चम्मच हल्दी को एक परखनली में डालने के बाद उसमें सांद्र हाइड्रोक्लोरिक अम्ल की कुछेक बूंदें डालें। यदि बैंगनी रंग दिखता है और मिश्रण में जल डालने पर यह रंग ओझल हो जाता है तो हल्दी शुद्ध है नहीं तो मिलावटी है जो कि प्रजनन तंत्र को नुकसान पहुंचा सकता है और य.त एवं गुर्दे को भी क्षतिग्रस्त कर देगा।

चाय की पत्ती– चाय की पत्ती में मिश्रण का पता लगाने हेतु किसी सफेद गीले कागज पर सर्वप्रथम उसे डालें। यदि कोई रंग मिलाया गया होगा तो तुरंत कागज पर उतर आएगा जोकि भविष्य में आपको आहार तंत्र रूपी अनेक बीमारियों से परिचित करा सकता है।

हींग– सुगन्धित हींग को लौ पर जलाने से लौ चमकीली हो जाती है। और तो और, हींग को स्वच्छ जल में धोने पर यदि हींग का रंग बदलकर सफेद या दूधिया हो जाये तो फौरन समझ लें कि हींग पूर्णतया शुद्ध है।

सरसों का तेल– सरसों के तेल में भी सोयाबीन, रेपसीड तथा आर्जिमोन तेल का उपयोग किया जाता है। मिलावट की सटीक जांच हेतु टेस्ट ट्यूब में सलयुरिक एसिड एवं तेल का मिश्रण कर हिलाएं। यदि तेल मिलावटी होगा तो नीचे पीला रंग दिखलाई देने लगेगा, जोकि आगे चलकर अनियंत्रित ज्वर से जूझने पर मजबूर कर देगा।

काली मिर्च– अंत में हम बात करते हैं काली मिर्च की। वैसे तो काली मिर्च में पपीते के बीज ही मिलाए जाते हैं जिसकी पहचान देखने मात्र से ही हो जाती है परन्तु यदि फिर भी शुद्धता में संदेह रह जाता है तो काली मिर्च को पानी में डाल दें। अगर पपीते के बीजों का मिश्रण है तो वह पानी में तैरने लगेगा और शुद्ध काली मिर्च डूब जाएगी। इस तरह आप इसमें हुए मिलावट की पहचान को आसानीपूर्वक देखने में सफल हो जायेंगे।

आज से ही विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों की वास्तविक शुद्धता की जांच करते हुए अपने अनमोल शरीर को स्वस्थ बनाने में जुट जाएं। यकीनन, कुछ समय पश्चात ही सफलता अवश्य आपके कदम चूमती हुई दिखलाई देगी।

हो गई ईश्वर की पूजा

हीरेश, बी.एड., द्वितीय वर्ष

दीप मंदिर में जलाने से ही
होती नहीं इबादत
किसी उदास चेहरे की हंसाया
किसी गिरते को संभाला
किसी कली को मुरझाने से बचाया
किसी भटके को राह दिखाया
किसी गिरते को बाहों का दिया सहारा
किसी मकान को घर बनाया
जख्मी पंक्षी को मरहम लगाया
जीवन का एक छोटा-सा पल भी
गर काम किसी के आया
तो समझो इबादत हो गई
हो गई ईश्वर की पूजा।।

नहाने का वैज्ञानिक तरीका

डॉ. आर. के. अग्रवाल, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, गणित विभाग

क्या आपने कभी अपने आस पास ध्यान से देखा या सुना है कि नहाते समय बुजुर्ग को लकवा लग गया? दिमाग की नस फट गई (ब्रेन हेमरेज), हार्ट अटैक आ गया। छोटे बच्चे को नहलाते समय वो बहुत कांपता रहता है, डरता है और माता समझती है की नहाने से डर रहा है, लेकिन ऐसा नहीं हैय असल मे ये सब गलत तरीके से नहाने से होता है। दरअसल हमारे शरीर में गुप्त विद्युत शक्ति रुधिर (खून) के निरंतर प्रवाह के कारण पैदा होते रहती है, जिसकी स्वास्थ्यवर्धक प्राकृतिक दिशा ऊपर से आरम्भ होकर नीचे पैरो की तरफ आती है। सर में बहुत महीन रक्त नालिकाये होती है जो दिमाग को रक्त पहुँचाती है। यदि कोई व्यक्ति निरंतर सीधे सर में ठंडा पानी डालकर नहाता है तो ये नलिकाएं सिकुड़ने या रक्त के थक्के जमने लग जाते हैं और जब शरीर इनको सहन नहीं कर पाता तो ऊपर लिखी घटनाएं वर्षो बीतने के बाद बुजुर्गो के साथ होती है। सर पर सीधे पानी डालने से हमारा सर ठंडा होने लगता है, जिससे हृदय को सिर की तरफ ज्यादा तेजी से रक्त भेजना पड़ता है, जिससे या तो बुजुर्ग में हार्ट अटैक या दिमाग की नस फटने की अवस्था हो सकती है। ठीक इसी तरह बच्चे का नियंत्रण तंत्र भी तुरंत प्रतिक्रिया देता है जिससे बच्चे के काम्पने से शरीर में गर्मी उत्पन्न होती है, और माँ समझती है की बच्चा डर रहा है। गलत तरीके से नहाने से बच्चे की हृदय की धड़कन अत्यधिक बढ़ जाती है स्वयं परीक्षण करिये।

तो आईये हम आपको नहाने का सबसे सही तरीका बताते हैद्य बाथरूम में आराम से बैठकर या खड़े होकर सबसे पहले पैर के पंजो पर पानी डालिये, रगड़िये, फिर पिंडलियों पर, फिर घुटनो पर, फिर जांघो पर पानी डालिये और हाथों से मालिश करियेद्य फिर हाथो से पानी लेकर पेट को रगड़िये। फिर कंधो पर पानी डालिये, फिर अंजुली में पानी लेकर मुँह पर मलिए। हाथों से पानी लेकर सर पर मलिए। इसके बाद आप शावर के नीचे खड़े होकर या बाल्टी सर पर उड़ेलकर नहा सकते है।

इस प्रक्रिया में केवल 1 मिनट लगता है लेकिन इससे आपके जीवन की रक्षा होती है। और इस 1 मिनट में शरीर की विद्युत प्राकृतिक दिशा में ऊपर से नीचे ही बहती रहती है क्योंकि विद्युत् को आकर्षित करने वाला पानी सबसे पहले पैरो पर डाला गया है। बच्चे को इसी तरीके से नहलाने पर वो बिलकुल कांपता डरता नहीं है। इस प्रक्रिया में शरीर की गर्मी पेशाब के रास्ते बाहर आ जाती है आप कितनी भी सर्दी में नहाये कभी जुखाम बुखार नहीं।

संख्या

सबसे छोटी संख्या कौनसी है?	1
सबसे छोटी अभाज्य संख्या कौनसी है?	2
सबसे छोटी पूर्ण संख्या कौनसी है?	0
सबसे छोटी विषम संख्या कौनसी है?	1
सबसे छोटी सम संख्या कौनसी है?	2
सबसे छोटी प्रा.तिक संख्या कौनसी है?	1
सबसे छोटी धनात्मक अभाज्य संख्या कौनसी है?	2
सबसे छोटी विषम अभाज्य संख्या कौनसी है?	3
सबसे छोटी परिमेय संख्या कौनसी है?	1
सबसे छोटी पूर्णांक संख्या कौनसी है?	0
सबसे छोटी रूढ़ संख्या कौनसी है?	2
सबसे छोटी संयुक्त संख्या कौनसी है?	4
सबसे छोटी सम अभाज्य संख्या कौनसी है?	2
सबसे छोटी अभाज्य संख्या कौनसी है?	2
दहाई की सबसे छोटी संख्या कौनसी है?	10
एक अंक की सबसे छोटी संख्या क्या है?	1

आपको पता है कि हम कितने विशेष हैं... नही... तो जाने क्योंकि...?

डॉ. चन्द्रावती, एसोसिएट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग

- हम वो आखरी पीढ़ी हैं, जिन्होंने कई-कई बार मिटटी के घरों में बैठ कर परियों और राजाओं की कहानियां सुनीं, जमीन पर बैठ कर खाना खाया है, प्लेट में चाय पी है।
- हम वो आखरी लोग हैं, जिन्होंने बचपन में मोहल्ले के मैदानों में अपने दोस्तों के साथ पम्परागत खेल, गिल्ली-डंडा, छुपा-छिपी, खो-खो, कबड्डी, कंचे जैसे खेल खेले हैं।
- हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने कम या बल्ब की पीली रोशनी में होम वर्क किया है और नावेल पढ़े हैं।
- हम वही पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने अपनों के लिए अपने जज़्बात, खतों में आदान प्रदान किये हैं।
- हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने कूलर, एसी या हीटर के बिना ही बचपन गुजारा है।
- हम वो आखरी लोग हैं, जो अक्सर अपने छोटे बालों में, सरसों का ज्यादा तेल लगा कर, स्कूल और शादियों में जाया करते थे।
- हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होंने स्याही वाली दावात या पेन से कॉपी, किताबें, कपडे और हाथ काले, नीले किये है।
- हम वो आखरी लोग हैं, जिन्होंने टीचर्स से मार खाई है।
- हम वो आखरी लोग हैं, जो मोहल्ले के बुजुर्गों को दूर से देख कर, नुक्कड़ से भाग कर, घर आ जाया करते थे।
- हम वो आखरी लोग हैं, जिन्होंने अपने स्कूल के सफेद केनवास शूज पर, खड़िया का पेस्ट लगा कर चमकाया हैं।
- हम वो आखरी लोग हैं, जिन्होंने गोदरेज सोप की गोल डिबिया से साबुन लगाकर शेव बनाई है। जिन्होंने गुड़ की चाय पी है। काफी समय तक सुबह काला या लाल दंत मंजन या सफेद टूथ पाउडर इस्तेमाल किया है।
- हम निश्चित ही वो आखिर लोग हैं, जिन्होंने चांदनी रातों में, रेडियो पर खबरें, विविध भारती, आल इंडिया रेडियो और बिनाका जैसे प्रोग्राम सुने हैं।
- हम ही वो आखिर लोग हैं, जब हम सब शाम होते ही छत पर पानी का छिड़काव किया करते थे। उसके बाद सफेद चादरें बिछा कर सोते थे। एक स्टैंड वाला पंखा सब को हवा के लिए हुआ करता था। सुबह सूरज निकलने के बाद भी ढीठ बने सोते रहते थे। वो सब दौर बीत गया। चादरें अब नहीं बिछा करतीं। डब्बों जैसे कमरों में कूलर, एसी के सामने रात होती है, दिन गुजरते हैं।
- हम वो आखरी पीढ़ी के लोग हैं, जिन्होने वो खूबसूरत रिश्ते और उनकी मिठास बांटने वाले लोग देखे हैं, जो लगातार कम होते चले गए। उस दौर के लोग ज्यादा पढ़े लिखे कम ही होते थे। उन लोगों के घर, भले ही पक्के और ऊंचे नहीं होते थे, मगर कद में वो आज के इंसानों से, कहीं ज्यादा बड़े हुआ करते थे। अब तो लोग जितना पढ़ लिख रहे हैं, उतना ही खुदगर्जी, बेमुरव्वती, अनिश्चितता, अकेलेपन, व निराशा में खोते जा रहे हैं।

'हम ही वो खुशनसीब लोग हैं, जिन्होंने रिश्तों की मिठास महसूस की है...!!

कोचिंग का इंजेक्शन

सीमान्त कुमार दुबे, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग

कोचिंग का इंजेक्शन लगा कर लौकी की तरह भावी इंजीनियर और डॉक्टर की पैदावार की जाती है। अब नेचुरल देसी नस्ल छोटी रह जाती है जो तनाव में आकर या तो मुरझा जाती है या बाजार में बिकने लायक ही नही रहती।

अब मैं आपको बीस साल पहले ले जाता हूँ जब सरकारी स्कूलों का दौर था। जब एक औसत लड़के को साइंस ना देकर स्कूल वाले खुद ही लड़के को भट्टी में झोकने से रोक देते थे। आर्ट्स और कामर्स देकर लड़कों को शिक्षक बाबू, पटवारी, नेता और व्यापारी बनाने की तरफ मोड़ देते थे मतलब साफ है कि पानी को छोटी-छोटी नहरो में छोड़ कर योग्यता के हिसाब से अलग अलग दिशाओ में मोड़ दो ताकि बाढ़ का खतरा ही पैदा ना हो।

शिक्षक लड़के के गलती करने पर उसको डंडे से पीट-पीटकर साक्षर बनाने पर अड़े रहते और तनाव झेलने के लिये मजबूत कर देते थे। पापा-मम्मी से शिकायत करो तो दो झापड़ पापा-मम्मी भी जड़ देते थे और गुरुजी से सुबह स्कूल आकर ये और कह जाते थे कि अगर नहीं पढ़े तो दो डंडे हमारी तरफ से भी लगाना आप। अब पक्ष और विपक्ष एक होता देख लड़का पिटने के बाद सीधा फील्ड में जाकर खेलकूद करके अपना तनाव कम कर लेता था। खेलते समय गिरता पड़ता और कभी-कभी छोटी-मोटी चोट भी लग जाती तो मिट्टी डाल कर चोट को सुखा देता,पर कभी तनाव में नहीं आता। दसवीं आते-आते लड़का लोहा बन जाता था। तनावमुक्त होकर मैदान में तैयार खड़ा हो जाता था।हर तरह के तनाव को झेलने के लिए.....

फिर आया कोचिंग और प्राईवेट स्कूलों का दौर यानी की शिक्षा स्कूल से निकल कर ब्रांडेड शोरुम में आ गई। शिक्षा सोफेस्टीकेटेड हो गई। बच्चे को गुलाब के फूल की तरह ट्रीट किया जाने लगा। मतलब बच्चा 50% लाएगा तो भी साइंस में ही पढ़ेगा। हमारा मुन्ना तो डॉक्टर ही बनेगा। हमारा बच्चा IIT से B-Tech करेगा। शिक्षक अगर हल्के से भी मार दे तो पापा-मम्मी मानवाधिकार की किताब लेकर मीडिया वालों के साथ स्कूल पर चढ़ाई कर देते हैं कि हमारे मुन्ना को हाथ भी कैसे लगा दिया?मीडिया वाले शिक्षक के गले में माइक घुसेड़ कर पूछने लग जाते हैं कि आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? यहाँ से आपका बच्चा सॉफ्ट टॉय बन गया बिलकुल टेडी बियर की तरह। अब बच्चा स्कूल के बाद तीन-चार कोचिंग सेंटर में भी जाने लग गया। खेलकूद तो भूल ही गया। फलाने सर से छूटा तो ढिमाके सर की क्लास में पहुंच गया। बचपन किताबों में उलझ गया और बच्चा कॅम्पटीशन के चक्रव्युह में ही उलझ गया बेचारा। क्यों भाई आपका मुन्ना केवल डॉक्टर और इंजीनियर ही क्यों बनेगा वो आर्टिस्ट, सिंगर,खिलाड़ी, किसान और दुकानदार से लेकर नेता और कारखाने का मालिक क्यों नहीं बनेगा। हजारों फील्ड हैं अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करने के वो क्यों ना चुनो। अभी कुछ दिनों पहले मेरे महंगे जूते थोड़े से फट गऐ पता किया एक लड़का अच्छी तरह से रिपेयर करता है कि ये पता ही नहीं चलता कि जूते रिपेयर भी हुए हैं। उसके पास गया तो उसने 200 रुपये मांगे रिपेयर करने के और कहा एक हते बाद मिलेगें जी। उस लड़के की आमदनी का हिसाब लगाया तो पता चला की लगभग एक लाख रुपये महीने कमाता है। यानी की पूरा बारह लाख पैकेज। वो तो कोटा नहीं गया। उसने अपनी योग्यता को हुनर में बदल दिया और अपने काम में मास्टर पीस बन गया। कोई शेफ बन कर लाखों के पैकेज में फाइव स्टार होटल में नौकरी कर रहा है तो कोई हलवाई बन कर बड़े-बड़े इवेंट में खाना बना कर लाखों रुपये ले रहा है कोई डेयरी फार्म खोल कर लाखों कमा रहा है। कोई दुकान लगा कर लाखों कमा रहा है तो कोई कंस्ट्रक्शन के बड़े-बड़े ठेके ले रहा है। तो कोई फर्नीचर बनाने के ठेके ले रहा है। कोई रेस्टोरेंट

खोल कर कमा रहा है तो कोई कबाड़े का माल खरीद कर ही अलीगढ़ जैसे शहर में ही लाखों कमा रहा है तो कोई सब्जी बेच कर भी 20-25 हजार महीने का कमा रहा है तो कोई चाय की रेहड़ी लगा कर ही 40-50 हजार महीने के कमा रहा है तो कोई हमारे यहाँ कचोरी-समोसे और पकोड़े-जलेबी बेच कर ही लाखों रुपये महीने के कमा रहा है। मतलब साफ है भैया कमा वो ही रहा है जिसने अपनी योग्यता और उस कार्य के प्रति अपनी रोचकता को हुनर में बदला और उस हुनर में मास्टर पीस बना। जरुरी नहीं है कि आप डॉक्टर और इंजीनियर ही बनें आप कुछ भी बन सकते हैं आपमें उस कार्य को करने का जुनून हो बस। हाँ तो अभिभावकों, प्रियजनों अपने बच्चों को टैडीबीयर नहीं बल्कि लोहा बनाओ लोहा। अपनी मर्जी की भट्टी में मत झोको उसको। उसे पानी की तरह नियंत्रित करके छोड़ो वो अपना रास्ता खुद बनाने लग जाएगा। पर बच्चों पर नियंत्रण जरुर रखो। अगर वो अनियंत्रित हुआ तो पानी की तरह आपके जीवन में बाढ़ ला देगा।

कहने का मतलब ये है की शिक्षा को नेचुरल ही रहने दो, क्यों सिंथेटिक बना कर बच्चे का जीवन और अपनी खुशियों को बरबाद कर रहे हो।

बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार आगे बढ़ने में सहयोग दे।

श्री कृष्णायःवयम् नमः

देव स्वरुप गौतम, असिस्टेंट प्रोफेसर, बी. एड. विभाग

एक बार की बात है कि यशोदा मैया प्रभु श्री कृष्ण के उलाहनों से तंग आ गयीं और छड़ी लेकर श्री कृष्ण की ओर दौड़ी। जब प्रभु ने अपनी मैया को क्रोध में देखा तो वह अपना बचाव करने के लिए भागने लगे, भागते-भागते श्री कृष्ण एक कुम्हार के पास पहुँचे। कुम्हार तो अपने मिट्टी के घड़े बनाने में व्यस्त था। लेकिन जैसे ही कुम्हार ने श्री कृष्ण को देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। कुम्हार जानता था कि श्री कृष्ण साक्षात् परमेश्वर हैं। तब प्रभु ने कुम्हार से कहा कि 'कुम्हार जी, आज मेरी मैया मुझ पर बहुत क्रोधित है। मैया छड़ी लेकर मेरे पीछे आ रही है। भैया, मुझे कहीं छुपा लो। 'तब कुम्हार ने श्री कृष्ण को एक बडे से मटके के नीचे छिपा दिया। कुछ ही क्षणों में मैया यशोदा भी वहाँ आ गयीं और कुम्हार से पूछने लगी - 'क्यूँ रे, कुम्हार! तूने मेरे कन्हैया को कहीं देखा है, क्या ?'

कुम्हार ने कह दिया- 'नहीं, मैया! मैंने कन्हैया को नहीं देखा।' श्री कृष्ण ये सब बातें बडे से घड़े के नीचे छुपकर सुन रहे थे। मैया तो वहाँ से चली गयीं।

अब प्रभु श्री कृष्ण कुम्हार से कहते हैं- 'कुम्हार जी, यदि मैया चली गयी हो तो मुझे इस घड़े से बाहर निकालो।'

कुम्हार बोला- 'ऐसे नहीं, प्रभु जी! पहले मुझे चौरासी लाख यानियों के बन्धन से मुक्त करने का वचन दो ।'

भगवान मुस्कुराये और कहा- 'ठीक है, मैं तुम्हें चौरासी लाख योनियों से मुक्त करने का वचन देता हूँ। अब तो मुझे बाहर निकाल दो।'

कुम्हार कहने लगा- 'मुझे अकेले नहीं, प्रभु जी! मेरे परिवार के सभी लोगों को भी चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त करने का वचन दोगे तो मैं आपको इस घड़े से बाहर निकालूँगा।'

प्रभु जी कहते हैं- 'चलो ठीक है, उनको भी चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त होने का मैं वचन देता हूँ। अब तो मुझे घड़े से बाहर निकाल दो।'

अब कुम्हार कहता है- 'बस, प्रभु जी! एक विनती और है। उसे भी पूरा करने का वचन दे दो तो मैं आपको घड़े से बाहर निकाल दूँगा।'

भगवान बोले - 'वो भी बता दे, क्या कहना चाहते हो ?'

कुम्भार कहने लगा - 'प्रभु जी ! जिस घड़े के नीचे आप छुपे हो, उसकी मिट्टी मेरे बैलों के ऊपर लाद के लायी गयी है। मेरे इन बैलों को भी चौरासी के बन्धन से मुक्त करने का वचन दो ।'

भगवान ने कुम्हार के प्रेम पर प्रसन्न होकर उन बैलों को भी चौरासी के बन्धन से मुक्त होने का वचन दिया ।'

प्रभु बोले - 'अब तो तुम्हारी सब इच्छा पूरी हो गयी, अब तो मुझे घड़े से बाहर निकाल दो ।'

तब कुम्हार कहता है - 'अभी नहीं, भगवन! बस, एक अन्तिम इच्छा और है। उसे भी पूरा कर दीजिये और वो ये है - जो भी प्राणी हम दोनों के बीच के इस संवाद को सुनेगा, उसे भी आप चौरासी लाख योनियों के बन्धन से मुक्त करोगे । बस, यह वचन दे दो तो मैं आपको इस घड़े से बाहर निकाल दूँगा।'

कुम्हार की प्रेम भरी बातों को सुन कर प्रभु श्री कृष्ण बहुत खुश हुए और कुम्हार की इस इच्छा को भी पूरा करने का वचन दिया।

फिर कुम्हार ने बाल श्री कृष्ण को घड़े से बाहर निकाल दिया। उनके चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। प्रभु जी के चरण धोये और चरणामृत पीया। अपनी पूरी झोंपड़ी में चरणामृत का छिड़काव किया और प्रभु जी के गले लगकर इतना रोये कि प्रभु में ही विलीन हो गये ।

जरा सोच करके देखिये, जो बाल श्री कृष्ण सात कोस लम्बे-चौड़े गोवर्धन पर्वत को अपनी इक्क्नी अंगुली पर उठा सकते हैं, तो क्या वो एक घड़ा नहीं उठा सकते थे।

लेकिन बिना प्रेम रीझे नहीं नटवर नन्द किशोर। कोई कितने भी यज्ञ करे, अनुष्ठान करे, कितना भी दान करे, चाहे कितनी भी भक्ति करे, लेकिन जब तक आपके दिल मे प्राणी के लिए दुख दर्द नही है तो प्रभु श्री कन्हा जी की भक्ति व उनका दर्शन नही हो सकता।

कर्ज वाली लक्ष्मी

गुरुदत्त शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, बी. एड. विभाग

एक छोटा 15 साल का भाई अपने पापा से ''पापा पापा दीदी के होने वाले ससुर और सास कल आ रहे है अभी जीजाजी ने फोन पर बताया''। दीदी मतलब उसकी बड़ी बहन की सगाई कुछ दिन पहले एक अच्छे घर में तय हुई थी।

दीनदयाल जी पहले से ही उदास बैठे थे धीरे से बोले...

हां बेटा.. उनका कल ही फोन आया था कि वो एक दो दिन में दहेज की बात करने आ रहे हैं.. बोले... दहेज के बारे में आप से जरूरी बात करनी है.. बड़ी मुश्किल से यह अच्छा लड़का मिला था.. कल को उनकी दहेज की मांग इतनी ज़्यादा हो कि मैं पूरी नही कर पाया तो? कहते कहते उनकी आँखें भर आयीं..

घर के प्रत्येक सदस्य के मन व चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ दिखाई दे रही थी...लड़की भी उदास हो गयी... खैर.. अगले दिन समधी समधिन आए.. उनकी खूब आवभगत की गयी.. कुछ देर बैठने के बाद लड़के के पिता ने लड़की के पिता से कहा'' दीनदयाल जी अब काम की बात हो जाए.. दीनदयाल जी की धड़कन बढ़ गयी.. बोले.. हां हां.. समधी जी.. जो आप हुकुम करें.. लड़के के पिताजी ने धीरे से अपनी कुर्सी दीनदयाल जी और खिसकाई ओर धीरे से उनके कान में बोले. दीनदयाल जी मुझे दहेज के बारे बात करनी है!... दीनदयाल जी हाथ जोड़ते हुये आँखों में पानी लिए हुए बोले बताईए समधी जी....जो आप को उचित लगे.. मैं पूरी कोशिश करूंगा.. समधी जी ने धीरे से दीनदयाल जी का हाथ अपने हाथों से दबाते हुये बस इतना ही कहा.....

आप कन्यादान में कुछ भी देगें या ना भी देंगे... थोड़ा देंगे या ज़्यादा देंगे.. मुझे सब स्वीकार है... पर कर्ज लेकर आप एक रुपया भी दहेज मत देना.. वो मुझे स्वीकार नहीं.. क्योकि जो बेटी अपने बाप को कर्ज में डुबो दे वैसी ''कर्ज वाली लक्ष्मी'' मुझे स्वीकार नही...मुझे बिना कर्ज वाली बहू ही चाहिए.. जो मेरे यहाँ आकर मेरी सम्पति को दो गुना कर देगी..

दीनदयाल जी हैरान हो गए.. उनसे गले मिलकर बोले.. समधी जी बिल्कुल ऐसा ही होगा..

शिक्षा- कर्ज वाली लक्ष्मी ना कोई विदा करें नही कोई स्वीकार करे.. अपना घर समृद्ध करें..

सामाजिक समरसता व्यवहार

सत्य प्रकाश, असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग

हम सब जानते हैं सामाजिक व्यवस्था में 'समता' यह एक श्रेष्ठ तत्व है। भारत के संविधान में इसे प्राथमिकता दी गयी है। समानतायुक्त समाज रचना, विषमता निर्मूलन इन विषयों पर काफी लिखा जाता है, चर्चा होती है और इसी का आधार लेकर समाज में भेद भी निर्माण किये जाते हैं। समता तत्व को लेकर स्वामी विवेकानन्द जी के चिंतन में भगवान बुद्ध के उपदेश का आधार मिलता है। वे कहते हैं ''आजकल जनतंत्र और सभी मनुष्यों में समानता इन विषयों के संबंध में कुछ सुना जाता है, परंतु हम सब समान हैं, यह किसी को कैसे पता चले? उसके लिए तीव्र बुद्धि तथा मूर्खतापूर्ण कल्पनाओं से मुक्त इस प्रकार का भेदी मन होना चाहिये। मन के ऊपर परतें जमाने वाली भ्रमपूर्ण कल्पनाओं का भेद कर अंतःस्थ शुद्ध तत्व तक उसे पहुंच जाना चाहिये। तब उसे पता चलेगा कि सभी प्रकार की पूर्ण रूप से परिपूर्ण शक्तियां ये पहले से ही उसमें हैं। दूसरे किसी से उसे वे मिलने वाली नहीं। उसे जब इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति प्राप्त होगी, तब उसी क्षण वह मुक्त होगा तथा वह समत्व प्राप्त करेगा। उसे इसकी भी अनुभूति मिलेगी कि दूसरा हर व्यक्ति ही उसी समान पूर्ण है तथा उसे अपने बंधुओं के ऊपर शारीरिक, मानसिक अथवा नैतिक किसी भी प्रकार का शासन चलाने की आवश्यकता नहीं. खुद से निचले स्तर का और कोई मनुष्य है, इस कल्पना को तब वह त्याग देता है, तब ही वह समानता की भाषा का उच्चारण कर सकता है, तब तक नहीं।'' (भगवान बुद्ध तथा उनका उपदेश स्वामी विवेकानन्द, पृष्ठ 28)

निसर्ग के इस महान तत्व का विस्मरण जब व्यवहारिक स्तर के मनुष्य जीवन में आता है, तब समाज जीवन में भेदभाव युक्त समाज रचना अपनी जड़ पकड़ लेती है। समय रहते ही इस स्थिति का इलाज नहीं किया गया तो यही रूढ़ी के रूप में प्रतिस्थापित होती है। भारतीय समाज के साथ यही हुआ है। समता का यह सर्वश्रेष्ठ, सर्वमान्य तत्व हमने स्वीकार तो कर लिया, विचार बुद्धि के स्तर पर हमने मान्यता तो दे दी परंतु इसे व्यवहार में परिवर्तित करने में असफल रहे। 'समता' इस तत्व को सिद्ध और साध्य करने हेतु 'समरसता' यह व्यवहारिक तत्व प्रचलित करना जरूरी है। समरसता यह भावात्मक तत्व है और इसमें 'बंधुभाव' के तत्व को असाधारण महत्ता दी जाती है। डॉ. बाबा साहब तो कहा करते थे, ''बंधुता यही स्वतन्त्रता तथा समता का आश्वासन है। स्वतंत्रता तथा समता की रक्षा कानून से नहीं होती।''

समरसतापूर्वक व्यवहार से स्वतंत्र, समता और बंधुता इन तीन तत्वों के साध्य तक हम पहुंच सकते हैं। दुर्भाग्य से इन तीन तत्वों के आधार पर हिन्दू समाज की रचना नहीं हुई है। जिस समाज रचना में उच्च तत्व व्यवहार्य हो सकते हैं, वही समाज रचना सब में श्रेष्ठ है। जिस समाज रचना में वे व्यवहार्य नहीं हो सकते, उस समाज रचना को भंग कर उसके स्थान पर शीघ्र नयी रचना बनायी जाये, ऐसा स्वामी विवेकानन्द का मत था।

भारतवर्ष में समय-समय पर अनेक राष्ट्र पुरुषों ने जन्म लिया है। उन्होंने अपने जीवन-काल का सम्पूर्ण समय समाज की स्थिति को सुधारने में लगाया। राजा राममोहन राय से डॉ. बाबासाहब आंबेडकर तक सभी राष्ट्र पुरुषों का यही प्रयास रहा है। अधोगति के आखिरी पायदान पर पहुंची हुई सामाजिक स्थिति को सुधारने में अपना सारा जीवन व्यतीत किया। सामाजिक मंथन, अपनी श्रेष्ठ इतिहास-परंपरा जागृति हेतु राष्ट्र पुरुषों के जीवन कार्य का सत्य वर्णन समाज में लाना यह समरसता भाव जगाने हेतु उपयुक्त है। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा ज्योतिराव फुले, राजर्षि शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर, नारायण गुरु आदि इनका योगदान अपार है. भारतवर्ष में संतों की भी लम्बी परंपरा रही है। सारे संतों ने भी समरसता भाव और व्यवहार हेतु अपार योगदान दिया है। इनके विचार समय-समय पर लोगों के सामने लाना यह एक समरसता प्रस्थापित करने हेतु उपयुक्त है।

''राष्ट्र में साधारण जनता में बुद्धि का विकास जितना अधिक, उतना राष्ट्र का उत्कर्ष अधिक. हिन्दुस्थान में विद्या तथा बुद्धि का विकास दीर्घ अवधि तक मुट्ठीभर लोगों के हाथ में ही रहा। यह मानो अपने अकेले के हक की बात है। ऐसी जिद लेकर इन मुट्ठीभर लोगों ने समूची विद्या को अपनी कोठी में कैद कर रखा। उन्हें इसमें राजाओं का समर्थन भी प्राप्त हुआ और उसी के फलस्वरूप साधारण जनता निरी गंवार रहकर हिन्दुस्थान दरिद्र के रास्ते पर बढ़ा। इस स्थिति में से हमें अगर फिर से ऊपर उठना है तो शिक्षा का प्रसार साधारण जनता में करने को छोड़कर दूसरा कोई उपाय नहीं।

भारत के गरीब, भूखे-कंगाल, पिछड़े, घुमंतु समाज के लोगों को शिक्षा कैसे दी जाए? गरीब लोग अगर शिक्षा के निकट पहुंच न पा रहे हों तो शिक्षा उनके तक पहुंचना चाहिए। दुर्बलों की सेवा यही नारायण की सेवा है। दरिद्र नारायण की सेवा, शिव भावे जीव सेवा यह रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा दिखाया हुआ मार्ग है। लोक शिक्षण तथा लोकसेवा के लिए अच्छे कार्यकर्ता होना जरूरी हैं। कार्यकर्ता में सम्पूर्ण निष्कपटता, पवित्रता, सर्वस्पर्शी बुद्धि तथा सर्व विजयी इच्छा शक्ति इस सभी की आवश्यकता है। इन गुणों के बल पर मुट्ठीभर लोग भी यदि काम करने में जुट गये, तो सारी दुनिया में क्रांति हो जायेगी।

समरसता स्थापित करने हेतु 'सामाजिक न्याय' का तत्व भी उतना ही जरूरी है। आज की भाषा में 'आरक्षण' यह सामाजिक न्याय का एक साधन है साध्य नहीं। यह ध्यान रखना जरूरी है।

गजल

आसमा परवीन, बी.एड. द्वितीय वर्ष

कॉलिज अनूपशहर
ज्ञान के दीपक हम जलाते चलें।
शिक्षा की अलख हम जानते चलें॥

शिक्षा से हर बच्चा सजाते चलें।
हम भारत अतुल्य बनाते चलें॥

शून्य का दिया ज्ञान भारत ने जग को।
यही बात विश्व को हम जताते चलें॥

हर धर्म के फूल हैं खिलते यहाँ।
अनेकता में एकता हम बताते चलें॥

बेड़ियाँ अशिक्षा की तोड़ेंगे मिलकर।
अज्ञानता तम्र हटाते चलें॥

यही सब से दुआ है 'आसमा-शकील'।
मिलकर शिक्षित-विकसित
भारत हम बनाते चलें॥

आखिर अंतर रह ही गया

सुनील कुमार गर्ग, कार्यालय अधीक्षक

बचपन में जब हम रेल की सवारी करते थे, माँ घर से खाना बनाकर ले जाती थी स पर रेल में कुछ लोगों को जब खाना खरीद कर खाते देखता बड़ा मन करता हम भी खरीद कर खाए स पापा ने समझाया ये हमारे बस का नहीं स अमीर लोग इस तरह पैसे खर्च कर सकते हैं, हम नहीं स बड़े होकर देखा, जब हम खाना खरीद कर खा रहें हैं, वो लोग घर का भोजन ले जा रहे हैंस ''स्वास्थ सचेतन के लिए''। आखिर वो अंतर रह ही गया।

बचपन में जब हम सूती कपड़ा पहनते थे, तब वो लोग टेरीलीन पहनते थे स बड़ा मन करता था पर पापा कहते हम इतना खर्च नहीं कर सकते स बड़े होकर जब हम टेरीलीन पहने लगे तब वो लोग सूती के कपड़े पहनने लगे। सूती कपड़े महंगे हो गए स हम अब उतने खर्च नहीं कर सकते स आखिर अंतर रह ही गया।''

बचपन में जब खेलते खेलते हमारी पतलून घुटनों के पास से फट जाता, माँ बड़ी ही कारीगरी से उसे रफू कर देती और हम खुश हो जाते स बस उठते बैठते अपने हाथों से घुटनों के पास का वो रफू हिस्सा ढक लेते स बड़े होकर देखा वो लोग घुटनों के पास फटे पतलून महंगे दामों में बड़े दुकानों से खरीदकर पहन रहे हैं स आखिर अंतर रह ही गया।''

बचपन में हम साईकिल बड़ी मुश्किल से पाते, तब वे स्कूटर पर जाते स जब हम स्कूटर खरीदे, वो कार की सवारी करने लगे और जबतक हम मारुति खरीदे, वो बीएमडब्लू पर जाते दिखे स आखिर अंतर रह ही गया।

और हम जब रिटायरमेन्ट का पैसा लगाकर ठड खरीदे अंतर को मिटाने के लिए तो वो साईकिलिंग करते नजर आये स्वास्थ्य के लिए। अंतर रह ही गया''

हर हाल में हर समय दो लोगो में अंतर रह ही जाता है, अंतर सतत है सनातन है सदा सर्वदा रहेगा, कभी भी दो व्यक्ति और दो परिस्थितियां एक जैसी नहीं होती। इसलिए जिस हाल में हो जैसे हो प्रसन्न रहे, कहीं ऐसा न हो कल की सोचते सोचते आज को ही खो दें और फिर कल इस आज को याद करें।

कुछ पल

सुनील कुमार, प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग

हवाएँ हो गई है सर्द, आओ धूप में कुछ पल बिता लें,
कहें कुछ अपने मन की रिश्तों पर जमी बर्फ पिघला लें।
चटक से तोड़ें मूंगफली फैलायें, छिलके छत पर कुछ दाने खा लें। अवसाद भरे जीवन की दौड़ धूप में थक से गये हो कुछ देर सुस्ता लें।।

बातों के तिल का ताड़ नही, तिल में थोड़ा गुड़ मिला लें
खाएं गजक, वाणी में थोड़ी मिठास बना लें ।।
व्यवहार की चादर में अहम की सीलन है
दबी रजाई में ईर्ष्या की दुर्गन्ध है,
इन्हें खोलें.. जरा धूप लगा लें।
हवाएँ हो गई है सर्द,
आओ धूप में कुछ पल बिता लें।

चरित्रहीन

लक्ष्मण सिंह, कार्यालय सहायक

स्त्री तब तक "चरित्रहीन" नहीं हो सकती, जब तक पुरुष "चरित्रहीन" न हो गौतम बुद्ध! संन्यास लेने के बाद गौतम बुद्ध ने अनेक क्षेत्रों की यात्रा की। एक बार वह एक गांव में गए। वहां एक स्त्री उनके पास आई और बोली- आप तो कोई राजकुमार लगते हैं। क्या मैं जान सकती हूं कि इस युवावस्था में गेरुआ वस्त्र पहनने का क्या कारण है?

बुद्ध ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि— तीन प्रश्नों के हल ढूंढने के लिए उन्होंने संन्यास लिया। बुद्ध ने कहा— हमारा यह शरीर जो युवा व आकर्षक है, पर जल्दी ही यह वृद्ध होगा, फिर बीमार और अंत में मृत्यु के मुंह में चला जाएगा। मुझे 'वृद्धावस्था', 'बीमारी' व 'मृत्यु' के कारण का ज्ञान प्राप्त करना है।

बुद्ध के विचारो से प्रभावित होकर उस स्त्री ने उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया। शीघ्र ही यह बात पूरे गांव में फैल गई। गांव वासी बुद्ध के पास आए व आग्रह किया कि वे इस स्त्री के घर भोजन करने न जाएं। क्योंकि वह "चरित्रहीन" है!

बुद्ध ने गांव के मुखिया से पूछा— क्या आप भी मानते हैं कि वह स्त्री चरित्रहीन है? मुखिया ने कहा कि मैं शपथ लेकर कहता हूं कि वह बुरे चरित्र वाली स्त्री है। आप उसके घर न जाएं।

बुद्ध ने मुखिया का दायां हाथ पकड़ा और उसे ताली बजाने को कहा- मुखिया ने कहा- मैं एक हाथ से ताली नहीं बजा सकता क्योंकि मेरा दूसरा हाथ आपने पकड़ा हुआ है।

बुद्ध बोले- इसी प्रकार यह स्त्री स्वयं चरित्रहीन कैसे हो सकती है? जब तक इस गांव के पुरुष चरित्रहीन न हों! अगर गांव के सभी पुरुष अच्छे होते तो यह औरत ऐसी न होती। इसलिए इसके चरित्र के लिए यहां के पुरुष जिम्मेदार हैं। यह सुनकर सभी लज्जित हो गए! लेकिन आजकल हमारे समाज के पुरूष लज्जित नही गौर्वान्वित महसूस करते है। क्योकि यही हमारे पुरूष-प्रधान समाज की रीति एवं नीति है!! सकारात्मक सोचो!

हमारे अंग

दीपक शर्मा, लेखाकार

ये हमारे तन रूपी गाड़ी के पुर्जे हैं— इनको भी डर लगता है

किडनी को डर लगता है जब आप रात रात भर जागते हो।

पेट को अति ठंडे भोजन से डर लगता है।

फेफड़ों को धुँए से डर लगता है।

लीवर को गरिष्ठ भोजन से डर लगता है।

हृदय को अधिक नमक वाले भोजन से डर लगता है।

पेनक्रियाज को अधिक भोजन खाने पर डर लगता है।

आँतो को मांसाहारी भोजन से डर लगता है।

आँखों को मोबाइल और कंप्यूटर के स्क्रीन की लाइट से डर लगता है।

गाल ब्लेडर को सुबह का नाश्ता नहीं करने पर डर लगता है।

इसलिए आप अपना और अपने तन रूपी इन कलपुर्जों का पूरा पूरा ख्याल रखें क्योंकि इन कलपुर्जों के कुछ वैकल्पिक पुर्जे बाजार में उपलब्ध नहीं हैं और जो मुश्किल से उपलब्ध हैं वे बहुत महंगे हैं और शायद आपके शरीर में फिट ना हो सकें। उसके बाद आपकी शरीर रूपी गाड़ी कैसे चलेगी, इसके बारे में खुद ही विचार करें।

दिल को छू लेने वाली कुछ पंक्तियां

जीतेन्द्र कुमार, कार्यालय सहायक

तन्हा बैठा था एक दिन मैं अपने मकान में,
चिड़िया बना रही थी घोंसला रोशनदान में।
पल भर में आती पल भर में जाती थी वो।
छोटे छोटे तिनके चोंच में भर लाती थी वो।
बना रही थी वो अपना घर एक न्यारा,
कोई तिनका था, ना ईंट उसकी कोई गारा।
कुछ दिन बाद.... मौसम बदला, हवा के झोंके आने लगे,
नन्हे से दो बच्चे घोंसले में चहचहाने लगे।
पाल रही थी चिड़िया उन्हें,
पंख निकल रहे थे दोनों के
पैरों पर करती थी खड़ा उन्हें।
देखता था मैं हर रोज उन्हें
जज्बात मेरे उनसे कुछ जुड़ गए ,
पंख निकलने पर दोनों बच्चे
मां को छोड़ अकेला उड़ गए।
चिड़िया से पूछा मैंने..
तेरे बच्चे तुझे अकेला क्यों छोड़ गए,
तू तो थी मां उनकी
फिर ये रिश्ता क्यों तोड़ गए.. चिड़िया बोली...
परिन्दे और इंसान के बच्चे में यही तो फर्क है
इंसान का बच्चा.....
पैदा होते ही अपना हक जमाता है,
न मिलने पर वो मां बाप को
कोर्ट कचहरी तक भी ले जाता है।
मैंने बच्चों को जन्म दिया
पर करता कोई मुझे याद नहीं,
मेरे बच्चे क्यों रहेंगे साथ मेरे
क्योंकि मेरी कोई जायदाद नहीं

नोबल पुरस्कार 2018

विजय शर्मा, प्रयोगशाला सहायक, बी.सी.ए. विभाग

वर्ष 2018 मे दिया गया नोबल पुरस्कार इस प्रकार है–

भौतिकी

1. आर्थर ऑस्किन (अमेरिका)
2. गेरार्ड मोउरो (फ्रांस)
3. डोना स्ट्रीकलैंड (कनाडा)

रसायन

1. एच अर्नाल्ड (अमेरिका)
2. जार्ज पी स्मिथ (अमेरिका)
3. ग्रेगरी पी विंटर (ब्रिटिश)

चिकित्सा

1. जेम्स पी एलिसन (अमेरिका)
2. तासुकू होंजो (जापान)

शांति

1. डेनिस मुकवेगे (कांगो)
2. नादिया मुराद (इराक)

अर्थशास्त्र

1. विलियम नारधौस (अमेरिका)
2. पाल रोमर (अमेरिका)

2018 के नोबेल पुरष्कार से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण बातें

- साहित्य के नोबेल पुरस्कार को इस साल स्थगित कर दिया गया है।
- पुरस्कार के 117 साल के इतिहास में इसे दूसरी बार रोका गया है।
- इससे पहले इसे 1943 में द्वितीय विश्व युद्ध को लेकर स्थगित किया गया था।
- नोबेल पुरस्कार प्रदान करने वाली संस्था एक सेक्स स्कैंडल में फंस गई है।

- यह अकादमी 1901 से ही साहित्य नोबेल पुरस्कार विजेताओं का चयन कर रही है।
- भारत को सिर्फ एक बार साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला है।
- 1913 में रवींद्रनाथ टैगोर को गीतांजलि के लिए यह पुरस्कार दिया गया था।

पिता

चंद्रपाल सिंह, कंप्यूटर ऑपरेटर

- पिता की सख्ती को बर्दाशत करो, ताकि काबिल बन सको।
- पिता की बातें गौर से सुनो, ताकि दुसरो की न सुननी पड़े।
- पिता के सामने ऊंचा मत बोलो, वरना भगवान तुमको नीचा कर देगा।
- पिता का सम्मान करो, ताकि तुम्हारी संतान तुम्हारा सम्मान करे।
- पिता की इज्जत करो, ताकि इससे फायदा उठा सको।
- पिता का हुक्म मानो ताकि खुशहाल रह सको।
- पिता के सामने नजरे झुका कर रखो, ताकि भगवान तुमको दुनियां मे आगे करे।
- पिता एक किताब है जिस पर अनुभव लिखा जाता है।
- पिता के आंसु तुम्हारे सामने न गिरे, वरना भगवान तुम्हें दुनिया से गिरा देगा।

पिता एक ऐसी हस्ती है...!!!! माँ का मुकाम तो बेशक अपनी जगह है! पर पिता का भी कुछ कम नही, माँ के कदमों मे स्वर्ग है पर पिता स्वर्ग का दरवाजा है, अगर दरवाजा ना खुल्ला तो अंदर कैसे जाओगे?

जो गरमी हो या सर्दी अपने बच्चों की रोजी रोटी की फिक्र में परेशान रहता है, ना कोई पिता के जैसा प्यार दे सकता है ना कर सकता है, अपने बच्चों से !!

याद रखो सूरज गर्म जरूर होता है मगर डूब जाए तो अंधेरा छा जाता है, !!

आओ आज सब मिलकर उस अजीम हस्ती के लिए प्रार्थना करें ..

हे भगवान मेरे पिता को अच्छी सेहत ओर तंदूरस्ती देना। उनकी तमाम परेशानी को दूर कर, और उन्हें हमेशा हमारे लिए खुश रखना।

बेटियाँ

रेनू, बी.ए., द्वितीय वर्ष

क्यों करता है भारतीय समाज बेटियों की इतनी परवाह... एक संत की कथा में, एक बालिका खड़ी हो गई। चेहरे पर झलकता आक्रोश संत ने पूछा, बोलो क्या बात है बालिका ने कहा-महाराज हमारे समाज में लड़कों को हर प्रकार की आजादी होती है। वो कुछ भी करें, कहीं भी जाएं उस पर कोई खास टोका-टाकी नहीं होती। इसके विपरीत लड़कियों को बात-बात पर टोका जाता है। यह मत करो, यहाँ मत जाओ, घर जल्दी आ जाओ। आदि। संत मुस्कुराए और कहा-बेटी तुमने कभी लोहे की दुकान के बाहर पड़े लोहे के गाडर देखे है? ये गाडर सर्दी, गर्मी बरसात, रात दिन इसी प्रकार पड़े रहते हैं। इसके बावजूद इनका कुछ नहीं बिगड़ता और इनकी कीमत पर भी कोई अन्तर नहीं पड़ता। लड़कों के लिए भी कुछ इसी प्रकार की सोच है समाज में। अब इसके विपरीत ज्वैलरी शॉप में। एक बड़ी तिजोरी, उसमें एक छोटी तिजोरी। उसमें रखी छोटी सुन्दर सी डिब्बी में रेशम पर नजाकत से रखा चमचमाता हीरा क्योंकि जौहरी जानता है कि अगर हीरे में जरा भी खरोंच आ गई तो उसकी कोई कीमत नहीं रहेगी। समाज में बेटियों की अहमियत भी कुछ इस प्रकार की है। पूरे घर को रोशन करती झिलमिलाते हीरे की तरह। जरा भी खरोंच से उसके और उसके परिवार के पास कुछ नहीं बचता। बस यही अन्तर है लड़कियाँ और लड़को में तथा लोहे और हीरे में।

साइबर अपराध (क्राइम) और सुरक्षा

डॉ. सुधा उपाध्याय,

आज दुनिया भर में लोग ऑनलाइन इंटरनेट के माध्यम से घर बैठे लोगों की निजी जानकारियों की चोरी कर रहे हैं जिसे साइबर अपराध कहते हैं। आज के अत्याधुनिक तकनीकी युग में लोग अपना जीवन सरल बनाने के लिए कई उपकरणों का प्रयोग करते हैं। वैश्वीकरण ही एकमात्र ऐसा कारण है जिसके द्वारा दुनिया भर के लोग एक दूसरे से आसानी से जुड़ पाने में सक्षम हुए हैं। तकनीक का आसानी से उपलब्ध होना एवं इसका लगातार प्रयोग, लोगों के संवाद के तरीकों एवं जीवन के संचालन पर गहरा प्रभाव डालता है।

इंटरनेट एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा लोग एवं कंपनियां दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक जुड़ पाते है। तकनीकी उन्नति ने मनुष्य को इंटरनेट पर हर रूप से निर्भर कर दिया है। इंटरनेट की आसान पहुंच ने हर चीज को सिर्फ एक जगह पर बैठकर ही उपलब्ध करा दिया है। सामाजिक नेटवर्किंग, ऑनलाइन खरीद, जानकारी का आदान प्रदान, गेमिंग, ऑनलाइन पढ़ा, ऑनलाइन नौकरियां, जिस भी चीज के बारे में मनुष्य कल्पना कर सकता है, वह सभी बस एक क्लिक के द्वारा इंटरनेट से संभव है।

इंटरनेट आज के युग में हर क्षेत्र में इस्तेमाल किया जाता है। इंटरनेट के बढ़ते फायदों के साथ साइबर अपराध जैसा भयावह मुद्दा भी उभर कर आया है। साइबर अपराध अलग-अलग तरीकों से प्रतिबद्ध होते हैं। कुछ सालों पहले तक इन सब चीजों के बारे में इतनी जागरूकता नहीं थी। अन्य विदेशी देशों के साथ साथ भारत में भी साइबर अपराध की घटनाएं एवं दर दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

साइबर अपराध या कंप्यूटर उन्मुख अपराध ऐसा अपराध है जिसमें एक कंप्यूटर और एक नेटवर्क साइबर अपराध में शामिल होता है आधुनिक दूरसंचार नेटवर्क (इंटरनेट, मोबाइल फोन) का अवैध रूप से उपयोग ताकि व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के खिलाफ अपराध किया जा सके, उनको प्रताड़ित किया जा सके, जानबूझकर उनको शारीरिक या मानसिक नुकसान एवं उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया जा सके।

साइबर अपराध द्वारा किसी व्यक्ति या राष्ट्र की सुरक्षा एवं वित्तीय स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है। साइबर अपराध एक अवैध कार्य है जहां कंप्यूटर को साधन या लक्ष्य या दोनों ही तरीके से इस्तेमाल किया जाता है। साइबर अपराध एक व्यापक शब्द है, जो कि इस प्रकार भी परिभाषित किया जा सकता है— ऐसी आपराधिक गतिविधि जहां कंप्यूटर या कंप्यूटर नेटवर्क को साधन, लक्ष्य या आपराधिक गतिविधि के स्थान की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

साइबर अपराध को दो तरह से वर्गीकृत किया गया है—

पहला, ऐसे अपराध जिनमें कंप्यूटर को लक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

दूसरा, ऐसे अपराध जिनमें कंप्यूटर को हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

नेशनल क्राइम रिकार्ड्स ब्यूरो की एक रिपोर्ट के अनुसार साइबर अपराध की दृष्टि से भारत का अमेरिका और चीन के बाद तीसरा स्थान है। साइबर अपराध की दर साल 2017 तक 90 प्रतिश तक बढ़ी है, देश के विभिन्न राज्यों से यह आंकड़ा इकट्ठा किया गया है। साइबर अपराध में गिरफ्तार हुए ज्यादातर अपराधियों की आयु 18 से 30 वर्ष पाई गई है

साइबर अपराध के कई प्रकार हैं—

अनाधिकृत उपयोग एवं हैकिंग

अनाधिकृत उपयोग एक ऐसा अपराध है जिसमें कंप्यूटर के मालिक की अनुमति के बिना कंप्यूटर का किसी भी प्रकार

से अवैध उपयोग किया जाता है। हैकिंग एक ऐसा अपराध है जिसमें कंप्यूटर प्रणाली में अवैध घुसपैठ करके उसको नुकसान पहुंचाया जाता है।

वैब हाईजैकिंग

यह एक ऐसा अपराध है जिसमें किसी व्यक्ति की वेबसाइट पर अवैध रूप से सशक्त नियंत्रण कर लिया जाता है। इस प्रकार वेबसाइट का मालिक उस वेबसाइट पर नियंत्रण एवं ज़रूरी जानकारी खो देता है।

पॉर्नोग्राफी

यह एक ऐसा अपराध है जिसमे यौन उत्तेजना द्वारा गलत काम कराया जाता है।

बाल यौन शोषण

बच्चों के साथ यौन दुर्व्यवहार के मामले इंटरनेट पर भारी मात्र में देखे जा सकते हैं। छोटे बच्चे ऐसे आपराधिक मामलों में आसान शिकार होते हैं। चूंकि कंप्यूटर घर घर में मौजूद है, इस कारण बच्चों की पहुंच इंटरनेट तक बहुत आसान हो गई है। इंटरनेट पर अश्लील सामग्री बहुत आसानी से उपलब्ध होती है। अपराधी (पीडोफाइल) बच्चों को अश्लील सामग्री देकर ललचाते हैं ताकि वह उनका अनुचित लाभ उठा सकें। अपराधी बच्चों से संपर्क करते हैं, बात करते हैं, मित्रता बढ़ाते हैं, ताकि उनका आत्मविश्वास जीत सके, अथवा उनका शोषण कर सके।

साइबर स्टॉकिंग

यह एक ऐसा अपराध है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को बार-बार उत्पीड़न का शिकार बनाया जाता है; पीड़ित का पीछा करके, तंग करके, कॉल द्वारा परेशान करके, संपत्ति के साथ छेड़छाड़ करके। स्टॉकिंग के उपरांत पीड़ित को मानसिक एवं शारीरिक रूप से हानि पहुंचाना मकसद होता है। स्टौकर (अपराधी) पीड़ित की सारी जानकारी अवैध रूप से इकट्ठा करके एवं इंटरनेट पर उनकी गलत छवि दिखाकर हानि पहुंचाने का लक्ष्य रखते हैं, ताकि भविष्य में भयादोहन करके उनका अनुचित लाभ उठा सकें।

सर्विस अटैक

यह एक ऐसा अपराध है, ऐसा हमला है जिसमें पीड़ित के नेटवर्क या विद्युत संदेश पात्र को बेकार यातायात एवं संदेशों से भर दिया जाता है। यह सब इसलिए किया जाता है ताकि पीड़ित को जानबूझकर तंग किया जा सके या पीड़ित अपना ईमेल इस्तेमाल ना कर पाए।

वायरस अटैक

वायरस ऐसे प्रोग्राम को कहा जाता है जो कंप्यूटर के अन्य प्रोग्राम को संक्रमित करने की क्षमता रखते हैं अथवा अपनी प्रतियां बना कर दूसरे प्रोग्राम में फैल जाते हैं। यह दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर होते हैं जो अपने आप को किसी दूसरे सॉफ्टवेयर से जोड़ लेते हैं अथवा कंप्यूटर को हानि पहुंचाते हैं। ट्रोजन हॉर्स, टाइम बम, लॉजिक बम, रैबिट आदि, यह सभी दुर्भावनापूर्ण सॉफ़्टवेयर है। वायरस कंप्यूटर पर कुछ इस तरीके से प्रभाव डालते हैं कि, या तो कंप्यूटर में मौजूद जानकारी को बदल देते हैं या नष्ट कर देते हैं ताकि वह इस्तेमाल करने लायक ना रह पाए।

सॉफ्टवेयर पायरेसी

यह एक ऐसा अपराध है जिसमें वास्तविक प्रोग्राम की अवैध प्रतिलिपि बनाकर जालसाजी द्वारा वितरित किया जाता है। इसमें और भी अपराध शामिल है, जैसे सत्तवाधिकार उल्लंघन, ट्रेडमार्क उल्लंघन, कंप्यूटर सोर्स कोड की चोरी आदि।

सलामी अटैक/हमला

यह एक तरीके का वित्तीय अपराध है। ठगी इतनी छोटी होती है कि पकड़ पाना बहुत मुश्किल होता है, उदाहरण के लिए अगर कोई बैंक कर्मचारी इस प्रकार की धोखाधड़ी करें और वह हर खाता धारक के बैंक खाते से हर माह रू 5 काटे, तो कोई भी इतनी थोड़ी धनराशि के कटने को पकड़ नहीं पाएगा, पर

अपराधी के पास महीने के अंत में काफी अच्छी मात्र में धन राशि इकट्ठी हो जाएगी।

फिशिंग

यह एक कैसा अपराध है जिसमें पीड़ित कोई मेल भेजा जाता है, जो कि यह दावा करता है कि वह एक स्थापित उद्यम द्वारा भेजा गया है ताकि पीड़ित से गोपनीय निजी जानकारी निकलवा सके अथवा पीड़ित के खिलाफ, उनको हानि पहुंचाने के लिए इस्तेमाल की जा सके।

साइबर अपराध को रोकने के उपाय के अन्तर्गत कंप्यूटर उपयोग कर्ता विभिन्न तकनीकों को अपना सकते हैं-

कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं को हैकर्स से अपने कंप्यूटर की सुरक्षा के लिए एक फ़ायरवॉल का उपयोग करना चाहिए।

कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं को एंटी वायरस सॉफ्टवेयर जैसे McAfee, Norton एंटी वायरस के रूप में स्थापित करने चाहिए।

साइबर विशेषज्ञों ने सलाह दी है कि यूजर्स को केवल सुरक्षित वेबसाइट्स पर ही खरीदारी करनी चाहिए। वे अपने क्रेडिट कार्ड की जानकारी संदिग्ध या अजनबियों को कभी न दे।

उपयोगकर्ताओं को अपने खातों पर मजबूत पासवर्ड विकसित करने चाहिए, अथार्त अक्षरों और संख्याओं को पासवर्ड में शामिल करें, एवं लगातार पासवर्ड और लॉगिन विवरण का अद्यतन करना चाहिए। बच्चों पर नजर रखे और उनके द्वारा इंटरनेट के इस्तेमाल को सीमित रखे। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब की सुरक्षा सेटिंग्स की जाँच करें और सावधान रहे।

हैकिंग से बचने के लिए जानकारी सुरक्षित रखें। अधिकांश संवेदनशील फ़ाइलों या वित्तीय रिकॉर्ड के लिए एंक्रिप्शन का उपयोग करें, सभी महत्वपूर्ण जानकारी के लिए नियमित बैक-अप बनाएं, और इसे किसी अन्य स्थान पर संग्रहीत कर लें।

उपयोगकर्ताओं को सार्वजनिक वाई-फाई हॉटस्पॉट का उपयोग करते समय सचेत रहना चाहिए। इन नेटवर्क पर वित्तीय लेनदेन के संचालन से बचें।

उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट पर नाम, पता, फोन नंबर या वित्तीय जानकारी जैसे व्यक्तिगत जानकारी देते समय सावधान रहना चाहिए। सुनिश्चित करें कि वेबसाइट्स सुरक्षित हैं।

एक लिंक या अज्ञात मूल के फ़ाइल पर क्लिक करने से पहले सभी चीजों का बुद्धिमता से आंकलन करना चाहिए। इनबॉक्स में कोई भी ईमेल न खोलें। संदेश के स्रोत की जांच करें। यदि कोई संदेह हो, तो स्रोत सत्यापित करें। कभी उन ईमेल का जवाब न दें जो उनसे जानकारी सत्यापित करने या उपयोगकर्ता के पासवर्ड की पुष्टि करने के लिए कहे।

संक्षेप में, साइबर अपराध एक गंभीर खतरे के रूप में विकसित हो रहा है। दुनिया भर की सरकारों, पुलिस विभागों और गुप्तचर इकाइयों ने साइबर अपराध के खिलाफ प्रतिक्रिया देना शुरू कर दिया है। सीमा पार साइबर खतरों पर अंकुश लगाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय पुलिस ने देश भर में विशेष साइबर सेल शुरू कर दी है और लोगों को शिक्षित करना शुरू कर दिया है, ताकि वे ज्ञान हासिल करें और ऐसे अपराधो से खुद को बचाएं।

माँ का महत्व

पूजा पाल, बी.ए., द्वितीय वर्ष

लबो पर उसके कभी बद्दुआ नहीं होती।
बस एक माँ है जो कभी खफा नहीं होती॥
माँ चूल्हा, धुआँ, रोटी और हाथों का छाला है।
माँ जिंदगी की कड़वाहट में अमृत का प्याला है॥
माँ पृथ्वी है, जगत है, धूरी है।
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है॥
माँ की यह कथा अनादि है, अध्याय नहीं है॥
और माँ का जीवन में कोई पर्याय नहीं है॥
माँ का महत्व दुनिया में कम हो नहीं सकता।
और माँ जैसा दुनिया में कुछ हो नहीं सकता॥
मैं कविता की ये पक्तियाँ माँ के नाम करती हूँ।
मैं दुनिया की सब माताओं को प्रणाम करती हूँ॥

अनमोल वचन

आकाश, बी-एस.सी., तृतीय वर्ष

1. जब तक आप सामाजिक स्वतन्त्रता हासिल नहीं कर लेते, कानून आपको जो भी स्वतन्त्रता देता है वो आपके किसी काम की नहीं।
2. यदि हम एक संयुक्त एकीकृत आधुनिक भारत चाहते हैं, तो सभी धर्मों के धर्म ग्रन्थों की संप्रभुता का अंत होना चाहिए।
3. राजनीतिक अत्याचार सामाजिक अत्याचार की तुलना में कुछ भी नहीं है और एक सुधारक जो समाज को खारिज कर देता है वो सरकार को खारिज कर देने वाले राजनीतिज्ञ से ज्यादा साहसी है।
4. समानता एक कल्पना हो सकती है, लेकिन फिर भी इसे एक गवर्निंग सिद्धान्त के रूप में स्वीकार करना होगा।
5. संविधान, यह एक मात्र वकीलों का दस्तावेज नहीं। यह जीवन का एक माध्यम है।
6. किसी का भी स्वाद बदला जा सकता है लेकिन जहर को अमृत में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।
7. न्याय हमेशा समानता के विचार को पैदा करता हैं
8. मन की स्वतन्त्रता ही वास्तविक स्वतन्त्रता है।
9. ज्ञान व्यक्ति के जीवन का आधार है।
10. शिक्षा जितनी पुरूषों के लिए आवश्यक है उतनी ही महिलाओं के लिए।
11. हम आदि से अंत तक भारतीय हैं।
12. पति-पत्नी के बीच का सम्बंध घनिष्ट मित्रों के सम्बंध के समान होना चाहिए।
13. जीवन लम्बा होने की बजाये महान होना चाहिए।
14. बुद्धि का विकास मानव के अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।
15. किसी भी कौम का विकास उस कौम की महिलाओं के विकास से मापा जाता है।
16. एक सुरक्षित सेना एक सुरक्षित सीमा से बेहतर है।
17. उदासीनता लोगों को प्रभावित करने वाली सबसे खराब किस्म की बीमारी है।
18. मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतन्त्रता, समानता और भाई चारा सीखाये।
19. अपने भाग्य की बजाय अपनी मजबूती पर विश्वास करो।
20. अच्छा दिखने के लिए मत जिओ बल्कि अच्छा बनने के लिए जिओ।
21. जो झुक सकता है वह सारी दुनिया को झुका भी सकता है।

झूठा कौन है

प्रीती पाल, बी.एड., द्वितीय वर्ष

अनूपशहर के एक स्कूल में प्रताप और अंकित साथ साथ पढ़ते थे। प्रताप कक्षा 12, अंकित कक्षा 11 का छात्र था। प्रताप स्वभाव का सीधा सादा तथा बड़ा होशियार बालक था वह हर बार कक्षा में प्रथम आता था। प्रताप हमेशा स्कूल में होने वाली प्रतियोगिताओं में भी सबसे आगे रहता था।

दूसरी तरफ अंकित स्वभाव का निर्दयी, चालाक और पढ़ने लिखने में आलसी और घटिया किस्म का था। वह दिन भर आवारा लड़कों के साथ घुमता-फिरता और रात में कमरे में आता और सो जाता था। वह हमेशा प्रताप से घृणा करता था।

अर्द्धवार्षिक परीक्षा सिर पर आ गयी थी। अचानक प्रताप के नोट्स गायब हो गये थे। वह नोट्स अंकित ने अपने सहपाठी सौरभ को दे दिये थे इसके बावजूद भी प्रताप ने अपनी पढ़ाई जारी रखी। और पहले की तरह ही अच्छे अंक प्राप्त किये और कक्षा में प्रथम स्थान पर आया। बाद में सौरभ और अंकित में झगड़ा हो जाने के कारण यह बात खुल गयी कि प्रताप के नोट्स अंकित ने चुराये थे। फिर भी प्रताप ने अंकित से कुछ नहीं कहा, बल्कि उसे एक अध्यापक की तरह समझाया और

बुरे लड़कों की संगति छोड़ने को कहा परन्तु अंकित पर उसके समझाने का कोई असर नहीं पड़ा। प्रताप को और भी दुश्मन समझने लगा। एक दिन फिर से दोनों के बीच दीवार खड़ी हो गयी। अंकित के नोट्स गुम हो गये तो प्रताप पर शक करने लगा। प्रताप ने कहा-मेरे पिछले साल के नोट्स है। उन्हीं से पढ़ाई कर लो। फिर अचानक अंकित के नोट्स मिल गये। अंकित ने देखा कि उसके नोट्स में और मेरे नोट्स में बहुत अन्तर है। उसे अपनी गलती का अहसास हो गया। उसने प्रताप के नोट्स से पढ़ना शुरु कर दिया। अब वह पहले जैसा घमंडी आलसी नहीं रहा। वह उसी की तरह रात दिन मेहनत करता। वह पहले जैसा नहीं रहा। जब परीक्षा का परिणाम आया तब अंकित का पहला स्थान आया। जब प्रधानाचार्य ने अंकित को पुरूस्कार देने के लिये बुलाया तब अंकित ने उस पुरूस्कार का असली हकदार अपने मित्र प्रताप को बताया जिससे पूरा स्कूल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। सभी साथियों ने अंकित की तारीफ की। प्रताप ने भी की।

बड़प्पन सूट बूट और ठाठ में नहीं है।
जिसकी आत्मा महान है वही बड़ा है।

ईश्वर से प्रार्थना

कु.शीतल, बी.एड., द्वितीय वर्ष

हे प्रभु! आपसे विनती है, इस विनती को ना ठुकरा देना।
अपनी भक्ति की ज्योति एक, हृदय में मेरे जला देना।।
मैं अधर्म, पाप, अहंकार, लोभ से, प्रभु सदा ही दूर रहूँ।
हे प्रभु। आपसे विनती है, मुझे धर्म का मार्ग दिखा देना॥
बचपन से ही आपने प्रभु, मुझे ज्ञान का पाठ सिखाया है।
आगे भी प्रभु आप मुझे ज्ञान की राह दिखा देना॥
जो पराई बेटियों से, बुरा व्यवहार करते हैं।
अपनी बेटियों को, गले से लगा के रखते हैं,
हे प्रभु! उन इन्सानों को, ज्ञान का सबक सिखा देना॥
जो रुपयों की खातिर, सब कुछ करते जाते हैं।
यहाँ तक कि, अपनी पत्नी, बच्चों को भी ठुकराते हैं,
हे प्रभु! उन इन्सानों को, बहुत ही कठिन सजा देना॥
जो मांस मदिरा खाते हैं, और भगतजी भी कहलाते हैं।
अपना धन बचाते हैं, दूसरों का खाने को ललचाते हैं,
हे प्रभु! उन इन्सानों को 'भगतजी' शब्द का अर्थ बता देना॥
हे प्रभु! आपकी कृपा से मैं कर्त्तव्य पर डटी रहूँ।
इस जीवन के प्रत्येक दिन मैं आपका चिन्तन करती रहूँ,
हे प्रभु। आपसे विनती है, मेरा जीवन सफल बना देना॥
मैं तो आपके चरणों की एक धूलि हूँ।
हे प्रभु! आपसे विनती है, इस धूलि को ना ठुकरा देना॥

आधुनिक शिक्षा प्रणाली

रूबी, बी.एड., द्वितीय वर्ष

स्कूल में पधारे अतिथि ने, आँखों में आँखे डाल
एक बच्चे से पूछा सवाल
बेटा, बड़े होकर क्या बनना चाहते हो?
बच्चा कुछ ज्यादा ही समझदार था
बिखान होनहार था, बोला, यदि और कुछ न बन पाया
तो भी रोजी-रोटी चला लूँग, पीठ पर लाढता हूँ रोज बस्ता
बड़ा होकर बोझ उठा लूँगा।
अतिथि चकराया, तो बच्चे ने उसे
अपना भारी बैग दिखाया।
अतिथि कुछ आगे बढ़ा,
एक नन्हीं बालिका से पूछा उसका हाल
बोली, जानकर आपको होगा मलाल
रटने पड़ते हैं ढेर सारे उत्तर, उगल आते हैं जिन्हें कापी पर
बड़ी होकर क्या बनूंगी नहीं जानती
पर क्या होता है बचपन अनजान हूँ इससे भी।

सुना है बचपन मुक्त होता है सारे बन्धनों से
यहाँ तो हर सुबह शुरू होती है लैसनो से,
अतिथि ने भाषण की, की थी बड़ी तैयारी
धरी रह गयी सारी की सारी
बोला, आधुनिक शिक्षा पाठयक्रम है बड़ा भारी
डाली है इसने नाजुक कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में उद्‌बोधक नारे

प्रगति शर्मा, बी.एड., प्रथम वर्ष

1. "तुम मुझे खून दो, मैं तूम्हें आजादी दूंगा।
— नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
2. "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।
— राम प्रसाद बिस्मिल
3. "वंदे मातरम।"
— बंकिमचन्द्र चटर्जी
4. "इंकलाब जिन्दाबाद"
— सरदार भगत सिंह
5. "करो या मरो।"
— महात्मा गांधी
6. "जय हिन्द।"
— नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
7. "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा"
— मोहम्मद इकबाल
8. "हू लिव्स इफ इण्डिया डाइज"
— पं. जवाहरलाल नेहरू
9. "हिन्दी, हिन्दू, हिन्दोस्तान"
— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
10. "वेदों की ओर लौटो"
— महर्षि दयानन्द सरस्वती
11. "दिल्ली चलो"
— नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
12. "पूर्ण स्वराज"
— पं. जवाहरलाल नेहरू
13. "भारत छोड़ो"
— महात्मा गांधी
14. "विजयी विश्व तिरंगा प्यार"
— श्यामलाल गुप्ता
15. "पराधीन सपनेहूं सुख नाहीं"
— गोस्वामी तुलसीदास
16. "स्वराज हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है।"
— लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

सामान्य ज्ञान

प्रगति शर्मा, बी.एड., प्रथम वर्ष

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) अध्यक्ष-आर.के. चतुर्वेदी
2. भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) गवर्नर - उर्जित पटेल
3. भारतीय स्टेट बैंक (SBI) अध्यक्ष - अरून्धति भट्‌टाचार्य
4. केन्द्रीय जल आयोग अध्यक्ष - जी.एस.झा.
5. राष्ट्रीय महिला आयोग अध्यक्ष - ललिता कुमार मंगलम
6. नीति आयोग अध्यक्ष - नरेन्द्र मोदी
7. लोकसभा अध्यक्ष - सुनीता महाजन
8. लोकसभा महासचिव - टी.के. विश्वनाथन
9. राज्यसभा अध्यक्ष - मोहम्मद हामिद अंसारी
10. राज्यसभा उपाध्यक्ष - पी.जे. कुरियन
11. राज्यसभा सदन के नेता - अरूण जेटली
12. राज्यसभा विपक्ष के नेता - गुलाम नवी आजाद
13. राज्यसभा महासचिव - शुमेश्वर के शेरिफ
14. नीति आयोग उपाध्यक्ष - डॉ. राजीव कुमार
15. मुख्य चुनाव आयुक्त - सैयद नसीम जैदी

16. चुनाव आयुक्त - अचल कुमार ज्योति
17. केन्द्रीय सतर्कता आयोग - (CVC) के.वी. चौधरी
18. केन्द्रीय सूचना आयोग - (CIC) आर.के. माथुर
19. राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग (NHRC) अध्यक्ष एच.एल. दत्तु
20. मंत्रिमण्डल सचिवालय - प्रदीप कुमार सिन्हा
21. प्रधानमंत्री के मुख्य सचिव - नृपेन्द्र मिश्रा
22. संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) अध्यक्ष - श्रीमती अलका सिरोही
23. राष्ट्रीय किसान आयोग (NCF) अध्यक्ष - डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन
24. रेलवे बोर्ड अध्यक्ष - ए.के. मित्तल
25. नेशनल सिक्योरिटी गार्ड - (NSG) महानिदेशक - आर.सी. तायल
26. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल - (CRPF) महानिदेशक - प्रकाश मिश्रा
27. सीमा सुरक्षा बल (BSF) - महानिर्देशक - के. के. शर्मा
28. रेलवे सुरक्षा बल (RPF) - महानिर्देशक - एस.के. भगत
29. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) - अध्यक्ष प्रो. वेद प्रकाश
30. कर्मचारी चयन आयोग (SSC) अध्यक्ष - असीम खुराना
31. राष्ट्रीय वन आयोग अध्यक्ष - वी.एन. कृपाल
32. भारतीय प्रेस परिषद अध्यक्ष - सी.के. प्रसाद
33. भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) अध्यक्ष - एस.के.रॉय
34. 14वे वित्त आयोग अध्यक्ष - डा. वाई.वी. रेड्डी
35. प्रसार भारतीय बोर्ड अध्यक्ष - डॉ. ए. सूर्य प्रकाश
36. निवेश आयोग अध्यक्ष - रतन टाटा
37. भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI)अनुराग सिंह ठाकुर
38. भारतीय औद्योगिक विकास बैंक अध्यक्ष - किशोर खरात
39. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) अध्यक्ष - डॉ. हर्ष कुमार भानवाला
40. भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक - शशीकान्त शर्मा
41. केन्द्रीय गृह मंत्री - राजनाथ सिंह
42. राष्ट्रपति - रामनाथ कोविन्द
43. बाल विकास मंत्री - मेनका गाँधी
44. भारत के उप-राष्ट्रपति - एम. बैकैया नायडु
45. भारत के मुख्य न्यायाधीश - दीपक मिश्रा
46. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री - जवाहर लाल नेहरू
47. भारत के प्रधानमंत्री - नरेन्द्र दामोदरदास मोदी

मुझे कदम-कदम पर

मोनिका कुमारी, बी.ए. प्रथम वर्ष

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहे फैलाए!!
एक पैर रखती हूँ
कि सौ राहें फूटती है,
मैं उन सब पर से गुजरना चाहती हूँ।
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने सपने
सब सच्चे लगते हैं!!
अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहती हूँ,
जाने क्या मिल जाए।
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है!!
हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य-पीड़ा है!!
पल-भर मैं सब में से गुजरना चाहती हूँ,
प्रत्येक उर में से तिर आना चाहती हूँ,
इस तरह खुद ही को दिए-दिए फिरती हूँ,
अजीब है जिन्दगी!!

कहानियाँ लेकर और
मुझको कुछ देकर ये चौराहे फैलते।
जहाँ जरा खड़ी होकर
बातें कुछ करती हूँ,
उपन्यास मिल जाते!!

कविताएँ मुस्करा लाग-डाँट करती हैं,
प्यारी बातें करती हैं।
मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएँ चढ़ती हैं!!

घबराए प्रतीक और मुसकाते रूप-चित्र
लेकर मैं घर पर जब लौटती हूँ
उपमाएँ द्वार पर आते ही कहती हैं कि
सौ बरस और तुम्हें
जीना ही चाहिए।
मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहें फैलाए!!

दोस्ती

सोनम राघव, बी.ए., तृतीय वर्ष

कुछ सालों बाद, ये लम्हे बहुत याद आएंगे,
जब हम सब दोस्त अपनी-अपनी मंजिल पर पहुँच जाएँगे
अकेले जब भी होंगे पर साथ गुजरे हुए लम्हे याद आएंगे
पैसे तो बहुत होंगे पर शायद खर्च करने
के लिए लम्हें कम पड़ जाएँगे
एक कप चाय यार दोस्तों की पिलाई हुई यही
सोचते-सोचते फिर से आँखें नम हो जाएँगी
दिल खोलकर इन लम्हों को जी लो यारो
जिन्दगी अपना इम्तहान फिर नहीं दोहराएगी।

वो कहते हैं मुझे पाकिस्तानी

जहानवी सैफी, बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

इस मुल्क की सड़कों पर निकलो कभी
तुम्हें दिखेंगे कई शर्मा, सिंह और जैन
और उन्हीं की भीड़ में होंगे
कुछ खान, अहमद, अकबर और जमानी
जिनको न जाने क्यूँ दुनिया बस कह देती है "पाकिस्तानी"!!
बड़े वक्त से दफन कर रखी थी
लेकिन आज मैं सुनाती हूँ तुम्हें अपनी जुबानी
हर उस वक्त की तकलीफ
जब वो कह देते थे मुझे "पाकिस्तानी"!!
अक्सर सोचा करती हूँ...
कि आखिर कह भी दिया तो क्या... आखिर कह भी दिया तो क्या
हैं तो वो भी अच्छे भले इन्सान
लेकिन जब अपने दिल के तयखानों में झाँकती हूँ
तो मुझे दिखता है सिर्फ "हिन्दुस्तानी"
इसी सरजमीन की हूँ मै एक परिन्दा
इसी पे हूँ सही, सालिम और जिन्दा
लेकिन बस!! क्यूँकि पढ़ लेती हूँ मैं नमाज
और ईद पे बन जाती है मेरे घर सेवैय्या बिरयानी
वो कह देते है मुझे "पाकिस्तानी"!!
जब भी अपना नाम बयान करती हूँ
एक आवाज के आ जाने से, एक लकब के मिल जाने से डरती हूँ
और अपने ही वतन के अन्दर, अपनेपन के लिए मैं मरती हूँ
ऐसा लगता है कोई कैद हो, कोई बंदिश हो
या हो गई हो मुझे सजा-ए-काला पानी
क्यूँकि हर छोटी-बड़ी बात पे
वो मुझसे कह देते हैं "पाकिस्तानी"।।

ये हमारी टोपी सिर्फ हमारा सर ढाँपने के लिए है
ना किसी को डराने, ना काँपने के लिए है
अरे!! थोड़ी मुहब्बत मुझे भी दे दो
अगर मुहब्बत बाँटने के लिए है
लेकिन नहीं... लेकिन नहीं
चाहे मेरा जन-गण-मन पढ़ने में हो रवानी
या मैं उन्हें सुना दूँ ,
तराना-ए-हिन्द के पीछे की पूरी कहानी
वो नहीं मानते, बस कहते जाते हैं मुझे "पाकिस्तानी"!!
किस तरीके से मैं इन्हें समझाऊँ
कैसे अपना वतन-परस्त होने का यकीन मैं दिलाऊँ
इतिहास के पन्ने पलटूँ
या खूद एक नावाकिफ़, इतिहास बन जाऊँ।।
इसलिए आज मुझे इन्हें
एक जवाब भी देना है और एक सवाल भी करना हे–
तो जवाब ये है कि -
तिरंगे के तीन रंगों में मैंने ढूँढी है अपनी पहचान
इस मुल्क की कामयाबी में है - मेरी आन, बान, शान
अगर कोई तराना मैं जानती हूँ तो वो है "राष्ट्रगान"
और मैंने अपने दिल के ऊपर लहू से
नक्श कर रखा है "हिन्दुस्तान"।
तो एक सवाल का जवाब तुम दे दो...
कि कैसे मैं चली जाऊँ "पाकिस्तान"...?
आखिर कैसे मैं चली जाऊँ "पाकिस्तान"?

माँ ने दिया पेन्सिल जैसा बनने का आशीर्वाद

शजनाज खान, बी.ए. प्रथम वर्ष

कागज पर पेन्सिल से लिखती हुई माँ के पास जाकर जब बेटे ने पैर छुए तो माँ ने कहा-"बेटा, तुम पेन्सिल जैसे बनना।"

बेट ने कहा - "क्यूँ माँ।"

आइये जाने माँ ने क्या कहा –

– तुम में महान उपलब्धियाँ हासिल करने की योग्यता है। किन्तु यह न भुलें कि तुम्हें एक ऐसे हाथ की भी आवश्यकता हैं, जो तुम्हारा मार्गदर्शन करें।
– छीलते समय पेन्सिल को कष्ट सहन, करना पड़ता है। उसके बाद वह सुन्दर और तेज लिखती है। इसी तरह तुम भी दुःख, अपमान संघर्ष के समय धैर्य रखना और सहन करना। सुन्दर और बेहतर इन्सान बन जाओगे।
– पेन्सिल अपनी गलतियों को सुधारने के लिए रबड़ का इस्तेमाल करने की इजाजत देती है। हमें भी अपनी गलतियों को सुधारने के लिए तैयार रहना चाहिए। इससे, न्यायपूर्वक लक्ष्यों तक बढ़ने में मदद मिलती है।
– पेन्सिल की कार्यप्रणाली में बाहरी लकड़ी की नहीं, बल्कि इसके अन्दर के ग्रेफाइट की भूमिका होती है। ग्रेफाइट या लेड की गुणवत्ता अच्छी होगी तो लेख भी अच्छा होगा। तुम भी बाहर की तुलना में आन्तरिक सुन्दरता पर ध्यान देना।
– पेन्सिल हमेशा अपना निशान छोड़ती है। ठीक इसी प्रकार तुम्हारा छोटे से छोटा काम अपना निशान छोड़ जाता है।

इसलिए ऐसा काम करना जिसके निशानों को देखकर लज्जित न होना पड़े।

मेरे भारत का सार

ना वो हिन्दू हो, ना वो मुसलमान हो।
हर एक अपने देश पर मरने वाला इंसान हो
बेखबर हो वो जाति धर्म के नाम से।
उसे अपने देश पे मिटने का अभिमान हो।।
वतन की हिफाजत करना ही उसका कर्म है।
वो फौजी हो चाहे वो किसान हो।।
कादिरे मुतलक हो वतन मेरा, अपनी फैयाजी से।
मेरे भारत का सार नायाब हो।।

अनमोल वचन आदमी की औकात

पिंकी शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

एक पत्थर सिर्फ एक बार मंदिर जाता है और भगवान बन जाता है। ये जरूरी नहीं कि रोज मंदिर जाने से इंसान धार्मिक बन जाये, लेकिन कर्म ऐसे होने चाहिये कि इंसान जहां भी जाये वो जगह मन्दिर बन जाये।

एक माचिस की तिल्ली, एक घी का लोटा, लकड़ियों के ढेर पे,

कुछ घंटें में राख, बस इतनी सी है आदमी की औकात।

जो भाग्य में है वह भाग कर आएगा,

जो नहीं है वह आकर भी भाग जाएगा,

झूठी बात पर जो वाह करेंगे वही लोग आपको तबाह करेंगे।

उड़ने दो मिट्टी को आखिर कहाँ तक उड़ेगी,

हवाओं ने जब साथ छोड़ा तो जमीन पर ही गिरेगी।

शीशा और रिश्ता बड़े ही नाजुक होते हैं, शीशा गलती से टूट जाता है, और रिश्ता गलतफहमियों से टूट जाता है।

इंतजार करने वालों को इतना मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाए, इस तरह न खर्च करो कि कर्ज हो जाए।

इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाए, इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाए, इस तरह न चलो कि देर हो जाए।

इस तरह न सोचो कि चिंता हो जाये।

आँसू जता देते है दर्द कैसा है।

बेरूखी बता देती है हमदर्द कैसा है।

घमण्ड बता देता है कितना पैसा है।

संस्कार बता देते हैं परिवार कैसा है।

बोली बता देती है इंसान कैसा है।

बहस बता देती है ज्ञान कैसा है।

नजरे बता देती हैं सूरत कैसी है।

स्पर्श बता देता है नीयत कैसी है।

काम करो ऐसा के पहचान बन जाये

चला ऐसे कि निशान बन जाये।

अरे जिंदगी, तो हर कोई काट लेता है

अगर दम है तो ऐसे जियो कि मिसाल बन जाये।।

और इतना सब सुनने के बाद

अब भी जिसका खून ना खोला,

वो खून नहीं पानी है

जो देश के काम न आये

बेकार वो जवानी है

जिंदगी व्यर्थ नहीं है।

समय बदलाव का

स्नेहा, बी.ए., तृतीय वर्ष

प्राचीन समय की बात है एक राज्य में एक राजा काफी समय से राज्य का पालन-पोषण कर रहे थे। उनके न्याय की चर्चा काफी दूर-दूर तक फैली हुई थी। उसी राज्य में एक स्त्री रहती थी जो देखने में बहुत भयंकर थी क्योंकि उसका चेहरा जला हुआ था। राज्य के सभी लोग उसे मनहूस मानते थे क्योंकि यदि सुबह-सुबह कोई भी उसका चेहरा देख ले तो अवश्य ही उसके साथ कोई दुखद घटना घटती थी, इसलिए राज्य के लोगों ने उसे राज्य से निकलवाने के लिए उसकी शिकायत राजा से कर दी। राजा ने उस स्त्री तथा राज्य के कुछ लोगों को सभा में बुलवाया और उनकी सारी बात सुनी। अन्त में राजा ने निर्णय

लिया कि यदि यह स्त्री सच में मनहूस है तो यह बात वह स्वयं जाचेंगे इसलिए राजा ने उस स्त्री को एक दिन के लिए महल में ठहरने के लिए कहा। अगले दिन राजा ने सुबह उठकर सर्वप्रथम उस स्त्री का मुख देखा। उसी दिन राजा युद्धाभ्यास में घायल हो गए, और समझ गए कि वह स्त्री सच में मनहूस है। उसके पश्चात् राजा ने सभा बुलाई; और बिना किसी के कुछ भी मत्रंणा के उस स्त्री को मौत की सजा सुना दी। यह बात राजा के मंत्री को अच्छी नहीं लगी और उसने राजा की बात का उल्लंघन किया और कहा कि महाराज आपने सुबह इस स्त्री का मुख देखा इसलिए आपका बुरा हुआ, फिर वह उस स्त्री से पूछता है कि तुमने सर्वप्रथम किसका मुँह देखा? तब स्त्री मंत्री को जबाब देती है कि महाराज का! सभा में मौजूद सभी लोग मौन रह गये। तत्पश्चात् मंत्री राजा से कहता है कि बताइए महाराज क्या आप को भी दण्ड दिया जाए? इस बात पर राजा मंत्री से पूछते हैं कि तुम्हारा क्या तात्पर्य है? मंत्री राजा के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि महाराज मनुष्य मनहूस नहीं हो सकता, बल्कि उनकी सोच मनहूस हो सकती है, यदि मनुष्य की सोच में बदलाव आए, तो हर स्थान से मनहूसता का नाश हो सकता है। मनुष्य का जीवन सदैव ही कठिनाइयों से गुजरता है, अतः उसे कर्म, धैर्य और सहनशक्ति से अपने कर्तव्य करते रहना चाहिए। अन्त में राजा ने सोच-विचार करके स्त्री को दण्ड से मुक्त कर दिया।

समय है बदलाव का,
प्रगति के रफ्तार का,
पापों के पश्चाताप् का,
स्त्री के स्वाभिमान का,
शहीदों के सम्मान का,
समय है बदलाव का।

जिन्दगी की सीख

मनीषा, बी.ए., तृतीय वर्ष

रास्ते में अगर मन्दिर दिखे ओर प्रार्थना
ना करो तो चलेगा पर रास्ते में
एम्बुलेंस मिले तब प्रार्थना जरूर करना
क्या पता शायद कोई जिन्दगी आपकी
दुआओं से बच जाए।

काम करो ऐसा कि पहचान बन जाये
हर कदम चलो ऐसे कि निशान बन जाये
यह जिंदगी तो सब काट लेते हैं
जिंदगी ऐसे जियो कि मिसाल बन जाये।

वक्त नूर को वेनूर बना देता है
जख्म छोटा सा नासूर बना देता है
कौन चाहता है कि मजबूरियों से गुजरो
पर वक्त इंसान को मजबूर बना देता है।

जीवन की राह में आगे बढ़कर देखो
बुराइयों की राह से पीछे हटकर देखो
सम्मान तो लोग अवश्य करेंगे तुम्हारा
अपने आप को स्वयं ही बदलकर देखो।

चाणक्य के शब्द

मनोरमा, बी.ए. तृतीय वर्ष

बिना पुण्य किये पुण्य का फल सबको चाहिये

लेकिन पाप करके भी पाप का फल किसी को नहीं चाहिये

इस तरह न कमाओ की पाप हो जाये

इस तरह न खर्च करो की कर्ज हो जाए

इस तरह न खाओ की मर्ज हो जाये

इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाये

इस तरह न चलो की देर हो जाए

इस तरह न सोचो कि चिंता हो जाए

छोटा बनकर रहोगे तो मिलेगी हर बड़ी मंजिल

बड़ा होने पर भी माँ गोद से उतार देती है

झूठ बोलकर रिश्ते उलझाने से अच्छा है

सच बोलकर समझा लिये जाये।

क्योंकि सच्चाई देर सवेर सामने आ ही जायेगी

मदद करना सीखिये फायदे के बगैर

मिलना जुलना सीखिये मतलब के बगैर

जिदंगी जीना सीखिये दिखावे के बगैर

आगे बढ़ने वाला व्यक्ति कभी किसी को बाधा नहीं पहुँचाता और दूसरों को बाधा पहुँचाने वाला व्यक्ति कभी आगे नहीं बढ़ता। कभी किसी अच्छे इंसान से गलती हो जाये तो सहन कर लो क्योंकि मोती कचरे में गिर जाये तो कीमती रहता है।

समाज में बदलाव क्यों नहीं आता क्योंकि गरीब में हिम्मत नहीं मध्यम में फर्सत नहीं और अमीर को जरूरत नहीं जो आपकी खुशी के लिये हार मान लेता है।

आप उससे कभी जीत नहीं सकते

संतुलित दिमाग जैसी कोई सादगी नहीं हैं

संतोष जैसा कोई सुख नहीं लोभ जैसी कोई बीमारी नहीं और दया जैसा कोई पुण्य नहीं ताकत के संग नेक इरादे भी रखना वरना ऐसा क्या था जो रावण हार गया।

मंदिर में वो भगवान है जिसे हमने बनाया है

समय जिसका साथ देता है वह बड़ो-बड़ो को मात देता है

अमीर के घर बैठा कौवा भी सबको मोर लगता है और गरीब का भूखा बच्चा चोर लगता है। साँप के दाँत में, बिच्छु के डंक मधुमक्खी के सिर में और इंसान के मन में कितना जहर भरा पड़ा है बता पाना मुश्किल है।

शिक्षक है भगवान

बबली कुमारी, बी.ए., तृतीय वर्ष

मन्दिर सा विद्यालय मेरा
शिक्षा है भगवान
कर लो पूजा इनकी
प्राप्त करना है यदि ज्ञान
बड़े-बड़े विद्वान बने
करके इनका ही ज्ञान
मन में भरकर आदर इनका
अब दूर करो अज्ञान
वही नरक का भागी है
जो करे इनका अपमान
बात हमेशा मानो इनकी
करो इनका सदैव सम्मान
डांट उनकी ऐसी समझें
जैसे आंवलों का रसपान
अपने शिक्षक की कर सेवा
बन जाओ गुण की खान
कर सके गर्व सिर पर
देखें शिक्षा ले अध्यापक से
बनो आदर्श इन्सान
अपना भारत देश महान

जीवन का रहस्य

• चिडिया जब जीवित रही है तो कीड़े-मकोड़ों को खाती है और जब चिड़िया मर जाती है तो कीड़े-मकोड़े उसको खाते हैं इसलिए इस बात का ध्यान रखो की समय और स्थिति कभी भी बदल सकती है। इसीलिए कभी किसी का अपमान मत करो। कभी किसी को मत आँको तुम शक्तिशाली हो सकते हो पर समय तुमसे भी ज्यादा शक्तिशाली है।

• एक पेड़ से अनेक माचिस की तिलिया बनाई जा सकती है लेकिन एक माचिस की तिली से लाखों पेड़ भी जलकर राख हो सकते हैं।

• कोई चाहे कितना भी महान क्यों न हो जाए पर कुदरत कभी भी किसी को महान बनने का मौका नहीं देती।

• कंठ दिया कोयल को तो रूप छीन लिया।

• रूप दिया मोर को तो इच्छा छीन ली।

• दी इच्छा इन्सान को तो सन्तोष छीन लिया।

• दिया सन्तोष सन्त को तो संसार छीन लिया।

इन्सान दुनिया में तीन चीजों के लिए मेहनत करता है–

1. मेरा नाम ऊँचा हो।

2. मेरा लिवास अच्छा हो।

3. मेरा मकान खूबसूरत हो।

लेकिन इन्सान के मरते ही खुदा उनकी तीनों चीजे सबसे पहले बदल देता है

1. नाम (स्वर्गीय), 2. लिवास (कफन),

3. मकान (कब्रिस्तान)

मत करना कभी भी गुरूर आप पर ऐ इन्सान खुदा ने तेरे और मेरे जैसे कितनों को मिट्टी से बनाकर मिट्टी में मिला दिया। ये जिन्दगी जैसी भी है बस एक ही बार मिलती है। इसलिए सब के साथ मिलजुलकर रहो सबसके चेहरे पर मुस्कुराहट लाओ और खुद भी मुस्कुराओ।

बेटी की जिज्ञासा

सुरभि शर्मा, बी.ए. तृतीय वर्ष

सुबह-सुबह मेरी माँ ने दादी जी को प्रणाम किया,
बदले में दादी जी ने माँ को आर्शीवाद दिया,
उस आर्शीवाद को सुनकर मरे दिल में चला सवालों का सिलसिला,
फिर मैंने उन सवालों को दादी जी से पूछ लिया
मैंने पूछा दादी जी –
क्यों बेटों की ही सलामती का आर्शीवाद दिया?
क्यों नहीं बेटियों की सलामती का भी आर्शीवाद दिया?
कुछ देर बाद –
भाभी जी ने दादी जी को प्रणाम किया,
बदल मे दादी जी ने पुत्रवती होने का आर्शीवाद दिया,
फिर मैंने पूछा दादी जी, क्यों नहीं बेटी होने का आर्शीवाद दिया।
इतने में ही दादी जी ने तीखे स्वर में जबाव दिया,
अरे! तूने तो लड़कियों की बोलने की हद को ही पार कर दिया, मैंने कहा दादी जी क्या भगवान ने बेटियों को बेटों के बराबर का हक नहीं दिया?,
दादी जी ने चिल्लाते हुए कहा–
पता नहीं ये लड़की क्या करके छोड़ेगी?
मैंने कहा दादी जी, बेटियों की बनी सीमायें तोड़ेगी।
मेरे दिल में बार-बार एक ही सवाल आता है
बेटियों को घर में क्यों इशारों में काम करने वाला रोबोट समझा जाता है
पता नहीं मोदी जी जैसे प्रधानमंत्रियों को लालकिले से कितना और चिल्लाना पड़ेगा,
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसे कितने अभियानों को चलाना पड़ेगा। पता नहीं बेटी को कब अपना हक मिलेगा,
बेटी नहीं होगी तो समाज कैसे चलेगा।

हाय रे पॉपुलेशन

आदित्य गौतम, बी.एस.सी, द्वितीय वर्ष

सारे विश्व में सबसे अधिक उत्पादन यदि किसी वस्तु का बढ़ रहा है तो वह है, मनुष्य का उत्पादन। घड़ी में लगी सेकण्ड की सुई इधर टिक करती है उधर संसार में कहीं न कहीं तीन बच्चे जन्म ले लेते हैं।

श्रष्टि के आदिकाल से लेकर सन 1880 तक सारी धरती की जनसंख्या कुल 'एक अरब' थी। पर इसके बाद से विज्ञान की प्रगति से होड़ लेती हुई जनसंख्या भी उतनी तेजी से बड़ी कि अगली एक शताब्दी में ही यह दुगनी हो गई अर्थात 2 अरब हो गई। इसके बाद तो वृद्धि और भी तीव्र हुई 1930 के बाद कुल 30 वर्ष में ही आबादी 3 अरब हो गई। यदि इस क्रम को रोका न गया तो सारा संसार एक बार विस्फोट के लिये तैयार हो जायेगा इस बेतहाश वृद्धि को देखकर ही माल्थस को चिंता हुई थी और उन्होंने जनसंख्या पर एक सविख्यात शोध कार्य किया, जो आज सारे विश्व में माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त (माल्थस थ्योरी) के नाम से प्रसिद्ध है। माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि की गंभीरता का दिग्दर्शन कराते हुए लिखा है– "जनसंख्या गुणोत्तरक्रम की दर से बढ़ती है। जबकि उत्पादन समान्तरक्रम के हिसाब से बढ़ता है। इस हिसाब से पहले वर्ष में एक व्यक्ति था तब उसके लिये एक यूनिट अन्न की आवश्यकता थी जो उसके उदर-पोषण के लिये पर्याप्त था। तीसरे वर्ष व्यक्ति हो गये 8 पर अन्न उत्पादन की यूनिट तीन ही रही। अब पाँच व्यक्तियों के यलिये अन्न का जो दबाव पड़ेगा उसके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, वस्त्र, मकान और मनोरंजन आदि के साधनों में कटोती भरण-पोषण की समस्या पूरी करनी पड़ेगी। प्रत्येक अगले वर्ष यह जटिलता बढ़ती ही जायेगी, सात वर्ष बाद जहाँ खाने के लिये जनसंख्या 128 होगी, वहाँ उत्पादन कुल सात यूनिट होगा।"

ताप्पर्य यह हुआ कि 121 व्यक्ति बेरोजगारी, भुखमरी, बीमारी और निरक्षरता की समस्या से जन्मजात पीड़ित होंगे। हमें इस बढ़ती जनसंख्या वृद्धि की दर को गम्भीरता से लेना होगा। अब में आपको अन्य उदाहरणों के माध्यम से समझाना चाहता हूँ। एक हाथी मरने से पूर्व केवल 6 हाथी पैदा कर जाता है। यदि प्रकृति उन पर नियंत्रण न करती तो संसार में हाथी ही हाथी होते। ऑस्ट्रेलिया में खरगोश बहुतायत में पाये जाते हैं। वहाँ छोटे-छोटे गढढों में पानी के लिये ही उनमें भयंकर युद्ध होता है। और यादवों की सेना की तरह आपसी रक्तपात में ही उनका विनाश होता रहता है। मनुष्य भी ऐसे ही विनाश के कगार पर आ पहुँचा है। दूसरी ओर, शेर बहुत ही कम बच्चे देते हैं। उनकी शारीरिक क्षमता इतनी प्रचंड होती है कि जब वह दहाड़ता है तो अगले पंखों से पृथ्वी को जकड़ लेता है। तब दहाड़ता है। किवदन्ती है कि उसे आशंका रहती है कि मेरी दहाड़ से कहीं पृथ्वी न फट जाये और एक तरफ सूअर सबसे अधिक बच्चे देने वाला जानवर है। उसे अपना उदर-पोषण्ध घृणित साधनों से ही करना पड़ता है।

जीवन का मूलमंत्र

कु. सविता, एम.ए., प्रथम वर्ष

संस्कृति शब्द का अर्थ– स्वच्छता, शुद्धि और श्रेष्ठता।

अर्थात

संस्कृति का तात्पर्य उन मूलभूत विचारों एवं व्यवहारों से हैं जिन पर आचरण करने से मनुष्य का जीवन श्रेष्ठ बनता है।

हमारे ऋषियों और महर्षियों द्वारा बतायी गयी विचार पद्धति और कार्य प्रणाली ही एक मात्र ऐसी जीवन पद्धति है जिसे अपनाकर मनुष्य सुख-शान्ति से रह सकता है। इसी जीवन शैली का नाम भारतीय संस्कृति है।

इस भारतीय संस्कृति के मूल में अनेक आधार हैं, जिनमें से सबसे बड़ा आधार है। ''ॐ''

इस समस्त ब्रह्माण्ड में एक अव्यक्त व अलक्षित ध्वनि सतत् से विद्यमान है। भारतीय ऋषियों एवं मुनियों ने इस दिव्यनाद को ''ॐ'' प्रणव ओम कहा है।

यह ''ॐ'' इस सृष्टि के विकास का सूत्र है। भारतीय धर्म, अध्यात्म, तंत्र और ज्ञान का मूल मंत्र है। प्रणव शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद के खिल सक्त में लिता है। ऋग्वेद में इसका अर्थ शब्द-गति स्तुतिपरक माना गया है। योग सूत्रकार पतंजलि महाराज ने कहा है–

तस्य वाचकः प्रणवः।

अर्थात– ''ॐ'' (प्रणव) परमात्मा का वाचक है। वेदों व उपनिषदों का मूल ''ॐ'' ही है।

ऋग्वेद– प्रथम मंत्र ''ॐ'' अग्निमीले" व अंत "इत्योम" से होता है।

यजुर्वेद– प्रथम मंत्र ''ॐ'' इषेत्वोर्जेत्वा" व अंत ''ॐ'' खं ब्रह्म" है।

अथर्ववेद– इसमें ''ॐ'' मो सेतु कहा गया है।

उपनिषद– इसमें ''ॐ'' को (ओंकार) को साधना का बीज मंत्र कहा गया है।

पुराणों में– ''ॐ'' की महिमा की व्याख्या की गयी है।

शिव पुराण में– इसमें प्रणव को वेदों का सारतत्व माना गया है।

विष्णु पुराण में– इसमें ओंकार को एकाक्षर ब्रह्म माना गया है।

मार्कण्डेय पुराण– इसमें ओंकार को परमात्मा की प्रापित का साधन बताया है।

श्रीमद्भागवत महापुराण– इसमें प्रकृति की सृष्टि ओंकार से बतायी गयी है। ओंकार की महिमा अनन्त है जो इस बात से पता चलती है कि हिन्दू धर्म के अतिरिक्त भी धर्मों में ओंकार को स्वीकार किया गया है।

बौद्ध धर्म– बौद्ध ओं मषि पद्ये हुम् का पवित्र उच्चारण करते हैं।

जैन धर्म– इसमें ओम पंचपरमेष्ठि का वाचक है और सत्ताक्षरी मंत्र "ओं, हीं, श्री अर्हं नम् में ओंकार विद्यमान है।

सिख धर्म– सिख धर्म का पहला गृन्थ है–

"जायुजी" और जयुजी का पहला वचन है– एको ओंकार सतिनामु.... तथा इसमें "एक ओंकार सद्गुरु प्रसाद" कहकर ही माथा झुकाया जाता है।

"ॐ" आत्मिक बल देता है। ॐ के उच्चारण से जीवन शक्ति उर्ध्वगामी होती है। इसके उच्चारण से अनेक रोग नष्ट होते हैं और चित्त से हताशा और निराशा दूर होती है।

कम्प्यूटर की महिला

मोनिका, बी.एड. द्वितीय वर्ष

कम्प्यूटर को 21वीं सदी का वरदान कहा जाता है।
अगर न होता ये तो, साइंस न इतना डेवलप हो पाता
मुख्य रुप से कम्प्यूटर के होते चार प्रकार
सुपर, मेनफ्रेम, मिनी और माइक्रो का है यह संसार
चालर्न बैबेज ने 1903 में किया था इसका आविष्कार
तब से अब तक हुए हैं, इसमें नित नये सुधार
कम्प्यूटर है बन चुका हर किसी का सहयोगी
चाहे हो वह बैंक, डाकघर या अस्पताल में हृदय रोगी।
हार्डवेयर और सॉफ्वेयर है कम्प्यूटर के दो आधार
एक दूजे के पूरक दोनों, एक बिना दूजा बेकार।
माइक्रो प्रोसेसर को कहते हैं, कम्प्यूटर का दिमाग
मॉनीटर दिखलाता इसमें घटने वाले सारे राज।
की बोर्ड, माउस, स्कैनर, इनपुर डिवाइज हैं कहलाते
मॉनीटर और प्रिंटर आदि, आउटपुट हमें दे जाते।
इंटरनेट की दुनिया को सूचना जाल कहा जाता
किसी क्षेत्र में करो सवाल तत्काल जबाब हमें मिल जाता।
कम्प्यूटर की है यह दुनिया, आई.टी. का जमाना है।
हिन्दुस्तान में करो सवाल तत्काल जबाब हमें मिल जाता।
कम्प्यूटर की है यह दुनिया, आई.टी. का जमाना है
हिन्दुस्तान को इसी क्षेत्र में काफी आगे जाना है।
पर कम्प्यूटर को जब कोई वायरस करता है संक्रमित
तो सारे डाटा और सूचना हो जाते हैं भ्रमित।
यही है कम्प्यूटर की महिमा जिसका आज है, बोलबाला

इसमें सारी दुनिया पर अपना अधिपत्य जमा डाला।
कम्प्यूटर के इस दुनिया पर हैं, जाने कितने उपकार
इसके फादर चार्ल्स बैबेज को बारम्बार नमस्कार॥

पाप का गुरु 'लोभ'

पूजा रानी, बी.एड., द्वितीय वर्ष

एक पंडित जी कई वर्षों तक काशी में शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद गांव लौटे। एक दिन एक किसान उनके पास आया और पूछा—पंडित जी हमें यह बताइए कि पाप का शुरु कौन है? प्रश्न सुनकर पंडित जी चकरा गए। उन्होंने धर्म व अध्यात्मिक गुरु तो सुने थे, लेकिन पाप का भी गुरु होता है, यह उनकी समझ और ज्ञान के बाहर था। वह फिर काशी लौटे। अनेक गुरुओं से मिले, लेकिन उन्हें जबाब नहीं मिला। अचानक एक दिन उनकी मुलाकात एक गणिका (वेश्या) से हो गई। उसने पंडित जी से परेशानी का कारण पूछा, तो उन्होंने अपनी समस्या बता दी। गणिका बोली— पंडित जी! इसका उत्तर है तो बहुत सरल, लेकिन आपको कुछ दिन मेरे पड़ोस में रहना होगा। वह उत्तर की प्रतीक्षा में रहे। एक दिन गणिका बोली— पंडित जी। आपको भोजन पकाने में बड़ी तकलीफ होती है। आप कहे तो मैं आपके लिये भोजन तैयार कर दिया करुं। यदि आप मुझे इस सेवा का मौका दें, तो मैं दक्षिणा में पांच स्वर्ण मुद्राएं भी प्रतिदिन आपको दूंगी।

पंडित जी ने कहा— तुम्हारी जैसी इच्छा, बस विशेष ध्यान रखना कि मेरे कमरे में आते-जाते तुम्हें कोई नहीं देखे। पहले ही दिन कई प्रकार के पकवान बनाकर उसने पंडित जी के सामने परोस दिया। पर ज्यों ही पंडित जी ने खाना चाहा, उसने सामने से थाली खींच ली। इस पर पंडित जी क्रुद्ध हो गए और बोले, यह क्या मजाक है? गणिका ने कहा, यही तो आपके प्रश्न का उत्तर है। यहाँ आने से पहले आप भोजन तो दूर, किसी के हाथ का पानी भी नहीं पीते थे, मगर स्वर्ण मुद्राओं के लोभ में आपने मेरे हाथ का बना खाना भी स्वीकार कर लिया। यह लोभ ही पाप का गुरु है।

जीवन उद्देश्य

दिव्या बंसल, बी.एड. द्वितीय वर्ष

इच्छाएँ कई तरह की होती हैं। सफल होने की इच्छा, अपनी खुशी की कीमत पर भी अपना कर्त्तव्य निभाने की इच्छा, मकसद पाने की इच्छा, जीवन का अर्थ देने वाली किसी चीज के लिए मर-मिटने की इच्छा अपनी आत्मा को बेचकर सारी दुनिया हासिल कर भी लें तो उसका क्या फायदा है?

एक उद्देश्यहीन जीवन जीना मरने के समान है। आपका उद्देश्य क्या है? क्या आपके पास कोई उद्देश्य हैं भी? लगन पैदा करता है। एक उद्देश्य बनाइए, और फिर उसे लगातार लगन एवं दृढ़ता से पूरा कीजिए।

हर रोज खुद से यह सवाल पूछना चाहिए— "क्या मैं जीवन में अपने उद्देश्य के करी पहुँच रहा हूँ" अगर जवाब 'ना' है, तो मैंने आज अपने जीवन जीवन का एक दिन वर्बाद कर दिया। जिन्दगी हमें उसी हिसाब से देता है, जिस हिसाब से हम उसे देते हैं।

हम जीवन में अपने उद्देश्य जितनी जल्दी ढूँढ लें, उतना ही अच्छा है। ऐसा लगता है कि जीवन में उद्देश्य खोजने की उन्नत तलाश ही सबसे बड़ी चुनौती है, यह सिर्फ व्यक्ति के साथ ही नहीं, बल्कि हमारे परिवारों, संगठनों और देश के साथ भी होता है। एक बार हमारा उद्देश्य और नैतिक मूल्य साफ हो जाएं, तो व्यक्तिगत फायदों और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच संघर्ष में एक नैतिक संतुलन आ जाता है। हम जागरूक हो जाते हैं कि हमें कब दृढ़ता से खड़े होना है। तब हम फौरन फायदा हासिल करने के लिए गलत फैसले के बजाय दूर के फायदे की सोचकर सही फैसले करने लगते हैं। समझदारी और परिपक्ता से बड़े मुद्दों के बारे में बेहतर समझ पैदा होती है।

"पढ़ों ऐसे कि जैसे तुम्हें सदा जीना है
जियों ऐसे कि जैसे तुम्हें कल ही दुनिया से चले जाना है।

हिन्दी-भाषा और उच्चारण : मेरे विचार

डॉ. सुनीता गौड़, असिस्टेन्ट प्रोफेसर शिक्षा विभाग

उच्चारण या वार्तालाप का अर्थ बोलने से है। अक्सर मैं उन विद्वानों को देखती हूँ जो कि बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ लिए हुए हैं, लेकिन बोलने के मामले में बिल्कुल कच्चे-से हैं। एक भाषा (हिन्दी) शिक्षिका होने के नाते मुझे यह सब नागवार सा लगता है कि जिस कार्य को हम अच्छी तरह से कर सकते हैं उसे हम रुचि लेकर सीखते क्यों नहीं? शुद्धोच्चारम का प्रभाव सुनने वाले पर भी सकारात्मक रुप से पड़ता है। यह वह कला है जो आपके व्यक्तित्व की गरिमा को ऊँचा उठाती है।

भाषा कौशल के चारों अंगों-सुनना-बोलना-पढ़ना और लिखना है, ये सभी कौशल संयोजित होकर व्यक्तित्व को ऊँचा उठाते हैं तब फिर आरम्भ में ही पड़ने वाले कौशल (उच्चारण) के साथ नाइंसाफी क्यों? शुद्धोच्चारण ही भाषा-ज्ञान का आवश्यक अङ्ग है तथा सम्प्रेषण का प्रमुख हिस्सा भी। बालक जैसे-2 बोलना आरम्भ करता जाता है, अनुकरण में अपनी मातृभाषा सीखता जाता है, लेकिन उस पर स्थानीय प्रभाव अवश्य रहता है। शुद्धोच्चारण से भाषा सम्प्रेष्ण की बोधगम्यता होती है। भाषा परिष्कृत व परिमार्जित व विशुद्ध होती जाती है, उसमें निखार आता जाता है।

किसी बात को सुनते-2 बालक एक वक्ता की तरह बोलने का प्रयत्न करने लगता है। अतः हम शिक्षकों को ऐसा प्रयास करते रहना चाहिए कि बालक शुद्धोच्चारण ही को

अक्सर कक्षा में शिक्षक द्वारा कोई नवीन शब्द के प्रयोग पर छात्र/छात्राएँ ऐसे चौक जाते हैं मानों उन्होंने ये शब्द कभी सुना ही ना हो। शिक्षकों को भी चाहिए कि शिक्षण कार्य करते समय अपने शब्द प्रयोग पर विशेष ध्यान दें। शिक्षक को भी वृहत् शब्द प्रयोग करते समय शुद्धोच्चारण का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि छात्र तो वही सीखेंगे जो हम उन्हें सिखाएंगे। इसमें व्यक्तिगत भिन्नता भी उपस्थित हो जाती है, लेकिन यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि हम एक शिक्षक का दर्जा पा चुके हैं खैर.....। हाँ तो मैं बात कर रही थी शुद्धोच्चारण की, उसके प्रयास की, प्रारम्भ में तो बालक तुतलाकर ही बोलता है... अशुद्ध उच्चारण करता है यहाँ शिक्षक को चाहिए कि वह धैर्य के साथ बच्चे से सहानुभूति रखते हुए उसके अपूर्ण प्रयास की सराहना करते हुए उसे शुद्ध बोलने का अधिकाधिक अवसर प्रदान करे। बालक के कहे गए शब्दों को ध्यान से सुने उसकी सराहना करे उसके अशुद्धोच्चारण की हँसी न उड़ाते हुए उसु शुद्धता की ओर अग्रसर करता रहे जब तक कि वह शुद्ध बोलना न सीख जाए।

मौखिक भाव प्रकाशन अर्थात् बालक को आत्माभिव्यक्ति का अवसर देने हेतु दो अपादान होने चाहिए

- अपने विचारों व भावों को मोखिक रूप से दूसरों के सम्मुख प्रकट करना।

- दूसरों के मौखिक विचारों को सुनकर उनका भाव अर्थपूर्ण ढंग से ग्रहण करना।

इन दोनों ही उपादानों की मौखिक अभिव्यक्ति आवश्यक है। प्रारम्भ में बालक मूर्त परिचित वस्तुओं के नाम, रंग आकार, कार्य इत्यादि पर बातचीत करना चाहिए जिससे उसकी झिझक दूर हो, फिर बाद में उससे छोटी-छोटी कविताएँ कहानियाँ चुटकुले कोई प्रसंग इत्यादि सुनाने को कहा जाए और फिर बाल गीत, प्रयाण ागीत को कक्षा में बालकों के सामने प्रस्तुत करें जैसे–

तू चल मैं आजा हूँ
चुपड़ी रोटी खाता हूँ
ठंडा पानी पीता हूँ
हरी डाल पर बैठा हूँ

प्रयाणगीत–

वीर तुम बढ़े चलो

धीरे तुम बढ़े चलो
सामने पहाड़ हो,
सिंह की दहाड़ हो... इत्यादि

मौखिक भाषा शिक्षण के उद्देश्यों में ये उद्देश्य हैं–

1. बालकों में स्वाभाविकता से बोलने की क्षमता उत्पन्न करना।

2. उनसे पूछे गए प्रश्नों के शुद्ध उत्तर देने की क्षमता उत्पन्न करना।

3. बालकों में शिक्षक से संकोच दूर करके व्यक्तित्व को विकसित करना।

4. शब्दों को समझकर उनका उचित समय तथा उचित स्थान पर प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना।

5. अपने दैनिक जीवन में बालक जो सुनते, पढ़ते व देखते हैं उसे शुद्ध, अर्थ-पूर्ण व तर्क संगत व्यक्ति करने की क्षमता का विकास करना।

इसके लिए हम अध्यापक गण को छात्रों के लिए अध्यापकीय प्रयास इस प्रकार होने चाहिए–

- स्वतन्त्र आत्म प्रकाशन का अवसर
- प्रश्नोत्तत्री प्रतियोगिता के द्वारा
- चित्रों का प्रयोग करके उन्हें बोलने हेतु अभिप्रेरित करना।
- कवित तथा गद्य-पाठ कराना।
- रेडियो या ग्रामोफोन या टेप का प्रयोग करके। कहानी कथन के द्वारा

अत्याक्षरी, वाद-विवाद या सामूहिक परिचर्चा इत्यादि कराकर।

अन्त में मैं यही कहूँगी कि–
हो उच्चारण शुद्ध सभी का,
निर्मल हो जन-भाषा
आज सभी जन की मृदु कोमल
ऐसी है अभिलाषा

राजा की सीखें (प्रेरणादायक कहानी)

सतेन्द्र कुमार, बी.एड., प्रथम वर्ष

बहुत समय पहले की बात है, सुदूर दक्षिण में प्रतापी राजा राज्य करता था, राजा के तीन पुत्र थे, एक दिन राजा के मन में विचार आया कि पुत्रों को कुछ ऐसी शिक्षा दी जाये कि समय आने पर वो राज्य का भार सम्भाल सके।

इसी विचार के साथ राजा ने अपने सभी पुत्रों को दरबार में बुलाया और कहा "पुत्रों, हमारे राज्य में नाशपाती का कोई वृक्ष नहीं है, मैं चाहता हूँ तुम सब चार-चार महीने के अन्तराल पर इस वृक्ष की तलाश में जाओ और पता लगाओ कि वो कैसा होता है? राजा की आज्ञा पाकर तीनों पुत्र बारी-बारी से गए और वापस लौट आये। सभी पुत्रों के लौट आने पर राजा ने पुनः सभी को दरबार में बुलाया और पेड़ के बारे में उनके अनुभव बताने को कहा। पहला पुत्र बुला, "पिताजी वह पेड़ तो बिल्कुल टेढ़ा-मेढ़ा और सूखा हुआ था।"

दूसरे पुत्र ने कहा, "नहीं-नहीं वो तो बिल्कुल हरा भरा था, लेकिन शायद उसमें कुछ कमी थी। क्योंकि उस पर एक भी फल नहीं लगा था"

फिर तीसरा पुत्र बोला, "भैया, लगता है आप दोनों गलत पेड़ देख आये क्योंकि मैंने सचमुच नाशपाती का पेड़ देखा, वो बहुत शानदार था और फलों से झुका हुआ था।"

और तीनों पुत्रों में विवाद होने लगा तभी राजा अपने सिंहासन से उठे और बोले, "पुत्रों, तम्हें आपस में विवाद नहीं रना चाहिए क्योंकि तुम तीनों ही वृक्ष का सही वर्णन कर रहे हो। मैंने जान

बूझकर तुम्हें अलग-अलग मौसम में वृक्ष खोजने भेजा था और जो मैं आपने देखा वो उस मौसम पर निर्भर था।

मैं चाहता हूँ कि इस अनुभव के आधार पर तुम तीन बातों को सदैव याद रखोगे–

पहली किसी 1 चीज के बारे में सही और पूर्ण जानकारी चाहिए तो उसे लम्बे समय तक देखने-परखने पर ही प्राप्त होगी फिर चाहे वो कोई विषम हो, वस्त हो या फिर कोई व्यक्ति ही क्यों न हो।

दूसरी हर मौसम एक सा नहीं होता, जिस प्रकार वृक्ष मौसम के अनुसार सूखता, हरा-भरा या फलों से लदा रहता है उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, अतः बुरे समय में व्यक्ति को अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए।

और तीसरी बात – अपनी बात को ही सही मानकर उस पर अड़े मत रहो, अपना दिमाग खोलो और दूसरों के विचारों को भी जानो। यह संसार ज्ञान से भरा पड़ा है, चाह कर भी तुम अकेले सारा ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते। अतः भ्रम की स्थिति में किसी ज्ञानी व्यक्ति से विचार विमर्श करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

समाज में नैतिकता का आधार

कुमारी कुशमाण्डे आर्या

सामाजिकता के आधार पर संसार में हम जिस ओर भी दृष्टि डालते हैं प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी कार्य में संलग्न दिखाई देता है। प्रातः काल किसान अपने हल बैल लेकर खेत जोतने चल देता है अध्यापक पढ़ाने, वकील अपने मुवक्लों की पैरवी करने, मजदूर मजदूरी करने, दुकानदार दुकानदारी करने नाई, कहार, कुम्हार, दर्जी, हलवाई आदि जिधर भी देखो सभी अपने-अपने कार्य में जुट जाते हैं। ये सभी आर्थिक कॉर्स (Economic....) धन कमाने की इच्छा से किये जाते हैं। समाज में कोई भी ऐसा नहीं है, जो कि आर्थिक प्रयत्न न करता हो।

"जग में सचर अचर जितने हैं सारे कर्म निरत हैं।"
धुन है एक न एक सभी को सबके निश्चित वृत है॥
जीवन भर आतप सह बसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी सुकर्म में कैसी तत्परता है॥"

एक तृण से लेकर विशाल काय जीव तक सव संलग्न है। अपने-अपने कार्यों में।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज के नियमों में बँधा हुआ है। प्राचीन काल में समाज के बहुत कठिन नियम थे। घर परिवार और समाज नियम और मर्यादाओं में बँधा हुआ था क्योंकि यह परम्परा ऋषि मुनियों की परम्पराओं और नियमों के आधार पर स्थित था। ज्यों ज्यों युग/समय बदलता गया वातावरण में परिवर्तन होता गया स्वार्थ परता बढ़ती गयी। ऐषणाये प्रबल होती गयी और समाज में ऋषियों की परम्परा दुर्बल होती गई। यहाँ तक कि समाज में धर्म जाति की परिभाषा तक को विकृत कर डाला और सही अर्थों का अनर्थ कर डाला। जैसे– धर्म की परिभाषा का अर्थ है मानव धर्म समाज में धर्म सबका एक है और जाति भी एक है। मानव धर्म मनुष्य का कर्म करना मनुष्यता का कर्म करना ही उसका धर्म है पशु का पशुता का कर्म करना ही धर्म है और जाति भी एक है जैसे स्त्री और पुरुष लेकिन आज हमारे समाज में जाति का सम्बन्ध बाह्मण, जाट, कश्यप, गुर्जर, लोधा, जाटव आदि से लगाया जाता है। समाज को याद रहे ऋषियों की परम्परा के प्रतिकूल चलने से न तो घर परिवार का न समाज का और न देश का और नहीं इस विश्व का कल्याण होगा।

वेद ईश्वरीय वाणी है वेद का कोई भी मन्त्र ऐसा नहीं जो कि सामूहिक कल्याण की भावना से ओत-प्रोत न हो जैसे-जैसे सर्वे भवन्तु भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु विरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग भवेत्॥

की भावना के बल वेद ही देता है। अतः यह अटल सत्य है कि मानव व समाज का कल्याण उसके नियम पालन में है क्योंकि सत्य तो सत्य ही होता है।

महारानी विक्टोरिया के समय दिल्ली दरबार लगाया था उसमें महर्षि दयानन्द सरसवती व उनके अनेक अनुयायी कर्णवास अनूपशहर (बुलन्दशहर) छलेसर (अलीगढ़) से भी उनके साथ गये थे। सामाजिक उत्थान के उद्देश्य को लेकर महर्षि दयानन्द ने सभी उच्च कोटि के नेताओं व अधिकारियों व कर्णधारों से स्पष्ट शब्दों में आह्वान किया था कि हमारा राष्ट्र का तभी उत्थान और कल्याण होगा जब कि हम सब मिलकर एक हो और हमारा राष्ट्र एक हो।

1. एक ही देव हो - ईश्वर
2. एक ही धर्म हो - मानव धर्म
3. एक ही धर्मग्रन्थ हो - वेद
4. एक ही मत हो - वेद
5. एक ही भाषा हो - देवनागरी
6. एक ही लक्ष्य हो - अनादि
7. एक ही संस्कृति हो - सदाचार

समाज के अन्तर्गत सरसैयद अहमद खाँ अरस्तु जैसे विचारक और अन्य-अन्य -अन्य समाज सुधारक इसके समर्थक थे परन्तु अन्य स्वार्थी लोगों ने इन महत्वपूर्ण विचारों को महत्व नहीं दिया। मेरे विचार से उन नये शिरे से समाज में बदलाव की आवश्यकता है। पुरानी और वेद पर आधारित मान्यता हो समाज का पुर्नगठन अपने मन माने ढंग से नहीं। वेद में सभी विषयों पर शिक्षा है। मनु स्मृति में भी पूर्णरुप से विश्लेषण किया गया है।

समाज का सुधार जब तक नहीं होगा जब तक मनुष्य के मन से "वाद" की भावना नहीं बदलेगी जैस-क्षेत्रवाद भाई भतीजावाद, भाषावाद, जातिवाद, मतवाद आदि। दूसरे रूढ़िवादी विचार जैसे मृत्यु सीतुः तथा अन्य अंधविश्वास समृद्ध है छुआछूत समाप्त हो और समाज में पास्परिक सम्बन्ध हो।

समाज शास्त्र पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं अपने अलग अलग विचारों का उल्लेख और परिभाषायें लिखी हैं परन्तु समाज क्या कर रहा है और क्या करना चाहिए। नैतिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जाये। शास्त्रविज्ञों को ज्ञात हो कि एक अणु से लेकर महान ईश्वर तक का ज्ञान वेदों में हैं यदि वेदों के अथाह समुद्र ज्ञान से एक बूँद भर ज्ञान समाज को मिल जाये तो उसी से विश्व का कल्याण हो जायेगा। सामाजिक प्राणी जाने की मैं कौन हूँ कहाँ से आया हूँ कहाँ जा रहा हूँ। कहाँ जाना चाहिए। प्राणी को जानना है कि आँख स्वयं नहीं देखती है। कान स्वयं नहीं सुनते हैं नाक स्वयं नहीं सूँघती है जिसके कारण में इन्द्रियाँ कार्य करती है उसको जानो।

जिस गंध में जिसका जलवा है जिसका जलवेगर कोई नहीं हर अफसर का जो अफसर है उसका अफसर कोई नहीं। हे करूणा निधान तुझसे महान धरती पर कोई नहीं। वही माता पिता वही स्वामि सुखा वस उसके बराबर कोई नहीं। मनुष्य का जीवन एक श्रेष्ठ जीवन है मनुष्य का जीवन ही ईश्वर को जानने के लिये हुआ है।

माता निर्माण भवति

भावना सिंह, बी.एड. प्रथम वर्ष

भारतवर्ष में ऐसे योग्य पुत्र तो बहुत हुए है, जिन्होंन अपने सत्कर्मों से माता-पिता का उद्धार करके 'पुत्र' नाम सार्थक किया हो, परन्तु ऐसी माता जो परम उत्तम ज्ञान का उपदेश देकर पुत्रों का भी संसार-सागर से उद्धार करदे, केवल "भदालसा" ही थी। उसने पुत्रों का ही नहीं अपना और अपने पति का भी उद्धार किया। मदालसा आदर्श विदुषी, आदर्शसती, आदर्श माता थी।

मदालसा गन्धर्वराज विश्वावसु की पुत्री थी। उनका विवाह धर्मात्मा राज ऋतुध्वज के साथ हुआ। भदालसा के गर्भ से प्रथम पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा ने उसका नाम विक्रान्त रखा। मदालसा वह नाम सुनकर हँसने लगी। इसके उपरान्त समयानुसार क्रमशः दो पुत्र और और हुए। उनके नाम सुबाहु और शत्रुभर्दन रखे।

इन नामों पर भी भदालसा को हँसी आई। इन तीनों पुत्रों को मदालसा ने आत्मज्ञान का उपदेश दिया। बड़े होन पर वे तीनों ममता शून्य और विरक्त हो गये। मदालसा के उपदेश का सारांश इस प्रकार है–

हे तात! तू तो शुद्ध आत्मा है, तेरा कोई नाम नहीं है। यह कल्पित नाम तो तुझे अभी मिला है। यह शरीर भी पाँच भूतों का बना है। न यह तेरा है, न तू इसका है। फिर किसलिए रो रहा है? तेर समपूर्ण इन्द्रियों में जो भाँति-भाँति के गुण-अवगुणों की कल्पना होती है, वे भी पञ्च भौतिक ही हैं। जैसे इस जगत में अत्यन्त दुर्बल भूत अन्य भूतों के सहयोग से वृद्धि को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार अन्न और जलआदि भौतिक पदार्थों को देने से पुरुष के पञ्च भौतिक शरीर की ही पुष्टि होती है। इससे तुझे शुद्ध आत्मा की न तो वृद्धि होती न हानि ही होती है।

हे तात्! तू अपने उस चोले तथा इस देह रूपी चोले के जीर्ण-शीर्ण होने पर मोह न करना। शुभाभुभ कर्मों के– के अनुसार यह देह प्राप्त हुआ है। तेरा यह चोला मद आदि से वँधा हुआ है। (तू तो सर्वथा इससे मुक्त है) कोई जीव पिता के रूप में प्रसिद्ध है, कोई पुत्र कहलाता है, किसी को माता और किसी को प्यारी स्त्री कहते हैं, कोई यह मेरा है कहकर अपनाया जाता है और कोई मेरा नहीं है इस से पराया माना जाता है। यह प्रकार यह भूत समुदाय के ही नाना रुप हैं। ऐसा तुझे मानना चाहिये। यद्यपि सब भोरा दुःख रुप हैं तथापि भूढ़ चित्त मानव दुःख दूर करने वाला तथा सुख प्राप्त करने वाला समझता है। किन्तु जो विद्वान है, जिनका चित्त मोह से आच्छन्न नहीं हुआ है, वे उन भोग-जनित सुखों को भी दुःख ही मानते हैं।

उपदेश का आत्मसात् कर तीनों पुत्र क्रमशः महान आत्मवेता बने और विरक्त भाव से इस नश्वर संसार को छोड़कर आत्मोसर्ग व ब्रह्मज्ञान के लिए रत हो गये।

तत्पश्चात रानी भदालसा के गर्भ से चौथा पुत्र उत्पन्न हुआ। जब राजा उसका नामकरण करने चले तो मदालसा मन्द-मन्द मुस्करा रहीं थी। राजा ने कहा मैं नाम रखता हूँ तो हँसती हो। अब इस पुत्र का नाम तुम्हीं रक्खो। मदालसा ने चौथे पुत्र का नाम "अर्लक" रख दिया। यह अद्भुत नाम सुनकर राजा हँस पड़े और बोले इसका क्या अर्थ है? मदालसा ने उत्तर दिया नाम से आत्मा का कोई सम्बन्ध नहीं है। संसार में व्यवहार चलाने के लिए कोई सा नाम कल्पना करके रख लिया जाता है। वह संज्ञा मात्र है। उसका कोई अर्थ नहीं है। आपने जो नाम रखो हैं वे भी निभर्थक ही हैं।

भदालसा ने उसे भी ब्रह्मज्ञान का उपदेश सुनाना आरम्भ किया। तब राजा ने रोककर कहा– देवी! इसे भी ज्ञान का उपदेश देकर मेरी वंश परम्परा का उच्छेद करने पर क्यों तुली हो। इसे प्रवृति मार्ग में लगाओ और उसके अनुकूल ही उद्देश्य दो। मदालसा ने पति की आज्ञा मान ली और अलर्क को बचपन में ही व्यवहार शास्त्र का विज्ञान, राजनीतिका पूर्ण ज्ञान, धर्म, अर्थ काम तीनों शास्त्रों में प्रवीण बना दिया। मदालसा ने अलर्क को विपत्ति में होने पर एक गुप्त उपदेश पत्र दिया जिसे पढ़कर संकट से छुटकारा मिल सके। उसमें लिखा था–

"सङ्ग (आसक्ति) का सब प्रकार से त्याग करना चाहिये, किन्तु यदि उसका त्याग न किया जा सके तो सत्पुरुषों का सङ्ग करना चाहिये। क्योंकि सतपुरुषों का सङ्ग ही औषधि है। कामना को सर्वथा छोड़ देना चाहिए, परन्तु यदि वह छोड़ी न जा सके तो मुमुक्षा (मोक्ष की इच्छा) के प्रति कामना करनी चाहिए, क्योंकि मुमुक्षा ही उस कामना को मिटाने की दवा है। यह उपदेश पत्र अगूँठी के छिद्र में रखकर मदालसाने अलर्क को दिया।

राज्य करने के उपररान्त राजा अलर्क ने उपदेश पढ़कर सोचा कि मुक्ति की इच्छा सत्संग से जागृत होगी। ऐसा विचार कर महात्मा दत्तात्रेय की शरण में पहुँचे और ममतारहित विशुद्ध आत्मज्ञान प्राप्त कर सदा के लिए कृतार्थ हुऐं।

माँ सन्तान के भविष्य निर्माण महत्वपूर्ण भूमिका निमाती हैं। माता मदालसा ने अपने चारों पुत्रों का मार्ग दर्शन किया उनके भविष्य का निर्माण किया। इसीलिये माँ सर्वप्रथम पूजनीय है वन्दनीय है।

– ओ3म् तत् सत् –

रामजी और वह बूढ़ा पागल

निकिता गोयल, बी.एड. द्वितीय वर्ष

यह कहानी एक ऐसे व्यक्ति का है जिसके एक आश्वासन ने भविष्य के लिए उम्मीद जगा दी।

रामजी एक शरीफ इंसान थे। कुछ साल पहले उन्होंने कपड़ों की एक फ्रेचाइजी खरीदी। तीन राज्यों में उस ब्रांड के कपड़े रामजी ही मुहैया कराते थे। पर शातिर दुकानदार रामजी से हजारों लाखों रुपये के कपड़े उधार लेते थे। कुछ वर्षों तक तो दुकानदार समय पर पैसे चुकाते रहे, फिर वे कर्ज चुकाने के समय रामजी से झूठ बोलते कि अभी सामान बिका नहीं। ऐसे में, रामजी का कर्ज बढ़कर पचास लाख रुपये तक पहुँच गया। लेनदारों ने उन्हें धमकाया।

एक दिन रामजी मायूस होकर एक पार्क में बैठे हुए थे कि पीछे से एक बुढ़े व्यक्ति ने उनके कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा, "इतने मायूस क्यों?" रामजी ने अपना दुखडा उसे सुनाया, तो उसने तुरन्त जेब से चैक-बुक निकाली, पचास लाख का चैक काटकर रामजी को दिया और कहा, "एक साल बाद ये पैसे मुझ पैसे मुझे वापस कर देना। चैक पर रतन टाटा के नाम से दस्तखत थे। रामजी हैरान थे। उन्हें यह सोचकर खुशी होने लगी कि इतने बड़े शख्स को भी उस पर विश्वास है। रामजी के अन्दर एक नयी ऊर्जा पैदा हो गयी। उन्होंने वह चैक अपने लॉकर में बद कर दिया और जी-तोड़ मेहनत करने गले। उनके सकारात्मक नजरिये ने फिर से एक बार स्थितियों को पलटना शुरु कर दिया। दुकानदार उन्हें पैसे लौटाने लगे। एक साल में न केवल पैसे वापस आ गए, बल्कि उन्होंने काफी पैसे जमा कर लिए। ठीक एक साल बाद वह एक बार फिर उसी पार्क में गए। दोबारा किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा और पूछा, "क्या बात है, आज बहुत खुश हो?"

रामजी पीछे मुडे, तो देखा, एक नर्से पीछे से दौड़ती हुई आ रही है। उस नर्स ने उस व्यक्ति को पकड़ते हुए कहा, "माफ कीजिएगा, यह थोड़ा पागल है और रतन टाटा के नाम से लोगों को चैक देता है।" रामजी मुस्कुराए और घर लौट आए।

शिक्षा – सोए हुए इंसान को जगाने के लिए कभी-कभी आश्वासन भी काफी होता है।

भिखारी के ख्वाब और उसके कर्म

ज्योति शर्मा, बी.एड., द्वितीय वर्ष

एक स्वप्नजीवी भिक्षारी की कहानी, जो सोने की अपनी बुरी आदत से मजबूर था।

एक भिक्षारी अमीर बनना चाहता थ पर काम में उसका मन नहीं लगता था। वह दिन-रात सोता और अमीर बनने के ख्बाब देखा करता था एक दिन किसी ने उसे एक लीटर दूध दे दिया। घर लौटकर वह दूध को एक भगौने में डालकर उबालने लगा। दूध के उबलने में देर थी। इसलिए वह लेट (सो) गया। कुछ ही मिनटों में उसने देखा कि दूध उबल गया और उसने थोड़ा सा दही डालकर जमा दिया सपने में अगले दिन उसने दही से मक्खन निकाल दिया और फिर मक्खन से घी। बाजार में उसके घी की बहुत तारीफ हुई और वह अच्छे दामों पर बिका। उसने उन पैसों से एक मुर्गी खरीदी। मुर्गी ने अण्डे दिये। अब अण्डों से चूजे निकले और उसके पूरे घर में भर गए। वे चूजे बड़े होकर मुर्गी बन गए। फिर उन मुर्गियों ने अण्डे दिए और इस बार उसने बुछ अण्डों को बाजार में बेच दिया। इस तरह उसने अपना पोल्ट्री फार्म बना लिया। उसके पास बहुत पैसा इकट्ठा हो गया। फिर उसने गाय खरीद ली। धीरे-धीरे उसका अपना तबेला बन गया जिसमें कई गाय और भैंसे थी। फिर वह हीरे-जवाहरात का व्यापार करने लगा। राजा भी उसी से गहने खरीदने गले। उसने आलीशान बंगला बनाया और राज्य की एक खूबसूरत लड़की से उसकी शादी होग गयी। फिर उसने देखा कि राजा उसके घर दावत पर आने वाले है और वह कई तरह के पकवान बनवा रहा है। तभी उसका बेटा वहाँ आया और सभी पतीले गिरा गया। सपने में ही भिखारी ने देखाकि उसे गुस्सा

आया और उसने एक लकड़ी की छड़ी लेकर जोर से बेटे की तरफ फेंकी। तभी उसे एक बर्तन के गिरने की आवाज सुनायी दी तो वह एकाएक नींद से उठ गया। उसने देखा कि उसका दूध कब का जल चुका है। और भगौना उसकी फेंकी छडी से नीचे गिर गया। वह कुछ देर तक उसे टकरा की लगातार देखता रहा और फिर सो गया।

शिक्षा – सपनों को साकार करने के लिए सही दिशा में कर्म करने चाहिए।

जमीर

सुनीता कुमारी, बी.एड., द्वितीय वर्ष

पटाखे की दुकान से दूर हाथों में
कुछ सिक्के गिनते मैंने उसे देखा
एक गरीब बच्चे की आँखों में
मैंने दिवाली को मरते देखा
भी चाह उसे भी नये कपड़े पहनने की
पर उन्हीं पुराने कपड़ों को मैंने उसे साफ करते देखा
हम करते है सदा अपने गुणों की नुमाईश
पर मैंने उसे मन ही मन घूरते देखा
मैंन उससे पूछा क्या चाहिए "बच्चे" तुझे
उसे चुप-चाप 'ना' में सिर हिलाते देखा
थी वह उम्र बहुत ही छोटी अभी
पर उसके अन्दर मैंने जमीर को पुलते देखा
रात को सारे शहर के पीपों की लौ में
मैंने उसके हस्ते मगर बेबस चेहरे को देखा
हम तो जिन्दा हैं अभी शान से यहाँ
पर उसे जीते जी गान से मरते देखा
कोई मनाता है जश्न और कोई रहता तरस्ता
मैंने वो देखा जो सबमें देखा भी नहीं देखा
लोग कहते हैं त्यौहार होते हैं
जिन्दगी में खुशियों के लिए
तो क्यों मैंने उसे मन ही मन घूरते
और तरसते देखा क्यों क्यों क्यां?

क्यों फैल होते हैं छात्र

आर.सी. गौड़, बी.एड. द्वितीय वर्ष

जब हम या हमारे आस-पास में कोई फेल हो जाता है तो सभी उसकी हँसी उड़ाते हैं।

माता पिता डाँटते बात बात पर ताने मारते हैं। भाई बहन बूरी नजरों से देखते हैं। लेकिन इन सभी लोगों में से किसी एक को भी हमारे बारे में सोचने तक का समय नहीं मिल पाता है। अरे इन्हें जरा सोचना तो चाहिए क्यों फैल हो जाते हैं। बेचारे छात्र?

अब हम बताते हैं कि क्यों फेल हो जाते हैं बेचारे छात्र? इसका मुख्य कारण समय का अभाव है एक वर्ष में 365 दिन होते हैं इनमें से एक दिन निकाल कर चले तो 364 दिन शेष बचते हैं इनमें से हम प्रत्येक रात के 12 घण्टे निकाल दे तो 182 दिन शेष बचते हैं हम प्रतिदिन कम से कम 5 घण्टे नहाने-धाने खाने-पीने आदि में लगा देते हैं जो कुल मिलाकर 30 दिन हो जाते हैं अब 152 दिन बचे अब 152 में से वर्ष भर के 52 रविवार निकाल दें तो 100 दिन शेष बचे इनमें से 24 दिन त्यौहारों के निकाल देने पर हमारे 76 दिन शेष बचें। अब इनमें से दो महीने अर्थात 61 दिन गर्मियों की छुट्टी के निकाल दे तो 14 शेष बचते हैं। लेकिन इन 14 दिनों में से हमारे पास 365 दिनों में से निकाला गया एक दिन शेष बचा लेकिन अफसोस और खेद के साथि कहना पड़ रहा है कि इस दिन भी हमारा परीक्षा फल घोषित होता है और पूरा वर्ष समाप्त हो जाता है।।

मन का सूरज बुझने ना दो

कु. अल्का, बी.एड., द्वितीय वर्ष

चाहे आसमां का सूरज बुझ जाये
पर मन का सूरज बुझने ना दो
पथरीले रास्तों से कदम लहुलुहान हो जाये ?
पर बढ़ते कदमों को रूकने ना दो

भविष्य का खाका वर्तमान में खींच लो
और अपने भूतकाल से थोड़ा सा सीख लो
सफलता पाने का यह मंत्र कुछ अनोखा है
चलते हुए गिर जाओ तो उठो और फिर चलो

चाहें सारे जमाने का दामन छूट जाये
पर उम्मीदों का दामन छूटने ना दो
चाहे आसमां का सूरज बुझ जाये,
पर मन का सूरज बुझने ना दो

एक बार अपने अन्दर के रेडिया को सुनो,
एक-एक करके अपनी खाबियों को चुनो,
आशाओं धागे को जोड़-जोड़ कर
जीवन में सफलता की चादर को बुनो

चाहे मन्नत का धागा टूट जाये
पर विश्वास का धागा टूटने ना दो
चाहे आसमां का सूरज बुझ जाये
पर मन का सूरज बुझने ना दो

सुना है इस जीवन का कोई भरोसा नहीं,
कुछ भी हो पर खुद पर भरोसा करो,
चाहे यह अंतराल कितना भी छोटा हो
पर तुम उठो और कोई बड़ा चमत्कार करो

अपनी मेहनत और ईमानदारी के वदौलत
सच्चाई को झूठ के सामने कभी झुकने ना दो
चाहे आसमां का सूरज बुझ जाये
पर मन का सूरज बुझने ना दो।

मेरी नजर में शिक्षा

कु.संजय, बी.एड., प्रथम वर्ष

- शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में अ प्रत्यय लगाने से बना हैं
- शिक्षा एक सीखने-सिखाने की क्रिया है।
- शिक्षा मार्गदर्शन करने की क्रिया है।
- शिक्षा व्यवहार में परिवर्तन लाने की क्रिया है।
- शिक्षा, नियंत्रित वातावरण में मानव विकास की क्रिया हैं
- शिक्षा मानव व्यवहार का परिशोधन है।
- लॉजे ने कहा है, "जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है।"
- शिक्षा ही मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ बनाती है।
- शिक्षा सही-गलत की पहचान कराती है।
- शिक्षा मनुष्य को उद्देश्यों तक पहुंचाती है।
- शिक्षा किसी भी स्थान पर प्राप्त की जा सकती है।
- शिक्षा लक्ष्य तक पहुंचाने की क्रिया हैं
- स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण ही शिक्षा है।
- यहाँ यह कहा जा सकता है कि बिना शिक्षा के मनुष्य (ख्याति) कुछ भी नहीं कर सकता है।

समय

रिवानी गोयल,

एक गिलहरी रोज अपने काम पर समय से आती थी। और अपना काम पूरी मेहनत और ईमानदारी से करती थी। गिलहरी जरूरत से ज्यादा काम करके भी कब खुश थी क्योंकि उसके मालिक जंगल के राजा शेर ने उसे दस बोरी अखरोट देने का वादा कर रखा था। जैसे ही उसे याद आता कि शेर उसे 10 बोरी अखरोट देगा, गिलहरी फिर काम पर लग जाती। गिलहरी जब दूसरी गिलहरियों को खेलते देखती थी, तो उसका भी इच्छा होती थी कि में भी खेलूँ पर उसे अखरोट याद आ जाते और वह फिर काम पर लग जाती। ऐसा नहीं था के शेर उसे अखरोट नहीं देना चाहता था। शेर बहुत ईमानदार था। ऐसे ही समय बीतता रहा एक दिन ऐसा भी दिन आया जब जंगल के राजा शेर ने गिलहरी को 10 बोरी अखरोट देकर आजाद कर दिय। गिलहरी अखरोट के पास बैठकर सोचने लगी कि अब अखरोट मेरे किस काम के पेरी जिन्दगी करते करते दाँत तो घिस गए। इन्हें खाऊँगी कैसे।

दोस्तों यह कहानी आज हमारे जीवन की हकीकत बन चुकी है। इंसान अपनी इच्छाओं का तयाग करता है पूरी जिंदगी नौकरी, व्यापार और धन कमाने में बिता देता है। 60 वर्ष की उम्र में जब वो सेवा निवृत होता है, तो उसे उसका जो फण्ड मिलता है या बैंक बैलेंस होता है वह उसे भोगने की क्षमता खो चुका होता है। उस समय पीढ़ी बदल चुकी होती है। परिवार को चलाने वाले बच्चे कभी यह बात समझ सकेंगे। इस बैंक बैलेंस के लिए कितनी इच्छाऐं मारी होंगी? कितनी तकलीफें हिमली होंगी? कितने सपने अधुरे रहे होंगे? क्या फायदा ऐसे बैंक बैलेंस का जिसको हम खुद उपयोग न कर सकें।

बेटियों के लिए

कु.अंजली, बी.एड. प्रथम वर्ष

1. खिलती हुई कलियाँ हैं बेटियाँ
   माँ बाप का दर्द समझती हैं बेटियाँ
   घर को रौशन करती हैं बेटियाँ
   बेटे आज हैं तो आने वाला कल हैं बेटियाँ
2. बेटी भार नहीं आधार हैं
   जीवन है उसका अधिकार
   शिखा है उसका हथयार
   बढाओ कदम करो स्वीकार
   जरुरी नहीं रोशनी चिरागों से ही हो
   घर में उजाला करती हैं बेटियाँ
3. एक मीठी सी मुस्कान है बेटी
   यह सच है कि मेहमान है बेटी
   उस घर की पहचान बनने चली
   जिस घर से अजान है बेटी
4. मातृशक्ति यदि नहीं बचती तो
   बाकी यहाँ रहेगा कौन है
   प्रसव वेदना लालन पालन
   सब दुख दर्द सहेगा कौन
   मानव हो तो दानवता को त्यागो
   फिर
   यह उत्तर दो इस नन्हीं सी
   जान के दुश्मन को इंसान कहेगा कौन

बिटिया

कु. अजंली, बी.एड. प्रथम वर्ष

पग-पग संघर्ष करती है बेटियाँ
अजन्मी ही आज मरती हैं बेटियाँ
कुछ पाने की चाह में फूल सी खिली
अजन्मी खुशबू बिखेरती हैं बेटियाँ
बेटों से बढ़कर होती हैं बेटियाँ
चाँदनी-सी बढ़कर होती हैं बेटियाँ

इसी विरोधाभास में पलती है बेटियाँ
चुनौतियों के आगे न कभी हारने वाली
वक्त के हर साँचे में ढलती है बेटियाँ
पत्नी से माता बनी, भाई की बनी बहन सभी
रुपों में दर्द को, बहती हैं बेटियाँ
विपरीत हालातों से जीतकर भी खुद
दहेज की जवाला में जलती हैं बुटियाँ
पराये घर की रोशनी होकर भी
उम्र भरी सपने-सी विचारती हैं बेटियाँ
जिन्दगी भर-संघर्ष जीवन बेटियों का

ताजमहल

कु.साधना, बी.एड. प्रथम वर्ष

1. राख में आग लगाने से क्या होगा?
   दिन में दीप जलाने से कया होगा?
   मुमताज मर गई शाहजहाँ।
   अब ताज से उठाने से कया होगा?
2. आँख जिसे माने वो मुमताज महल है?
   दिल जहाँ रम जाए वो राजमहल हैं?
   प्यार की खुशियाँ है कुतुब से भी ऊँची
   प्रति से सींचा हर आँसू ताजमहल है।
3. हर नजर में एक कशिश होती है
   हर दिल की एक ख्वाहिश होती है
   मुमकिन नहीं हर एक के लिए ताजमहल बनाना
   पर हर दिल में एक मुमताज जरूर रहती है।
4. जब शहनशाह भी हो,
   इश्क भी हो दौलत भी हो,
   तब कहीं जाके कोई ताजमहल बनता है।

माँ

दिव्या बंसल, बी.एड. द्वितीया वर्ष

माँ एक ऐसा शब्द है जो कि लिखने तथा देखने में बहुत छोटा प्रतीत होता है। किन्तु इस छोटे से शब्द ही व्याख्या करना सरल नहीं है। माँ वह व्यार तथा दुलार है जो हमारे विचलित होने पर हमें रास्ता दिखाता है माँ की गोद एक ऐसी सेज है जिसमें हम अपने सभी कष्टों तथा परेशानियों को भूल जाते हैं। माँ के आँचल की छाया में वह शीलता होती है जो हमें इस संसार की कठोर धूप से बचाती है। माँ परमात्मा की वह महानतम क्रान्ति है, जिसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती है। स्वयं परमात्मा को इस पृथ्वी पर अवतरित होने के लिए माँ का सहारा लेना पड़ा था। कहा जाता है कि "भगवान श्री कृष्ण को माखन इसलिए पसन्द था क्योंकि माखन का पहला शब्द माँ था।" हमें कभी भी अपनी माँ का अनादर नहीं करना चाहिए क्योंकि यदि हम बार-बार जन्म लें तो भी माँ का कर्ज नहीं चुका सकते।

कितना उन्नत और कीर्तिमान

ज्योति चौहान, बी.एड. प्रथम वर्ष

मेरा डी.पी.वी.एस. कॉलेज महान
कितनी पावन वसुधा इसकी, कितना उज्जवल आदर्शवान।
यह विद्या का शुणि मंदिर, यह विद्या का अजस्त स्त्रोत।
निज कर्म भवि, निज कर्म शक्ति, जिसके कण-2 में ओत प्रोत।
कितने वर्षों से छात्रों ने पाया है, इसका अनुपम दान
कितना उन्नत और कीर्तिमान, मेरा डी.पी.वी.एस.कॉलेज महान
कितने विषयों पर देते, गुरु लोग उपदेश यहाँ,
जिनकी छाया में शिष्य वर्ग, हटाते जीवन का कलेश यहाँ,
भारत में अलोकित रहे ये, इसकी महिमा का गुणगान
कितना उन्नत और कीर्तिमान, मेरा डी.पी.वी.एस.?
कॉलेज महान।

आत्मविश्वास

कु.साधना, बी.एड. प्रथम वर्ष

गरीबी को अपनी कमजोरी बताकर
तुम खुद गरीब बन जाओगे
नहीं पाओगे कोई सम्मान
केवल गरीब बनकर रह जाओगे
जिस दिन, दुर्भाग्य की काली छाया की
अपने आत्म विश्वास से, समाप्त कर जाओगे
उस दिन, तुम वास्तव में, सबसे अमीर बन जाओगे
होगा तुम्हारा नाम भी
होगा तुम्हारा सम्मान भी
और तब
दुनिया में सबसे खुशनसीब कहलाओगे।

सभी महिलाओं/बेटियों को समर्पित

रिंकी, बी.एड., प्रथम वर्ष

बेटी से माँ का सफर
बेफिक्री से फिकट का सफर
पहले जो आँचल में छुप जाया करती है।
आज किसी को आँचल में छुपा लेती हैं।
पहले जो ऊँगली पे गरम लगने से घर को सर पे उठाया करती थी।
आज हाथ जल जाने पर भी रवाना बनाया करती हैं।
पहले जो छोटी-छोटी बातों पे रो जाया
करती थी।
आज को बड़ी-बड़ी बातों को मन में छुपाया करती हैं।
पहले भाई, दोस्तों से लड़ लिया करती थी।
आज उनसे बात करने को भी तरस जाती हैं।
माँ, माँ कह कर पूरे घर में उछला करती थी।
आज माँ सुन के धीरे से मुस्कुराया करती हैं।
10 बजे उठने पर भी जल्दी उठ जाना होता था।
आज 6 बजे उठने पर भी लेट हो जाया करती हैं।
खुद के शौक पूरे करते-करते ही साल गुजर जाता था।
आज खुद के लिए एक कपड़ा लेने को तरस जाया करती हैं।
पूरे दिन फ्री होके भी बिजी बताया करती थी।
आज पूरे दिन काम करके भी कामचोर कहलाया करती हैं।
एक एग्जाम के लिए पूरे साल पढ़ा करती थी।
आज हर दिन बिना तैयारी के एग्जाम करती हैं।
ना जाने कब किसी की बेटी किसी की माँ बन गई।
कब बेटी से माँ के सफर में तब्दील हो गई...
बेटी है तो कल है
बहुत प्यारी होती है बेटीयाँ, न जाने लोग क्यों बोझ समझते हैं।

प्रेरक प्रसंग

सत्यपाल सिंह लोधी, प्रवक्ता, हिन्दी विभाग

तक्षशिला के राजा आंभीक के आमंत्रण पर सिकंदर कुछ दिनों के लिए तक्षशिला में ठहर गया। एक दिन सायंकाल वह एक गाँव की तरफ निकल गया। वहाँ एक पंचायत हो रही थी। सिकन्दर पंचों का न्याय देखने ठहर गया। पंचायत की कार्रवाही प्रारंभ हुई। वादी बोला—"मैंने प्रतिवादी से भरा घड़ा मिला। मैंने केवल जमीन खरीदी थी, उसके नीचे की संपत्ति नहीं। इन मुद्राओं पर प्रतिवादी का ही अधिकार है, मेरा नहीं; किन्तु वह मुहरें लेने से इनकार कर रहा है। कृपा कर न्याय किया जाए और प्रतिवादी से स्वर्णमुद्राएँ लेने को कहा जाए।"

आज्ञा पाकर प्रतिवादी बोला —"मैंने जमीन बेच दी। उसमें उगने वाली फसल की तरह उसकी अंतरस्थ सम्पत्ति से मेरा कोई सरोकार नहीं। उन मुहरों पर मेरा कोई अधिकार नहीं है। वादी से कहा जाए कि वह सरा स्वर्ण अपने पास रखे।" कोई भी पक्ष उन स्वर्ण मुद्राओं को लेने को तैयार न था। पंच बड़े असमंजस में पड़े। बड़ी देर विचार-विमर्श के बाद सरपंच ने फैसला दिया। सरपंच बोला—"वादी के विवाह-योग्य लड़की और प्रतिवादी के विवाह योग्य लड़का है। वादी अपनी लड़की का विवाह प्रतिवादी के लड़के के साथ कर दे और वह सारा स्वर्ण वर-कन्या को उनके जीवन-विकास के लिए प्रदान कर दे।" वादी-प्रतिवादी ने पंचायत का फैसला मान लिया और लड़की-लड़के का विवाह कर सारा स्वर्ण उनको दे दिया। सिकंदर चुपचाप यह सारी कार्यवाही देखता रहा। भारतीयों का त्यागपूर्ण जीवन देखकर उसकी आत्मा कह उठी— एक यह गरीब ग्रामीण जन है, जो पाए हुए स्वर्ण को अपने पास नहीं रखना चाहते और एक तू है, जो राजा होकर भी दूसरों की धन-दौलत छीनने के लिए रक्तपात करता फिर रहा हैं धिक्कार है तेरे लोभ और तेरी तृष्णा को।

नोटः— मनुष्य को अधिक लालच नहीं करना चाहिए। लालच मनुष्य को विनाश की ओर ले जाता है।

कविता

नीरज कुमार, बी.एड. प्रथम

पेड़ों की छाया में ही तो
पंक्षियों का रैनबसेरा है।
इनके होने से हम हैं,
और कहते ही जीवन मेरा है॥

गौर से देखो जरा इन्हें,
ये भी तो कुछ कहते हैं।
फल, फूल, हवा, सुगन्ध,
ये सब देते रहते हैं॥

मीते-मीते फल इनके,
बच्चों को कितना भाते हैं।
इनका ही तो रस लेकर
भँवरे मस्त मगन हो जाते हैं॥

पत्तियाँ कभी ताजी, हरी तो कभी,
सुखकर सुनहरी हो जाती है।
इन्हें देखकर कोयल भी तो,
देखो नगमें कैसे गाती है॥

देखकर इन्हें हर एक का दिल,
ऐसे खुश हो जाता है।
जैसे शीतलहर का झोंका।
खुशियों के रंग लाता है।
इनको अगर जो काट गिराया,
कैसे मिलेगी तुमको छाया।
दर्द इन्हें भी होता है,
चोट इन्हें भी लगती है॥

इनको जो तुम लगाओगे,
खुशहाली जीवन पाओगे।
इनको जो काट गिराओगे,
तुम भी तो न बच पाओगे॥

इनसे हम है हम से ये हैं,
इनसे ही है सांसे अपनी।
इनके बिना न जीवन अपना,
इनकी रक्षा काम है अपना।

हर एक जो पेड़ लगाएगा
वो नेक काम कर जाएगा
जो समझेगा दर्द को इनके
इन्सान वही कहलाएगा।

मेरा भारत महान

निधि गौर,

एक बार एक अमेरिकन ने हमसे पूछ लिया,
कि भाई, तुम्हारा देश महान कैसे हो गया,
इनसे तो कोई महत्वपूर्ण अविष्कार भी नहीं किया।
हम तिलमिलाये, थोड़ा हड़बड़ाये और बोले
तो सुनो ऐ अमेरिकन,
दुनिया ही तो पहली फायर प्रूफ लेडी 'होलिका'
हमने की तो बनाई थी, जिसको आग भी नहीं
छू पाई थी।
दुनिया का पहला समाचार-पत्र नारद समाचार पत्र
हमने ही तो बनाया था।
जब चाहे विष्णु जी को ई मेल किया।
www.narayan.com और इधर की बात को
उधर और उधर की बात को इधर।
क्या तुमने कभी की है, इतनी स्पीड न्यूज।
यह सुनकर वह अमेरिकन थोड़ा लड़खड़ाया
और कुछ संभलकर बड़बड़ाया।
हमारे देश ने इतनी तरक्की कर ली है कि
हार्ट की बाईपास सर्जरी और दिमाग की
न्यूरो सर्जरी करा देता है। तुम्हारे देश ने
कोई सर्जरी की हो तो बजाओ?
नहीं तो मेरा दिमाग मत खाओ।
यह सुनकर हम घबराये,
भला दूसरे देश की बढ़ाई कैसे सुन पाये।
हम बोले! सुन ओ अमेरिकन
जब गणेश जी ने अपनी गर्दन को
गँवाया था तो गर्दन जोड़ने क्या
तुम्हारा भूत आया था।
यु सुनकर वह अमेरिकन भागता
नजर आया,
आगे न उसकी चल की जबान,
और समझ गया "मेरा भारत महान"
"मेरा भारत महान"

खुश रहने के सार्थक सुझाव

निधि गौर,

ऐसे करे दिन का शुभारम्भ– एक अंग्रेजी कहावत है कि "वैल बिगिन इस हाफ इन" अर्थात यदि शुरुआत अच्छी हो जाये तो समझें कि आधा कार्य पूरा हो गया। सुबह बिस्तर के बाहर कदम रखने के पूर्व अपने मन में यह विचार करें कि आज का दिन मेरी जिन्दगी का सर्वोत्तम दिन साबित होने वाला है। यकीन मानें इस तरह के सकारात्मक चिन्तन से आप दिन की चुनौतियों से लड़ने की ऊर्जा अपने अन्दर संचित कर लेंगी।

जो बात गया सो बीत गया– बीती हुई बात पर मगजमारी

कर अपनी ऊर्जा व्यर्थ में न गांवाये। किसी ने यदि कोई गलती ही है तो उसे क्षमा कर दे। याद रखें कि क्षमा कर देने से आपके मन को बहुत शांति मिलनती है। आपकी जो ऊर्जा उस शख्स की गलतियों पर रूष्ट होने में होती है वही ऊर्जा रचनात्मक कार्य में रखेगी।

वर्तमान में रहना सीखें– "जिन्दगी के सफर में गुजर जाते हैं जो मुकाम वो फिर नहीं आते, यह बात अतीत के संबंध में सौ फीसदी सच है। वही भविष्य भी अनदेखा-अनजाना है इसलिए भूत और भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करें क्योंकि वर्तमान की नींव पर ही आपका भविष्य आश्रित है।

न कहने की भी आदत डाले– आपकी सबसे पहली जुम्मेदारी खुद के प्रति है? इसलिए जब आपको यह महसूस हो कि आप अपनी व्यवस्तता या किसी अन्य कारण के चलते किसी दूसरे के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकते तब विनम्रता पूर्वक उस शख्स से न कहने में ही आपकी भलाई है।

जिंदगी एक अमूल्य तोहफा– कुदरत ने जिंदगी बख्श कर आपको एक अमूल्य तोहफा भेंट किया है इसलिये इस जीवन को एक वरदान समझें। इसके हर रंग से रूबरू हों याद रखें जिंदगी एक सफर है मंजिल नहीं।

निःस्वार्थ करना अपना धर्म समझें– सचमुच निःस्वार्थ सेवा करने से आपको जो आत्मिक शांति मिलेगी उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। अपने मन में यह संकल्प ले कि आज के दिन आपको किसी एक दुखी या असहाय व्यक्ति की निःस्वार्थ मदद करनी है तो मदद करने के बाद आपको एक अपरिभाषित आत्म-संतुष्टि मिलती है।

काम को खेल की तरह रोमांचक बनायें– जब आप अपने किसी पसन्दीदा कार्य में पूरी लगन के साथ डूब जाते हैं और इस प्रक्रिया के दौरान कर्त्ता और कार्य के बीच का भेद समाप्त हो जाता है। तब काम भी आपके लिए खेल की तरह रोचक व रोमाचक बन जाता है।

आत्म-सुझाव दे– रात में सोने से पूर्व ईश्वर को धन्यवाद देना न भूलें। सोचें उस अद्रश्य शक्ति की कृपा से आपका आज का दिन अच्छी तरह बीत गया। मन में यह विश्वास रखें कि उस अद्रश्य शक्ति की कृपा से आपका आगामी कल भी एक सुहानी सुबह लेकर आयेगा। यकीन मानें कि इस प्रकार रात में सोने से पूर्व सकारात्मक आत्म-सुझाव देने से आपके व्यक्तित्व में जादुई परिवर्तन सम्भव हैं

माँ

शालिनी शर्मा, बी.ए. तृतीय वर्ष

माँ वह शब्द है जिसका सम्मान
हम सब तो क्या उसका सम्मान तो
भगवान भी करते हैं। माँ के पैरों में
स्वर्ग का वास है ममता वह चीज
होती है जो पत्थर को भी पिघला
सकती है। हम सबको अपनी माँ
का आदर करना चाहिए। आए हम अपनी
माँ को ठुकरा दें तो हमें भगवान
भी माफ नहीं कर सकते माँ हमे
हर अच्छी बातें सिखाती हैं। हर
बच्चे को माँ की जरूरत होती है।
माँ हमें हर बुराई से बचाती है
अगर माँ का साथ हमारे साथ बना
रहे तो हम हर ऊँची से ऊँची
मंजिल को छू सकते हैं। माँ बच्चे
को हर वो खुशी देती हूँ
जिसकी बच्चों को जरुरत होती है
माँ ममता का भण्डार होती है।

जीवंतभाषा - संस्कृत

त्रिमुनि पाणिनि ,कात्यायन और पतंजलि द्वारा संस्कारित और संवर्धित संस्कृतभाषा विश्व की एकमात्रा ऐसी भाषा है जिसका नामकरण उसके बोलने वालों के नाम पर नही हुआ है। संस्कृत पद का अर्थ शुद्ध, परिष्कृत और परिमार्जित इत्यादि होता है। इस प्रकार संस्कृतभाषा से तात्पर्य एक ऐसी भाषा से है जो शुद्ध हो, परिष्कृत हो, दोषरहित और गुणयुक्त हो। व्यापक दृष्टिकोण से देखने पर सही तरीके से किया गया संसार का प्रत्येक कार्य संस्कृत है। इसे देवभाषा, देववाणी, सुरभाषा और सुरवाणी इत्यादि नामों से जाना जाता है। विश्व के सर्वप्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद की भाषा होने के कारण इसे संसार की प्राचीनतम भाषा माना जाता है। संसार की अनेकों भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृतभाषा से मानी गई है। हिंदी गुजराती मराठी इत्यादि भारतीय भाषाएँ संस्कृत से ही उत्पन्न है। हिंदी में प्रयुक्त सभी तत्सम शब्द संस्कृत के ही हैं नवीन वस्तुओं के ज्ञान हेतु हिंदी के शब्दों की आवश्यकता पूर्ति की सामर्थ्य संस्कृतभाषा में ही है जिसका उदाहरण computer के लिए संगणक शब्द का प्रयोग है संस्कृत की महत्वपूर्ण विशेषता इसमें जैसा बोला जाता है। वैसा ही सुना जाता है जैसा सुना जाता वैसा ही लिखा जाता है भारतीय मनीषियों के अनुसार सृष्टि उत्पत्ति के प्रारंभ में ही परम पिता परमात्मा ने मानव के वाग्व्यवहार हेतु संस्कृत भाषा की रचना की विश्व की सभी भाषाओ में संस्कृत की दिव्यता और मधुरता का डिंडिमनाद करता हुआ निम्न श्लोक प्रसिद्द है–

भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती।
संस्कृतनाम देवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः ।।

संस्कृत में वेद, पुराण, उपनिषद, इतिहास, भूगोल, दर्शन, आरण्यक, रामायण, महाभारत, सामाजिकविज्ञान, नीतिशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, गणितशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, खगोलशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, विमानशास्त्र, रसायनशास्त्र और भौतिकशास्त्र इत्यादि मानव जीवनोपयोगी ज्ञान का समृद्ध भंडार निहित है। सृष्टि के प्रारंभिक समय में ईश्वर की प्रेरणा से ऋषियों के द्वारा प्रदत्त वेद–ज्ञान हमें इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट का परिहार करने का अलौकिक उपाय बतलाता हैद्य संसार के आत्मा, परमात्मा, जीवात्मा, ब्रह्म और प्राण इत्यादि विषयक रहस्यमय प्रश्नों का उत्तर हमारे ऋषियों के द्वारा उपनिषद ग्रंथो में "अहं ब्रह्मास्मि" "तत्त्वमसि" इत्यादि वाक्यों द्वारा हजारों साल पूर्व ही दिया जा चुका है।

त्रेतायुग में तमसा के तीर पर घूमते हुए व्याध द्वारा मारे गए क्रौंच पक्षी के साथी के करुण क्रंदन को सुनकर आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के ह्रदय में उत्पन्न शोक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के पतितपावन जीवनचरित का आश्रय लेकर संस्कृतभाषा में श्लोक रूप में परिणत होकर चिरकाल से 'जब तक पृथ्वी पर नदियाँ और पर्वत रहेंगे तब तक रामायण की कथा का संसार में प्रचार–प्रसार होता रहेगा' इस शंखनाद को कर रहा है–

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।
तावत् रामायणीकथा लोके प्रचरिष्यति ।।

द्वापरयुग में कौरव और पांडवो के युद्ध को वर्णित करता हुआ, महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास द्वारा रचित शतसाहस्रीसंहिता महाभारत अपनी विशालकाय आकृति से और विभिन्न विषय वर्णन की दृष्टि से अपनी कीर्तिपताका को दिग–दिगन्त में फैलाता हुआ विश्व–साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। महाभारत के विषय में स्वयं वेदव्यास जी कहते हैं कि–

धर्मे चार्थे कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तदन्यत्र ।।

संसार की प्रायः सभी भाषाओं में अनूदित होकर संस्कृतानुरागियो को गौरवान्वित करने वाला, महाभारत के भीष्मपर्व में कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में निराश,हताश, उदास अर्जुन को श्रीकृष्ण द्वारा स्वकर्तव्य पालन की शिक्षा देते हुए दिया गया गीता–ज्ञान विश्व मानव समुदाय को अपने कर्त्तव्यों के पालन के साथ जीवन जीने की कला सिखाता हैद्य जिसका यह संसार कृतज्ञतापूर्वक सहर्ष अनुसरण करता है और कहता है कि–

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।

या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिसृता ।

६०० ईसा पूर्व में संस्कृतभाषा के प्रकाण्ड विद्वान प्रसिद्द शल्यचिकित्सक सुश्रुत ने अपनी रचना सुश्रुतसंहिता लिखकर शल्यचिकित्सा के विषय में संसार को अवगत कराया द्यमगध के प्रधानमंत्री आचार्य कौटिल्य द्वारा 375 ईसा पूर्व में संस्कृत भाषा में रचित अर्थशास्त्र नामक पुस्तक में वर्णित राजनैतिक मार्ग का अवलंबन करने का प्रयास आधुनिक जगत के सभी राजनेता करते हैं। 300 ईसा पूर्व में आचार्य चरक ने चरक संहिता की रचना कर औषधी विज्ञान के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में कविकुलगुरु कालिदास, भारवि, माघ और श्रीहर्ष इत्यादि महाकवियों ने संस्कृत–साहित्य को विश्व–साहित्य में उन्नत शिखर पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दंडी ,सुबंधु और बाण इत्यादि गद्यकारो ने भी सहृदय पाठक के ह्रदय को आह्लादित करने वाले, जीवन के यथार्थ स्वरूप को प्रकट करने वाले अपने गद्यकाव्यों द्वारा संस्कृत को चिरस्थायी रूप में प्रतिष्ठापित किया।

476 ई. में जन्मे पाटलिपुत्र के प्रसिद्द संस्कृत विद्वान् आर्यभट ने 'शून्य की खोज' कीद्य 1530 ईसवी में स्थापित कापरनिकस की अवधारणा पृथ्वी ब्रह्माण्ड के केंद्र में नहीं है अपितु सूर्य ब्रह्माण्ड के केंद्र में है। इसी सिद्धांत को हजार साल पहले आचार्य आर्यभट 'पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती है' इस रूप में वर्णित कर चुके थे। सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण में राहू–केतु विषयक हिन्दू धर्म की मान्यता के स्थान पर इन्होंने "पृथ्वी और चंद्रमा की सूर्य के सापेक्ष स्थिति ही सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण में कारण होती है" इस सिद्धांत की स्थापना की।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन के उपरांत अभिव्यक्त हुई राजनीतिक और आर्थिक जागृति में राष्ट्रवाद की प्रखर भावना को प्रदीप्त करने का श्रेय विभिन्न संस्कृत–साधकों को जाता है। जिनमें महर्षि दयानंद सरस्वती स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, लोकमान्य तिलक और योगी अरविन्द प्रमुख हैं। राष्ट्रवादी विचारधारा के पोषक, महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा प्रवर्तित आर्यसमाज के गुरुकुलों ने संस्कृतभाषा के प्रति सकारात्मक और अपनत्व की भावना जागृत की है।

संवैधानिक रूप से संस्कृत भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित 22 भाषाओं में सम्मिलित है। संस्कृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। यह मुख्य रूप से भारत और नेपाल में बोली जाती है। धार्मिक क्रियाकलापों के लिए दुनियाभर में रहने वाले भारतीय समुदाय के लोगों द्वारा इसका प्रयोग किया जाता है भारत में जनगणना 2011 के आंकड़ो के अनुसार लगभग 1 लाख लोग संस्कृतभाषी हैं। वर्तमान समय में 16 संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत भाषा के उत्थान में सतत प्रयत्नशील हैं। प्रायः 125 विश्वविद्यालयों में संस्कृत विभाग की स्थापना करके संस्कृत कार्य किया जा रहा है। भारत के सात राज्यों में संस्कृत भाषा के विकास हेतु संस्कृत अकादमियों का गठन किया गया है। भारत के राज्य उत्तराखंड ने संस्कृत को अपनी दूसरी आधिकारिक भाषा के रुप में स्वीकार गया है। लगभग 3 करोड़ छात्र भारतवर्ष में माध्यमिक–स्तर पर संस्कृत अध्ययन करते हैं। लगभग 20 लाख छात्र स्नातक स्तर संस्कृत पढ़कर संस्कृत की जीवंतता द्योतित करते हैं।

भारत के विभिन्न संगठन ध्येय वाक्य चयन हेतु सदा निर्मल प्रवाह वाली जीवंत भाषा संस्कृत की और ही उन्मुख होते हैं। भारत सरकार का (सत्यमेव जयते), भारतीय

थलसेना का (सेवा अस्माकं धर्मः), भारत के उच्चतम न्यायालय का (यतो धर्मस्ततो जयः), (ज्ञान–विज्ञानं विमुक्तये) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, (तमसो मा ज्योतिर्गमय) दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय का ध्येय वाक्य द्यसंस्कृत भाषा से ग्रहण किये गए ये ध्येय वाक्य निश्चित रूप से मानव जीवन में बंधुता,तप,त्याग,सत्य इत्यादि उत्तम भावनाओं के साथ सतत उद्योगरत रहकर उत्थान के लिए प्रेरित करते हैं। मनुष्यको वास्तविक अर्थों में मनुष्य (मननशील) बनने में सहायक होते हैं द्यहम अपने जीवन में इन ध्येय वाक्यों में से किसी भी वाक्य को ध्येय (लक्ष्य,उद्धेश्य) बनाकर सुख,समृद्धि,शान्ति और सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं।

जीवन में जब सकारात्मक ऊर्जा का अभाव प्रतीत हो तब संस्कृत ग्रंथों में ऋषि–महर्षियों द्वारा प्रयुक्त विभिन्न सुभाषित हमारी कठिनाइयों और दुर्गुणों को हटाकर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देकर संस्कृत की जीवंतता बतलाते हैं। 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत' को समझने वाला दूसरे के साथ अनुचित व्यवहार में कभी तत्पर नहीं हो सकता है। कठोनिषद (उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत)का अध्येता लक्ष्यप्राप्तिपर्यंत परिश्रम करेगा ही, 'विद्या विनयेन शोभते' के भावार्थ को जानने वाला विद्या प्राप्त करके भी विनयपूर्वक व्यवहार करने की क्षमता रखता ही है। पूरी वसुधा को ही एक परिवार मानने (वसुधैव कुटुम्बकं) के विस्तृत विचार को संसार के समक्ष संस्कृत भाषा प्रस्तुत करती है। संस्कृतभाषा सम्पूर्ण मानव समाज के लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः हमें संस्कृत के ग्रंथों में वर्णित महापुरुषों की मति, उत्तमजनो की धृति और सामान्य जनों की जीवनपद्धति का अनुसरण करना चाहिए। राष्ट्र प्रेम की भावना बढ़ाने वाली,हमारे गौरवशाली अतीत को ज्ञात कराने वाली, भारत की ज्ञान–विज्ञान की परंपरा को प्रतिष्ठापित करने वाली,भारतीय संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करने वाली और मानवीय गुणों का विकास करने वाली विश्व की सर्वाधिक मधुर,दिव्य और प्राचीनतम भाषा संस्कृत को विभिन्न संस्कृतानुरागियों के जीवन में जीवंत रूप में देखा जा सकता है। चराचर जगत के समस्त प्राणियों के कल्याण की मंगलकामना के साथ–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भावेत्।।

इदं ज्ञानमन्दिरम्

श्री लक्ष्मण सिंह, सहायक प्राध्यापक संस्कृत विभाग

भारताय समर्पितं इदं ज्ञानमन्दिरम् ।
मानवाय समर्पितं इदं ज्ञानमन्दिरम् ।।
जगति विराजते जाह्नवीपवित्रस्थलमिदम् ।
जगति विराजते मस्तनाथतपपावनमिदम् ।
जगति विराजते दुर्गाप्रसादस्वप्नदृष्टमिदम् ।
शिक्षाविकासाय समर्पितं इदं ज्ञानमन्दिरम् ।।
भारताय.....2
यथा सूर्यप्रकाशो धरां सर्वत्र प्रकाशते ।
तथा जयप्रकाशो विद्यां अत्र प्रकाशते ।
यदा बलजीतनामयुतं तदा इदं राजते ।
श्रेष्ठविचाराय समर्पितं इदं ज्ञानमन्दिरम् ।।
भारताय.....2
हरित–पादप–च्छादितं अस्य प्रांगणम् ।
विभिन्न–प्रसून–रोचितं अस्य प्रांगणम् ।
स्वच्छ–भव्य–मनो–भावितं अस्य प्रांगणम् ।
प्रकृतिसंरक्षणाय समर्पितं इदं ज्ञानमन्दिरम् ।।
भारताय.....2
तमसो मा ज्योतिर्गमय इति विचार्यते ।
संस्कृतेन भारतीयसंस्कृतिः संरक्ष्यते ।
उत्तमाध्यापकैः छात्रसमूहः पाठ्यते ।
छात्रविकासाय समर्पितं इदं ज्ञानमन्दिरम् ।।
भारताय.....2

छात्रकेन्द्रितं ज्ञानकेन्द्रितं मन्दिरमिदम् ।
बोधकेन्द्रितं प्रयोगकेन्द्रितं मन्दिरमिदम् ।
अभ्यासकेन्द्रितं प्रयासकेन्द्रितं मन्दिरमिदम् ।
अनुशासनाय समर्पितं इदं ज्ञानमन्दिरम् ।।
भारताय समर्पितं इदं ज्ञानमन्दिरम् ।
मानवाय समर्पितं इदं ज्ञानमन्दिरम् ।।

जयतु भारतं जयतु संस्कृतम्

संस्कृत-संभाषण-कार्यशालायाः प्रतिवेदनम्

प्राचार्य दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालयस्य निर्देशानुसारं संस्कृतछात्राणां कृते पञ्च–दिवसीय–कार्यशालायाः आयोजनं महाविद्यालयस्य संस्कृत–विभागे अभवत्। अस्यां कार्यशालायां महाविद्यालयस्य सर्वे संस्कृतछात्राः उपस्थिताः अभवन्। अस्याः कार्यशालायाः उद्घाटनं 13–11–18 दिनांके प्रातः द्वादशवादने दीप प्रज्ज्वलनेन सह अभवत् द्य महाविद्यालयस्य प्रभारी–प्राचार्येण डा. यू.के. झा वर्येण सरस्वत्याः प्रतिमायाः समक्षं दीप–प्रज्ज्वालनं मन्त्रैः सह कृतं। तदनन्तरं महाविद्यालयस्य छात्राभिः सरस्वती वन्दना प्रस्तुता। उद्घाटनकार्यक्रमानन्तरं कार्यशाला प्रारम्भा अभवत् द्य राष्ट्रिय–संस्कृत–संस्थानस्य कुमारी नीलम रानी प्रशिक्षिकारूपेण आगतवती द्य

çFkefnol% &

(१) संस्कृत विषयं प्रति छात्राणां रुचिरुत्पादनार्थं चर्चा अभवत्।

(3) आधुनिक गीतानाम् संस्कृते अनुवादं कृत्वा छात्रान् गातुं अवसरः दात्तव्यः।

(४) क्रीडामाध्यमेन ,प्रक्षेपकयन्त्रेण च अध्यापनकार्यं करणीयं ।

f}rh;fnol% &

(१) अन्तर्जाले उप्लब्धा संस्कृतशिक्षणसामग्री स्वपठनपाठनयोग्या वर्तते।

(२) कर्तुः अनुसारं क्रियायाः प्रयोगः बोधनीयः।

(3) कक्षायां परोपकारस्य अर्थं महत्त्वं च बोधयित्वा छात्रान् वाक्यानि लेखितुं अवसरः दात्तव्यः।

r`rh;fnol% &

संस्कृतसप्ताहे एते कार्यक्रमाः आयोजयितुं शक्यन्ते।

(1)निबन्ध लेखनं (२) संस्कृत–श्लोक–गायनं

(3) संस्कृत–गीत–गायनं (४) प्रश्नोत्तरी

(५) नाट्यमञ्चनं (६) कथाकथनं (प्रक्षेपकयन्त्रद्वारा

इतोऽपि समयानुगुणम् अन्याःगतिविधयःअपि आयोजयितुं शक्यन्ते।

prFkfnol% &

(१) सरल भाषया संस्कृत संभाषण–अभ्यासः अभवत्।

(२) संस्कृतेन आत्मपरिचयः इत्यादिकम् अभवत्।

i¥pefnol% &

(1) संस्कृत–गीत–गायनम् (2) प्रश्नोत्तरी (3) नाट्यमञ्चनम् (4) वस्तु–परिचयः।

lekiu&lekjkg &

अस्याः कार्यशालायाः समापन–समारोहः 17–11–18 दिनांके महाविद्यालयस्य प्रभारी–प्राचार्येण डा. यू के झावर्यस्य अध्यक्षतायां सरस्वत्याः प्रतिमायाः समक्षं दीप–प्रज्ज्वालनम् दीपमन्त्रैः सह अभवत्। तदनन्तरं महाविद्यालयस्य छात्राभिः सरस्वती वन्दना प्रस्तुता। समापन–समारोहे छात्राः विभिन्नान् कार्यक्रमान् प्रस्तुतवन्तः। छात्राः संस्कृत– गीत–गायनं, वस्तु–परिचयः ,संस्कृत–संभाषणं

च कृतवन्तः। राष्ट्रिय–संस्कृत–संस्थानस्य कुमारी नीलम रानी प्रशिक्षिकारूपेण आगत्य बहुविधप्रयत्नं कृत्वा संस्कृतं प्रति सकारात्मक–वातावरण–निर्माणे साहाय्यं कृतवती। प्राचार्यमहोदयाः संस्कृत–भाषा–महत्व–विषये उक्तवन्तः। अन्ते संस्कृत–विभागाध्यक्षः लक्ष्मण सिहं : धन्यवाद ज्ञापनं कृतवान्। कार्यक्रमस्य संचालनं गौरव–जैन–महाभागेन कृतम् अनेन कार्यक्रमेण अस्माकं महाविद्यालये संस्कृतमय–वातावरणम् अभवत् ।

विशेषः &

(१) कार्यक्रमे छात्राणां समस्यानां समाधानं कर्तुं विचार–विमर्शं कृतं।

(२) सर्वैः व्याकरणम् साहित्यं च सरलरीत्या पाठयितुं विचार–विमर्शः कृतं ।

(3) अन्ते सर्वे संस्कृत–सप्ताह–समारोहस्य आयोजनं हर्षोल्लासेन कर्तुं संकल्पं कृतवन्तः ।

(४) शान्तिमन्त्रेण पञ्चदिवसात्मकस्य कार्यक्रमस्य समापनं जातम्।

जयतु भारतं जयतु संस्कृतम्
जयतु भारतं जयतु संस्कृतम्

प्रियं भारतम्

करिश्मा, बी.एड. द्वितीय वर्ष

प्रकृत्या सुरम्यं विशाले प्रकामम्,
सरितारहारैः ललामं निकामम्।
हिमाद्रिर्ललाटे, पदे चैव सिन्धुः
प्रियं भारतं सर्वथा दर्शनीयम्॥

धनानां विधानं धरायां प्रधानम्,
इदं भारतं देवलोकेन तुल्यम्।
यशो यस्य शुभ्रं विदेशेषु गीतम्,
प्रियं भारतं तत् सदा पूजनीयम्॥

अनेके प्रदेशाः अनेके च वेषाः,
अनेकानि रूपाणि भाषा अनेकाः।
परं यत्र सर्वे वयं भारतीयाः,
प्रियं भारतं तत् सदा रक्षणीयम्॥

वयं भारतीयाः स्वदेशं नमामः,
परं धर्ममेकं सदा मानयामः।
तदर्थं धनं जीवनं चार्ययामः
प्रियं भारतं मे सदा वन्दनीयम्॥

Statistics in Our Daily Life

Dr. P. K. Tyagi, Associate Professor & Head, Statistics Department

Statistics is a form of mathematical analysis that uses quantified models, representations and synopses for a given set of experimental data or real-life studies. Statistics studies methodologies to gather, review, analyze and draw conclusions from data. Some statistical measures include mean, regression analysis, skewness, kurtosis, variance and analysis of variance. Statistics are the sets of mathematical equations that we used to analyze the things. It keeps us informed about, what is happening in the world around us. Statistics are important because today we live in the information world and much of this information's are determined mathematically by Statistics Help. It means to be informed correct data and statics concepts are necessary. To be more specific about the importance of statics in our life, here are 10 amazing reasons that we have heard on several occasions.

1) Everybody watches weather forecasting. Have you ever think how do you get that information? There are some computers models build on statistical concepts. These computer models compare prior weather with the current weather and predict future weather.

2) Statistics mostly used by the researcher. They use their statistical skills to collect the relevant data. Otherwise, it results in a loss of money, time and data.

3) What do you understand by insurance? Everybody has some kind of insurance, whether it is medical, home or any other insurance. Based on an individual application some businesses use statistical models to calculate the risk of giving insurance.

4) In financial market also statistic plays a great role. Statistics are the key of how traders and businessmen invest and make money.

5) Statistics play a big role in the medical field. Before any drugs prescribed, scientist must show a statistically valid rate of effectiveness. Statistics are behind all the study of medical.

6) Statistical concepts are used in quality testing. Companies make many products on a daily basis and every company should make sure that they sold the best quality items. But companies cannot test all the products, so they use statistics sample.

7) In everyday life we make many predictions. For examples, we keep the alarm for the morning when we don't know that we will be alive in the morning or not. Here we use statistics basics to make predictions.

8) Doctors predict disease on based on statistics concepts. Suppose a survey shows that 75%-80% people have cancer and not able to find the reason. When the statistics become involved, then you can have a better idea of how the cancer may affect your body or is smoking is the major reason for it.

9) News reporter makes a prediction of winner for elections based on political campaigns. Here statistics play a strong part in who will be your governments.

10) Statistics data allow us to collect the information around the world. The internet is a devise which help us to collect the information. The fundamental behind the internet is based on statistics and mathematics concepts.

Hope these 10 everyday reasons help you to understand the importance of statistics.

Glimpses of Indian Mathematics

Dr. R. K. Agrawal, Associate Professor & Head, Mathematics Department

Mantras from the early Vedic period (before 1000 BCE) invoke powers of ten from a hundred all the way up to a trillion, and provide evidence of the use of arithmetic operations such as addition, subtraction, multiplication, fractions, squares, cubes and roots. A 4th Century CE Sanskrit text reports Buddha enumerating numbers up to 1053, as well as describing six more numbering systems over and above these, leading to a number equivalent to 10421. Given that there are an estimated 1080 atoms in the whole universe, this is as close to infinity as any in the ancient world came.

As early as the 8th Century BCE, long before Pythagoras, a text known as the “Sulba Sutras” (or "Sulva Sutras") listed several simple Pythagorean triples, as well as a statement of the simplified Pythagorean theorem for the sides of a square and for a rectangle. The Sutras also contain geometric solutions of linear and quadratic equations in a single unknown, and give a remarkably accurate figure for the square root of 2, obtained by adding 1 + 1⁄3 + 1⁄(3 x 4) - 1⁄(3 x 4 x 34), which yields a value of 1.4142156, correct to 5 decimal places. As early as the 3rd or 2nd Century BCE, Jain mathematicians recognized five different types of infinities: infinite in one direction, in two directions, in area, infinite everywhere and perpetually infinite. Ancient Buddhist literature also demonstrates a prescient awareness of indeterminate and infinite numbers, with numbers deemed to be of three types: countable, uncountable and infinite.

The Indians were also responsible for another hugely important development in mathematics. The earliest recorded usage of a circle character for the number zero is usually attributed to a 9th Century engraving in a temple in Gwalior in central India. But the brilliant conceptual leap to include zero as a number in its own right is usually credited to the 7th Century Indian mathematicians Brahmagupta - or possibly another Indian, Bhaskara I - even though it may well have been in practical use for centuries before that. The use of zero as a number which

could be used in calculations and mathematical investigations would revolutionize mathematics. Brahmagupta established the basic mathematical rules for dealing with zero: 1 + 0 = 1; 1 - 0 = 1; and 1 x 0 = 0. Brahmagupta also established rules for dealing with negative numbers, and pointed out that quadratic equations could in theory have two possible solutions, one of which could be negative. He even attempted to write down these rather abstract concepts, using the initials of the names of colours to represent unknowns in his equations, one of the earliest intimations of what we now know as algebra.

Golden Age Indian mathematicians made fundamental advances in the theory of trigonometry, a method of linking geometry and numbers first developed by the Greeks. They used ideas like the sine, cosine and tangent functions to survey the land around them, navigate the seas and even chart the heavens. For instance, Indian astronomers used trigonometry to calculate the relative distances between the Earth and the Moon and the Earth and the Sun. They realized that, when the Moon is half full and directly opposite the Sun, then the Sun, Moon and Earth form a right angled triangle, and were able to accurately measure the angle as 1⁄7°. Their sine tables gave a ratio for the sides of such a triangle as 400:1, indicating that the Sun is 400 times further away from the Earth than the Moon. Although the Greeks had been able to calculate the sine function of some angles, the Indian astronomers wanted to be able to calculate the sine function of any given angle. A text called the "Surya Siddhanta", by unknown authors and dating from around 400 CE, contains the roots of modern trigonometry, including the first real use of sines, cosines, inverse sines, tangents and secants.

As early as the 6th Century CE, the great Indian mathematician and astronomer Aryabhata produced categorical definitions of sine, cosine, versine and inverse sine, and specified complete sine and versine tables, in 3.75° intervals from 0° to 90°, to an accuracy of 4 decimal places. Aryabhata also demonstrated solutions to simultaneous quadratic equations, and produced an approximation for the value of π equivalent to 3.1416, correct to four decimal places. He used this to estimate the circumference of the Earth, arriving at a figure of 24,835 miles, only 70 miles off its true value. But, perhaps even more astonishing, he seems to have been aware that π is an irrational number, and that any calculation can only ever be an approximation, something not proved in Europe until 1761.

Bhaskara II, who lived in the 12th Century, was one of the most accomplished of all India's great mathematicians. He is credited with explaining the previously misunderstood operation of division by zero. He noticed that dividing one into two pieces yields a half, so $1 \div 1/2 = 2$. Similarly, $1 \div 1/3 = 3$. So, dividing 1 by smaller and smaller factions yields a larger and larger number of pieces. Ultimately, therefore, dividing one into pieces of zero size would yield infinitely many pieces, indicating that $1 \div 0 = \infty$ (the symbol for infinity).

The Kerala School of Astronomy and Mathematics was founded in the late 14th Century by Madhava

of Sangamagrama, sometimes called the greatest mathematician-astronomer of medieval India. He developed infinite series approximations for a range of trigonometric functions, including π, sine, etc. Some of his contributions to geometry and algebra and his early forms of differentiation and integration for simple functions may have been transmitted to Europe via Jesuit missionaries, and it is possible that the later European development of calculus was influenced by his work to some extent.

Introduction of New Elements

Dr. Chandrawati, Associate Professor, Chemistry Department

In June of 2016, it was publicly announced that the periodic table will have four new elements added to it. The International Union of Pure and Applied Chemistry (IUPAC) has worked with the laboratories that discovered the elements to name them and then released the new periodic table for a five-month public review period which expired on the 8th of November, 2016. After the review period, the IUPAC Council formally approved the revised periodic table.

The new elements have been added to the lower right-hand corner and consist of:

- Nihonium (symbol Nh) – atomic number 113
- Moscovium (symbol Mc) – atomic number 115
- Tennessine (symbol Ts) – atomic number 117
- Oganesson (symbol Og) – atomic number 118

In January, the new elements were first announced and given interim names until formal names were released. The rights to name the elements were given to those research teams that discovered them. The US, Russia, and Japan were credited with the discovery of the new elements and the names were announced in June. Whilst these teams have the rights to name the elements, they do have to follow a naming convention as outlined by the IUPAC which states that any new element must be named after either:

- a mythological concept or character (including an astronomical object),
- a mineral or similar substance,
- a place, or geographical region,
- a property of the element, or
- a scientist.

The Meaning Behind the Names

- Nihonium – Nihon is one way to say "Japan" in Japanese. As this was the first element discovered by an Asian country, Japan wanted the name to represent the geographical region. Nihon means "the Land of Rising Sun" and provides a direct connection to Japan as a nation.
- Moscovium – Moscovium also represents a geographical region, specifically, the Moscow region which is where the discovery experiments were conducted.

- Tennessine – Tennessine recognises the laboratories that contribute to element research in the Tennessee region which include Oak Ridge National Laboratory, Vanderbilt University, and the University of Tennessee in Knoxville.
- Oganesson – Oganesson attributed its name to a scientist following the IUPAC naming convention. Professor Yuri Oganessian (born 1933) is a Russian nuclear physicist who is credited with three confirmed element discoveries.

How Exactly Were These Elements Found?

Firstly, of the 118 known elements, 94 were found naturally on Earth. This leaves the remaining 24 elements that are not found naturally, meaning they were created in a lab. Creating "man-made" elements involves using particle accelerators to smash atoms together in the hope that they may fuse to become a new element. If the proton count is one that has never been reached before, a new element is formed. To become a new element, however, the experiment must be recreated or reproduced by other scientists to ensure they get the same result.

Career in Sports

Seemant Kumar Dubey, Assistant Professor & Head, Department of Physical Education

Sport is an exciting and healthy pastime game to many, but if the sport is really one's passion it can be a very rewarding and satisfying career too. It was traditionally considered as a hobby especially in India but now it is taken as a serious career option. The success of sports people in a recent international sporting event has brought the focus to sports careers. Sports help you to make your body physically fit and keep your mind good. If you choose sports as a career, it also gives lots of fame and money. You can make a career in any sports field depending on what sports you take up as your expertise. Various sports fields are Cricket, Badminton, Volleyball, Football, Basketball, Boxing, Gymnastics, Hockey, Table Tennis, Wrestling, Cycling, etc.

1982 was a watershed year for the growth and development of sports in India. First time, the Asian Games were hosted at Delhi in India. As a sports person, you can get training from various institutions of Sports Authority of India. In India, there are various institutes and academies under the Sports Authority of India (SAI) that impart training to young talents to transform them into talented sports persons. Other than SAI, there are many state levels and private organizations that support sports enthusiasts.

Course Details:

A number of institutes in India provide training in sports. Aspirants with amazing sporting abilities can join these institutes, after completing their 10+2 level, in undergraduate, diploma, and certificate programs. After graduation, they can enroll in one-year PG

diploma or two-year master's degree program in sports coaching in the following disciplines - athletics, basketball, football, gymnastics, hockey, swimming, volleyball, wrestling, and weightlifting, and master's degree course in physical education in recognized sports events. Candidates with MBBS degree can take up a two-year diploma course in Sports Medicine (DSM). Some institutes offer higher level courses, like M.Phil and PhD for deserving candidates.

Diploma Course:

- Diploma in Sports Medicine
- Diploma in Sports Coaching
- Diploma in Sports Management
- Diploma in Sports Science & Nutrition

Undergraduate Courses:

- B.Sc in Physical Education, Health Education and Sports Sciences
- Bachelor of Physical education
- Bachelor of Arts (BA) in Sports Management
- B.Sc (Hons) in Sports Science
- B.Sc in Sports and Recreation Management
- Bachelor of Sports Management (BSM)
- Bachelor of Business Administration (BBA) in Sports Management

Postgraduate Course:

- Master of Physical education
- M.Sc in Sports Coaching
- Post Graduate Diploma in Sports Medicine
- Post Graduate Diploma in Sports Management
- Post Graduate Diploma in Sports Business
- MBA in Sports Management
- Master of Sports Management (MSM)
- M.Sc in Sports Science

Doctoral Degree Courses:

- Ph.D in Physical Education
- M.Phill in Physical Education
- Ph.D in Sports Management

Top Colleges Offering UG/PG/Other Courses:

There are several academies and institutes under Sports Authority of India (SAI) that impart training to young students to transform them into talented sportspersons. Some prominent sports institutes in India are: Lakshmibai National Institute of Physical Education, Gwalior; Lakshmibai National College for Physical Education, Thiruvananthapuram; MRF Pace Foundation, Chennai; Tata Football Academy, Jamshedpur; National Cricket Academy, Bangalore; Gujarat University, Ahmedabad; National Sports East Centre, Kolkata; Adarsh College of Physical Education, Osmanabad; Amity School of Physical Education and Sports Sciences, Noida; Netaji Subhas National Institute of Sports, Patiala; Bhupathi Tennis Academy, Bangalore; and Indira Gandhi Institute of Physical Education and Sports Sciences, New Delhi.

Corruption: Self Examination

Dr. P. K. Tyagi, Associate Professor & Head, Statistics Department

- If you usually put more sugar in your tea when in a hotel than you do at home, you're likely to be corrupt.
- If you use more tissue in a public washroom than you do at home, you are a potential thief, if given opportunity you would take what's not yours.
- If you serve yourself more food that you can finish just because someone else is footing the bill, you're greedy.
- If you usually jump queues, you have potential for abusing office if given a powerful position.
- If you are more concerned about knowing someone's surname rather than first name, you're likely to be a tribal bigot. It's even worse when someone tells you their name and you ask, "which tribe is that?"
- If you usually overlap while in traffic jam or have no regard for traffic lights, then you would easily embezzle public funds if you're given a position at a public office since you hate regulation .
- If you channel waste or dirty water from your compound to a neighbour's compound rather than manage it, you're ill-mannered.
- If you look at this post and wonder whether it was really necessary to talk about these issues; then you are dishonest and you would easily cover up ills in the society for your own benefit.

Let us try to be people of character wherever we find ourselves.

A country is as good, or bad, as its citizens make it. No Government can take action which ONLY THE CITIZENS can take - individually or collectively. So let us start NOW to make our country, great by becoming GOOD CITIZENS.

REAL Neurological screening Test

Note the words below. Initially, you will have difficulty reading them. However, gradually your brain will interpret the words correctly. Please give a chance for these words to speak to your brain.

Here we go!

7H15 M3554G3 53RV35 7O PR0V3 H0W 0UR M1ND5 C4N D0 4M4Z1NG 7H1NG5! 1MPR3551V3 7H1NG5! 1N 7H3 B3G1NN1NG 17 WA5 H4RD BU7 N0W, 0N 7H15 LIN3 Y0UR M1ND 1S R34D1NG 17 4U70M471C4LLY W17H0U7 3V3N 7H1NK1NG 4B0U7 17, B3 PROUD! 0NLY C3R741N P30PL3 C4N R3AD 7H15! PL3453 F0RW4RD 1F U C4N R34D 7H15

This is a very good example of a Brain Study: If you can read this, your mind is still young and has no Parkinson Congrats!

Action Research

Dr. Shailendra Kumar Singh, Assistant Professor, B.Ed. Department

Action research is the term which describes the integration of action i.e. implementing a plan with research. The original concept is sometimes attributed to Kurt Lewin (1890–1947). As distinct from academic research, those involved in action research participate in an ongoing testing and monitoring of improvements in their practice. They work in a collaborative way to identify issues in their organisation and develop processes for improvement. In education, action research is also known as teacher research. It is one method that teachers use for improvement in both their practice and their students' learning outcomes. The central goal of action research is positive educational change. This change impacts significantly on the teachers involved and how they teach. In a school setting, participants could include teachers, students, parents and community members.

Action research is characterised as being:

1. Integrated: conducted as part of a teacher's normal daily practice.
2. Reflective: a process which alternates between plan implementation and critical reflection
3. Flexible: methods, data and interpretation are refined in the light of the understanding gained during the research process.
4. Active: a process designed to generate change in small steps.
5. Relevant: meets the needs of teachers and/or their students.
6. Cyclical: involving a number of cycles with each clarifying issue leading to a deeper understanding and more meaningful outcomes.
7. Focused: on a single issue of school improvement.
8. Collaborative: teachers and leaders working together to improve student outcomes.
9. Planned: an organised approach to answering a question.
10. Learning: simultaneous construction of new knowledge by teachers about their practice.

Action Research as "FIVE Cs" By Borgia and Schuler:

Commitment: Time commitment should be carefully considered by participants of action research since it takes them time to get acquainted with other participants, think about change, try new approach, collect data, and interpret results.

Collaboration: In an action research all participants are at par with each others in all respects, such as, giving ideas, suggestions, feelings, and actions which lead to success.

Concern: In the research process, participants build up a group of intimates who trust each other and value the project.

Consideration: A reflective practice is a mindful re-

view of a professional research like action research. It demands concentration and careful consideration as one seeks patterns and relationships that will create meaning within the investigation.

Change: For humans, especially teachers, change is a continuous process and it is a significant element in remaining academically & naturally alive.

Examples of action research:

In a class room, some students are not doing their home work continuously in a subject. Another situation, some students come school late, daily. That time there is a need of action research for improvement in students' habit.

The basic steps of Action Research

There are many educationist gave different steps of action research. Like Hilda Taba suggested following steps.

- Identifying problems
- Analysis of Problems.
- Formulating ideas or hypothesis
- Implementation/action
- Collecting data
- Evaluating the results

But when I used some open educational resources then I got one more i.e.

Step 1 - Problem Identification:

- Why do you want to do study this topic?
- Is the problem broad enough to allow for a range of insights and findings?
- Is it narrow enough to be manageable?

Step 2 - Plan of Action:

- Will you develop and implement a new strategy or approach to address your question?
- What data do you need to learn about your question?

Step 3 - Data Collection:

- What, why, when, where, and how will you collect your data?
- How will you ensure that you have multiple perspectives?

Step 4 - Analysis of Data:

- What can you learn from the data?
- What patterns, insights, and new understandings can you find?

Step 5 – Evaluation and Plan for Future Action:

- What will you do differently in your classroom as a result of this study?
- How will you write about what you have learned so that the findings will be useful to you and to others?

Data Collection in The Process of Action Research

Action research is a process in which participants examine their own educational practice systematically and carefully, using the techniques of research. Various tools for data collection are available for action researcher.

Tests:

The psychological tests are data gathering devices used mainly in quantitative researches. It is a standardized instrument designed to measure objectively one or more aspects of total personality by means of sample of verbal or non verbal responses or by means of other behaviour.

Rating Scales:

A rating scale is defined as a tool which allows

an individual to categorize the objects, persons, or events on continue represented by a series of continuous numerals. The responses on a rating scale are usually taken on two, three, five, seven, nine or eleven point scale. A rating scale has two components, viz. the stimulus variable i.e. the traits or qualities to be rated and response options.

Inventory:

Inventories are used to describe status or to predict future behaviour on the basis of present performance. Personality Inventory is self rating questions that deal not only with overt behaviour but also with person's own feelings about himself. Inventory actually evaluates personality aspects that are beyond impression made upon observers. Inventories are useful in group trends.

Observation:

It is a technique for studying the typical behaviour of the individual. Observation must be organized, directed & systematic. Observation method is a technique in which the behaviour of research subjects is watched and recorded without any direct contact.

Interview:

Interviewing is one of the most common methods for collecting data in qualitative research. Interviews allow participants to provide rich, contextual descriptions of events. The process of interviewing is time-consuming and the quality of data often is depending on the aptitude of the interviewer.

Questionnaire:

A questionnaire is a means of eliciting the feelings, beliefs, experiences, perceptions, or attitudes of some sample of individuals. As a data collecting instrument, it could be structured or unstructured the questionnaire is most frequently a very concise, pre planned set of questions designed to yield specific information to meet a particular need for research information about a pertinent topic.

Technique for Analysis of Qualitative Data

Analysis is the heart of making sense of your experience with action research. Analysis is fun and messy. It always begins with your data. Data never speak for themselves. Your mind is the most important analytical tool that you have. Analysis is a process of telling a convincing story about the sense that your data led you to make. Analyze and identify major themes. Depending upon the question, teachers may wish to use classroom data, individual data, or subgroup data. Some of the data are quantifiable and can be analyzed without the use of statistics or technical assistance. Other data, such as opinions, attitudes, or checklists, may be summarized in table form. Data that are not quantifiable can be reviewed holistically and important elements or themes can be noted.

Action Research different from other Research Methods

Action research is a form of applied research whose primary purpose is the improvement of an educational professional's own practice. Action research is equivalent to practitioner research, teacher research, insider research and self-study research when it is undertaken by by teacher educators on their own practice. Action research may use any of the methods used in formal educational research.

Action researchers can collaborate with colleagues, clients, or professional researchers usually university professors. It may also have other purposes besides improving one's personal practice. Action research differs from formal research in many aspects. Formal research is a form of generalize knowledge published in academic journals. However some action research having some characteristics of formal research can be published in academic journals. Action research is published in online action research journal and websites of various action research networks. Other practitioners benefit from the knowledge generated by these reports.

Talent or Hardwork

Pankaj Kumar Gupta, Head, BCA Department

Talent is an inborn quality that gives you a smart way to achieve.Talent is futile unless you go for it. One should never sit on a couch and expect for a good result. Just because you have talent doesn't mean you can go on the field and be the star of the team. "Hard work beats talent when talent fails to work hard."

Whereas hard work is more important than talent as talent will only carry one so far. If one is not willing to put in the work to harvest and cultivate their talent, then the talent itself is essentially useless. Hard work and perseverance will beat out pure talent any day.Therefore, if talent and hard work go hand in hand it provides better results. If you are lucky to be born with the brains that are capable of potential genius, you cannot become a true genius without motivation. Here is where the hard work comes into play. Anyone can have an idea, vision, or dream, but it takes that 99% working hard to make it closer to becoming a reality.

Talent gives you a head start, but hard work makes you finish the race. We've all heard that hard work is the key to success but sometimes the talent overpowers hardwork and people get better outcome.

Hard work is way more important than talent because hard work can get you place even a scholarship to a good college many people believe that talent is more official than hard work but it's really not because talent can only get you so far in life.

Most of the time the application of hard work talent becomes futile. Therefore hard work is more important than natural talent. Over the years researchers, have discovered that hardworking capacity is a major component of intellectual ability, predicts success in a wide variety of complex activities.

Talent isn't everything, although it is useful

Talent is the fuel for the fire, it will kick-start you towards success and make things easier to get going in the beginning but if you have some who is very talented but doesn't work hard, and someone who is

not talented but works really hard, the person who works hard is usually going to succeed more.

Look at it this way, let's say you have two people competing for a race. One person has come from a long line of successful, fast runners and has always excelled in sports and running throughout their life, they're a natural and have great fast twitch leg muscles.

Then look at another person, who does not come from a line of winners, but instead has worked hard from the start, always struggling but never given up.

The second person although lacking in talent has a determination and drive like no other. He NEVER gives up and while the 'natural talent' might get up at 7 to train for the race, the other guy is getting up at 3 in the morning. He's working HARDER and putting more effort and focus into the whole thing, and therefore he's likely to beat the guy with talent.

Cheating at College is getting worse

Mayank Sharma, Assistant Professor, BCA Department

1. Cheating is the same as lying and stealing. Each time you hand in schoolwork, you are basically telling the teacher that you completed that work on your own. That's either true or, if you cheated on the work, it's lying. Cheating is also stealing because you are taking someone else's work and calling it your own.

2. Cheating causes stress. When you cheat, you inevitably worry about getting caught. The stress of getting caught increases when you consider the possible consequences of your actions, such as getting in trouble at home or receiving disciplinary actions from the school. Even worse, you may have to develop a story to cover up your cheating, which can lead to getting trapped in a web of lies because it's so difficult to keep your story straight when it never happened. It can be very stressful if you get caught in a lie, or if you thinks someone knows about your cheating and might tell someone else.

3. Cheating is unfair to others. Have you ever played a game by the rules only to have a friend who was so intent on winning that they cheated? Cheating is very frustrating when you are playing by the rules. When you cheat in school to get better grades, it's unfair to the kids who actually studied and did the work. You may also receive unfair recognition for the better grade, when it is not deserved.

4. Cheating is unfair to you. Accomplishment feels good and helps build self-esteem and self-confidence. When you cheat, you are basically telling yourself that you do not believe in your own abilities. You might get an A on a test or an assignment, but you'll know that you really didn't earn it. Cheating just makes you feel bad about yourself.

5. Cheating hampers progress. Learning tends to build on itself. You learn basics first so that you

can use those basics in more complicated problems later. If you don't know the basics, then you will have to continue to cheat, or start over learning the material from scratch. Every time you cheat, you're not learning skills and lessons that could be important later on.

6. Cheating is disrespectful. Teachers work hard to share knowledge to help you be successful in academics, career, and life. Cheating shows a lack of respect for the efforts of your teacher and your classmates who did the work.

7. Cheating kills trust. It only takes getting caught cheating one time to ruin trust. Even if you never cheat again, those in authority will always have a hard time trusting you and will likely be suspicious of your work. When others hear about your cheating, their opinion of you will be compromised.

8. Cheating can become a habit. People who cheat don't usually do it one time. It becomes a habit that follows people throughout college and into their careers. Just like gambling or stealing, cheating can become a part of who you are and spread into other areas of your life. Cheaters tend to lose perspective as to what is acceptable behavior and demonstrate a disregard for others.

9. Cheating eventually leads to failure. By skipping the hard work involved in learning, you will never develop the important traits of persistence, dedication, diligence, and sacrifice. Success takes hard work, and cheating is the easy way out. Eventually, you will find that it is difficult to achieve your goals without these important skills.

10. Cheating is embarrassing. Your actions define who you are to those around you. When you cheat, you are expressing yourself to others as lazy, incompetent, untrustworthy, selfish, unintelligent, and disrespectful. In addition, many schools are developing tougher stances on cheating. Imagine your embarrassment when you are suspended for cheating or you discover that school personnel informed college admissions officers of your actions.

Final thoughts…

Schools and parents must both actively discourage cheating if we have any hope of stopping this epidemic. Studies show that America is lagging behind other countries in academics. Our nation will not be globally competitive if we raise a generation of undereducated cheaters. Parents and teachers should emphasize the importance of integrity.

Behave decently - Children observe and learn from you

Amit Soam, Assistant Professor, BCA Department

You must behave decently in front of your children because they learn from observing and copying you.

It is a fact that children learn more by observing. Studies everywhere indicate that a child picks up more through observation of the people around them. According to experts, the theory of observational learning states that it does not require reinforcement, but only models to learn. Children observe the behavior of role models and learn by imitating them.

Teaching by example

It is absolutely true that children are keenly observing our every move. Therefore, we must be extremely careful about what we say or do in their presence. If we wish that our children learn good habits and good behavior, we need to keep a tab on our behavior in their presence. According to the social learning theory propounded by Albert Bandura, a psychologist, children imitate what they observe. He also noted that children were more likely to carry out acts of violence that did not have any consequences. The converse is also true. For instance, if a child witnesses another child misbehaving; and getting punished for the bad behavior, she or he was less likely to repeat the same. On the other hand, if the bad behavior was not punished, the observing child was more likely to repeat the action.

So it is in the interest of our children's future that we watch our words and actions in their presence. Children are very perceptive, if they understand that a particular action is wrong, they understand this. They are mischievous enough to repeat the action, knowing that it is wrong! Similarly, if they see that their parents are short-tempered, and get angry often, they tend to behave similarly. When parents are arguing with each other, children watch and observe. If either parent utters swear words, children easily pick them up. Similarly, it is essential to monitor TV programs, which tend to let loose a lot of unhealthy words. Children might not know the meaning of these words, but they might just pick it up, and start using them.

Children also observer how we handle different people, how we handle different situations. If we are rude to our household helps, or those whom we perceive to be at a 'lesser' level than us, our children will do the same thing. If we are unable to handle stress, and react badly when under pressure, our children too will learn from them, and behave in the same way.

So if we want our children to grow up to be responsible and well mannered youngsters, we need to start behaving as well mannered adults. We should avoid socially irresponsible behavior, like trashing public places, breaking road rules,

speeding unnecessarily, giving in to road rage, using foul language, among others. We must set a good example for children, and behave in the way we want our children to behave. We should set the ideal example.

Conclusion

To conclude, we must become good role models for our children, to ensure that they turn out to be good children, and grow up to be responsible adults.

Quality Management in Teacher Education : Some Suggetive Guidelines

Dr. K.C. Gaur, Head, Faculty of Education

As we know the book of knowledge has no last page. It is correct. The Teacher is always in learing phase. His thrust for knowledge never ends. The teacher is the producer of future fruit bearing citizens of nation. So the teacher is known as the destiny maker of any nation. The role of a teacher is pivotal in the progress of the nation of citizen depends upon the quality of education, which is to be imported. The performance of students and the quality of education depends-upon how well the youngsters are moulded by their teacher. Teachers are trained in the teachers training institutions. The teacher trainees are the real persons who would handle teaching learning process in the schools in future. So the quality of teacher education may be at the root of the progress of any nation. In India long back, the teacher was worshipped by the students. In the ancient time the teacher was worshipped by the king also. At that time the prince or princesses were stayed at gurukuls and there they learn in all spires of life. They were sent to hurukuls for their overall development. But now.a.days, we sent to our child to school for over all development. But it is a general experience that the teachers usually concentrate more on preparing the children for final or term examination rather than helping to acquire competencies needed in daily lives. Such type of the situation made the competitions more toughs. In the present time only cream is the selected for jobs. Rest of the student population is bound to search job or go for higher degree or get technical education. Again he/she has to fight with the computer.

So is the case, for being a teacher, the student has to undergo an entrance exam. It is our regular experience that more than 60% B.Ed. students come to us who do not want to be a teacher. But in this age of competition, they qualified the test and got admission E.ed course. Among these students, some students go for higher degree ie M.Ed. In a long urn, such type of teacher when they become teacher education will be responsible for managing the quality in teacher education. If they have not right right aptitude regarding teacher profession, than how we expect quality from such teacher

education? If they have not right aptitude regarding teacher profession, than how we expect quality from such teacher educators? If we want to have quality in teacher education, we should change our selection criteria for B.Ed. Students.

But on the other hand when we see to the students who really want to be the teacher, we are unable to give them right of skills because of short time we have to train a teacher in our teacher training institution. A teacher train says at the teacher training institutions for maximum 210 days. During these days only a week or ten days has to given for micro teaching. In such a short span of time the trainees understand what micro teaching is and how it can be performed. Only a week or ten days internship / block practice is not enough to go through all the school records and teaching activities. In this situation how we can expect the quality in teacher education? Quality in teacher education means the output or prospective teachers should be the best in their field. But it is irony of our fate that the large number of teacher educators and the trainees both want to pass these 210 days and they want to get degree. If we have such type of attitude than how the quality in teacher education can be managed? The private management has no issue to think for the benefit of the poor teacher educations and the poor students.

The teacher Educators are the backbone of any teacher training institution. They are responsible for maintain the quality in teacher education. But the dark side of the coin is that the apex body in teacher education in India i.e. N.C.T.E. has relaxed the qualifications for the appointment of teacher educators. Now a person who has post Graduation with B.Ed. may be appointed as tectuer in teacher education institution. One can imagine when a B.Ed. passed out student will teach to the B.Ed. students, what will be the situation and what would be the consequences of this relaxation? It is our day experience that the hidden motive of the most of the privately managed teacher education institutions, is some what different form their shown objective. mostly private owned teachers colleges have been opened for commercial purpose.

A candidate who has the most Degree of Education, certainly have more knowledge and kill than the teacher educators who have only B.Ed. Degree. During their studies, the motive of B.Ed. students remains to get maximum marks by craming the course content. They are being taught what they require in schools. but in case of masters' degree course, the candidate undergo advanced course content. They are also taught research methology advanced Educational Psychology, advanced statistics, how one can expect quality form such teacher education. So it is the high time to think over the pitiable situation of teacher educators. We are assembled here to discuss 66 quality management in teacher education." If the teacher educators are not up to the mark, the teacher education will suffer bitterly. The standard teacher education also not bother for quality in teacher education. such type of attitude of teacher educators affects the nation directly. The apex body in Teacher Education, N.C.T.E. should forward forthink on its step to relax the qualifications for appointment of teacher educator.

Keeping in mind the above situation, we should think over the pitiable condition of teacher education. Some suggestion :-

- The selection criteria for teacher trainees should be modified. so that the training who actually want to be the teacher may join the B.Ed. Course.
- N.C.T.E. Should reconsider the norms for appointment of lecturers and principals/HOD in teacher training institution.
- The Affiliating Universities should also interfere in this matter.
- The appointment to teacher educators should be made strictly as per the directions of U.G.C.
- All the existing teacher training institutions should be accredited by NAAC.
- The recognition of below standard teacher training colleges should be mode cancel.
- The bank account of such teacher training institutions should be operated jointly by the institude and the University concerned/N.C.T.I. so that extravagance of management can be checked.
- The affiliation to teacher training colleges should be given on permanent basis. If the teacher training college is not fulfilling the basic requirements, the affiliation of such colleges should be cancelled.
- The NCTE and University should inspect regularly to the privately managed teachers traning colleges.
- The privately managed institutions should also come forward to maintain the quality of teacher education.
- Teacher education is the most important concern of the present time. Teacher educator is the person who make revolution in the society, because teacher educators are the producers of the teacher and they can make the changes in the society we conclude that if the quality of teacher education will be up to the mark, the quality of education will also improve. Its because of the fact that the products of teacher training institution are consumed by the educational institutes. If the teacher education institutions produce the good quality teachers, it is obvious that our student, rather our future fruit bearing citizens will also be of good quality. Every one is responsible for removing the obstacles (Arcaro, 1997) that prevent the quality in teacher education.

Reference

- Arcaro, J.C. (1997). "Quality in Education An Implementation" Hand Book, Deep Publication, New Delhi, Page -1
- Dey, B & saxena, M.K. (2006). Attitude of public teachers towards computer application in education an impirical study, in Deys Saxena & Gihar (ed.) Teacher Education in communication age, wisdom publication, New Delhi, pp.47.53
- Soshi, H.O. (1984). Teacher effectiveness, Journal of Educational Research and Extension, vol. 20 No. 3, PP.153-157
- Singh L.C. (2003) Commercialization in teacher Education, University news 41 (08), February 28 march 02.

Girl Education

Sakshi Agrawal, BCA (III) Year

Female education is the need of the hour. We can't become a developed nation without educating the women of the country. Women play an essential role in the all round progress of the country. Women must be educated to make a democracy successful. They are the real builders of a happy home. By educating a man, we educate one person, but if we educate a woman, we educate the whole family. This highlights the significance of female education. It is true that a woman is the first teacher for her children and they receive their very first lesson in mother's lap. Hence, if a mother is well-educated then she can play an important role in shaping her children's future.

Educated Girls Vs Uneducated Girls

If we look at it, we will observe that a knowledgeable girl not only serve for her family but also serve for her nation. She can serve her nation as a teacher, a nurse, a doctor, an administrator, a soldier, a policewoman, a reporter, an athlete, etc. It is a fact that the girls have gained more achievements than the boys in less time. An educated wife can split the load of her husband's life by doing jobs or by sharing her knowledgeable views about the jobs. An educated housewife can educate her children and can teach her children about the rights and moral values. She can also guide them to differentiate between good and bad things. Girls are gaining their rights and respect in the society and our society is working hard for this. Girls have the potential to lead their country in every field.

Once Napoleon said – "Nation's progress is impossible without trained and educated mothers and if the women of my country are not educated, about half of the people will be ignorant." Thus we should create an atmosphere in which not a single woman remains uneducated.

Duties of a Girl and Contribution of Education

There are three major roles which are performed by women in her course of life – A daughter, a wife and a mother. Except for these significant duties, they have to establish themselves as good citizens of a nation. Hence, it is essential to give women a diverse kind of education from the one given to boys. Their learning should be in such a way that it should enable them to do their duties in an appropriate way. By education, they become fully mature in all the fields of life. An educated woman is well aware of her duties and rights. She can contribute to the development of the country in the same way as men do.

Conclusion

Women should be given equivalent chance in

education like men and they should not be cut off from any development opportunities. To extend the significance and progress the level of women education all over the country, proper awareness programs are necessary, especially in the rural areas. A knowledgeable female can teach her whole family and also the whole country.

Role of English is the Present day

B.Ed. IInd Year

English is playing very important role in every fielf in our life in present day. We can see that after partician of India or after independence English had a very little territory but after some time it has important according to the Nature.

In present time English has been accepted in all the official so we can say that it has become official language of adminstrative language.

In the field of Education English got a place of Second language in Indian currienlam most of the Indian schools are teaching English as a Second language According to the rules of three language formula most of English mediums schools english got first position and become medium of Instruction Although English is a foreign language yet If has been used a large number in very fielf in our life. Even Enriched books of International rescard papers Interntional magazines internet are in english. Because they have more relival and standered material knowledge with the help of English language. We can see the world through the English window. We can get the thought of Philoshopers, Education in English by the Internet. We can get more and more knowledge in Engsigh.

In a our daily life we use many words and Sentences Even all the invitation Cards are printed in English Thus English has been used in bank railways and all other field.

In the present time we can see that English has been spreaded in the whole Country and whole field for the future point of view English midiums students are prefered in adminsterative and other respected Jobs.

At last we can say that English has been used in a large number in our Country in the present day

महाविद्यालय परिवार

प्राध्यापक (वित्त पोषित)

1. डॉ. यू. के. झा	प्राचार्य एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
2. डॉ. मुनेश कुमार	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग
3. डॉ. विनोद कुमार गोयल	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
4. डॉ. प्रदीप कुमार त्यागी	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग
5. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग
6. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती	एसो. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
7. श्री यजवेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, भौतिकी विभाग
8. श्री सीमान्त कुमार दुबे	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग
9. श्री लक्ष्मण सिंह	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

प्राध्यापक (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री पंकज कुमार गुप्ता	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,, बी.सी.ए.
2.	श्री मयंक शर्मा	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए.
3.	श्री सचिन अग्रवाल	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए.
4.	डॉ. कृष्ण चन्द्र गौड़	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
5.	डॉ. सुनीता गौड़	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
6.	डॉ. भुवनेश कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,, वाणिज्य विभाग
7.	डॉ. सुधा उपाध्याय	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
8.	डॉ. वीरेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
9.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
10.	डॉ. घनेन्द्र बंसल	असि. प्रोफेसर, रसायन विभाग
11.	डॉ. तरूण बाबू	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
12.	डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह	असि. प्रोफेसर, रसायन विभाग
13.	डॉ. राजीव गोयल	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
14.	श्री सत्य प्रकाश	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए.

15.	श्री देव स्वरूप गौतम	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
16.	श्री गुरूदत्त शर्मा	असि. प्रोफेसर शिक्षा विभाग
17.	डॉ. विशाल शर्मा	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
18.	श्री अमित कुमार सोम	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए.
19.	श्री रविकान्त गौड़	असि. प्रोफेसर शिक्षा विभाग
20.	श्री गौरव जैन	अंशकालिक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
21.	श्री सत्यपाल सिंह	अशंकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
22.	श्री चन्द्र प्रकाश	अशंकालिक प्रवक्ता, अंग्रेजी विभाग
23.	कु. कुशमाण्डे आर्य	अंशकालिक प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग
24.	श्रीमती ममता शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, अर्थशास्त्र विभाग
25.	श्री ऋषभ वार्ष्णेय	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
26.	श्री अनुज कुमार बंसल	अंशकालिक प्रवक्ता, राजनीति विभाग
27.	श्री अनिल कुमार शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
28.	श्री योगेन्द्र कुमार	अंशकालिक प्रवक्ता, गणित विभाग

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (वित्त पोषित)

1.	श्री सुनील कुमार गर्ग	कार्यालय अधीक्षक
2.	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	कनिष्ठ सहायक
3.	श्री के. के. श्रीवास्तव	पुस्तकालय सहायक
4.	श्री पंकज शर्मा	प्रयोगशाला सहायक, भौतिकी
5.	श्री सुनील कुमार	प्रयोगशाला सहायक, रसायन विभाग विभाग
6.	श्री लक्ष्मण सिंह	कनिष्ठ सहायक
7.	श्री चन्द्र पाल सिंह	अंशकालिक कम्प्यूटर ऑपरेटर
8.	श्री नारायण देव मिश्रा	कार्यालय दफ्तरी
9.	श्री डम्बर सिंह	अर्दली
10.	श्री गजेन्द्र सिंह	गैसमैन, रसायन विज्ञान विभाग
11.	श्री कपूर चन्द्र	चौकीदार
12.	श्रीमती पार्वती	पुस्तकालय परिचायिका
13.	श्री सुनील कुमार निर्मल	प्रयोगशाला परिचर, भौतिकी विभाग

14.	श्री महेश चन्द्र	सेवक, कार्यालय
15.	श्री अमरनाथ राय	प्रयोगशाला परिचर, रसायन विज्ञान विभाग
16.	श्री विजय पाल सिंह	माली
17.	श्री राम अवतार	प्रयोगशाला परिचर, सांख्यिकी विभाग

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री दीपक कुमार शर्मा	लेखाकार
2.	श्री सुरेश रावत	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
3.	श्री आशीष कुमार	कनिष्ठ सहायक
4.	श्री जितेन्द्र कुमार	कनिष्ठ सहायक
5.	श्री विजय कुमार शर्मा	बी.सी.ए. प्रयोगशाला सहायक
6.	श्री प्रमोद कुमार	प्रशासनिक सहायक
7.	श्री विजय कुमार	दैनिक भोगी सेवक
8.	श्री योगेश कुमार	दैनिक भोगी सेवक
9.	श्री राम बाबू	दैनिक भोगी सेवक
10.	श्री त्रिलोक चन्द	दैनिक भोगी सेवक
11.	श्री विक्रम सिंह	दैनिक भोगी सेवक
12.	श्री नेत्रपाल सिंह	दैनिक भोगी सेवक
13.	श्री जितेन्द्र कुमार	दैनिक भोगी सेवक
14.	श्री सुबोध कुमार	दैनिक भोगी सेवक
15.	श्री नितिन कुमार	दैनिक भोगी सेवक
16.	श्री साहब सिंह	दैनिक भोगी माली
17.	श्री सुन्दर पाल	दैनिक भोगी माली
18.	श्री मान सिंह	दैनिक भोगी माली
19.	श्री जगदीश कुमार	दैनिक भोगी माली
20.	श्री सोनू कुमार	दैनिक भोगी माली
21.	श्री राजीव	दैनिक भोगी सेवक
22.	श्री अरविन्द	दैनिक भोगी सेवक

विभिन्न समितियाँ

प्राचार्य परिषद

1. डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य)
2. डॉ. मुनेश कुमार
3. डॉ. वी. के. गोयल
4. डॉ. पी.के. त्यागी
5. डॉ. आर. के. अग्रवाल
6. श्री सीमान्त कुमार दुबे
7. श्री पंकज कुमार गुप्ता
8. डॉ. के. सी. गौड़
9. डॉ. भुवनेश कुमार

सूचना एवं प्रौद्योगिकी समिति (I.T. Commitee)

1. डॉ. आर. के., अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री सचिन अग्रवाल
3. श्री सुनील कुमार गर्ग
4. श्री दीपक कुमार शर्मा

क्रीड़ा समिति

1. श्री सीमान्त कुमार दुबे (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री मयंक शर्मा
5. श्री गुरूदत्त शर्मा
6. डॉ. विशाल शर्मा

अनुशासन समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (मुख्यानुशासक)
2. डॉ. आर. के. अग्रवाल
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री यजवेन्द्र कुमार
6. डॉ. विशाल शर्मा
7. श्री के. के. श्रीवास्तव
8. श्री मयंक शर्मा

एंटी रैगिंग समिति

1. श्री यजुवेन्द्र कुमार (प्रभारी)
1. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
2. डॉ. वीरेन्द्र कुमार
3. डॉ. तरूण बाबू
4. श्री अमित कुमार सोम

आन्तरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC) **एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन समिति** (NAAC)

1. डॉ. वी. के. गोयल (समन्वयक)
2. डॉ. आर. के. अग्रवाल
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री पंकज कुमार गुप्ता
6. डॉ. भुवनेश कुमार
7. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
8. श्री श्याम बिहारी श्रीवास्तव (सामाजिक कार्यकर्ता)
9. डॉ. आलोक गोविल (सामाजिक कार्यकर्ता)
10. श्री सुनील कुमार गर्ग

छात्र कल्याण समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. डॉ. के. सी. गौड़
5. श्री सत्य प्रकाश

शिकायत-निवारण प्रकोष्ठ

1. श्री यजुवेन्द्र कुमार (प्रभारी)
2. श्री पंकज कुमार गुप्ता
3. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
4. डॉ. भुवनेश कुमार
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

भवन निर्माण समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी.के. त्यागी
3. श्री सीमान्त कुमार दुबे
4. श्री सुनील कुमार गर्ग

महाविद्यालय प्रकाशन समिति

1. डॉ. वी.के. गोयल (प्रभारी)
2. श्री सीमान्त कुमार दुबे
3. डॉ. भुवनेश कुमार
4. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
5. श्री सचिन अग्रवाल

चिकित्सा समिति

1. डॉ. (श्रीमति) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. आर. के. अग्रवाल
3. डॉ. घनेन्द्र बंसल
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह
5. डॉ. देवस्वरूप गौतम

यू.जी.सी. अनुदान योजना समिति

1. डॉ. मुनेश कुमार (प्रभारी)
2. डॉ. वी. के. गोयल
3. डॉ. पी. के. त्यागी
4. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
5. श्री सुनील कुमार गर्ग
6. श्री. के. के. श्रीवास्तव

विकास कोष समिति

1. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ.(श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

महिला संरक्षण समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह

पुस्तकालय समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री सीमान्त कुमार दुबे
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. श्री के.के. श्रीवास्तव

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. श्री सचिन अग्रवाल
5. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह
6. श्री गुरू दत्त शर्मा
7. श्री कुशमाण्डे आर्य
8. श्रीमति ममता शर्मा

अन्य विभागीय प्रभारी

1.	**व्यवसाय परामर्श इकाई**	: डॉ. मुनेश कुमार
2.	**वि. वि. परीक्षा, गृह परीक्षा, विद्युत व्यवस्था एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र**	: डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
3.	**नोडल अधिकारी, दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति**	: डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4.	**राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी)**	: श्री यजवेन्द्र कुमार
5.	**राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)**	: श्री सीमान्त कुमार दुबे
6.	**छात्रावास**	: श्री सचिन अग्रवाल

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

अवकाश तालिका वर्ष 2019

कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद-मेरठ के द्वारा चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ कार्यालय द्वारा वर्ष 2019 में प्रत्येक रविवार एवं माह के द्वितीय शनिवार के अतिरिक्त अवकाश तालिका :-

क्रमांक	त्योहारों के नाम	अवधि	निर्धारित कैलेण्डर के अनुसार तिथि	सप्ताह के दिन
01	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	01	13 जनवरी, 2019	रविवार
02	गणतन्त्र दिवस	01	26 जनवरी, 2019	शनिवार
03	महाशिवरात्रि	01	04 मार्च, 2019	सोमवार
04	होलिका दहन	01	20 मार्च, 2019	बुधवार
05	होली/*हजरत अली का जन्मदिवस	01	21 मार्च, 2019	गुरुवार
06	रामनवमी	01	13 अप्रैल, 2019	शनिवार
07	डॉ० भीमराव अम्बेडकर जन्म दिवस	01	14 अप्रैल, 2019	रविवार
08	महावीर जयन्ती	01	17 अप्रैल, 2019	बुधवार
09	गुड फ्राइडे	01	19 अप्रैल, 2019	शुक्रवार
10	[illegible]	01	[illegible] मई, 2019	[illegible]
11	बुद्ध पूर्णिमा	01	18 मई, 2019	शनिवार
12	*ईद-उल-फितर	01	05 जून, 2019	बुधवार
13	विश्वविद्यालय स्थापना दिवस	01	21 जुलाई, 2019	[illegible]
14	श्रावण शिवरात्रि पर्व (मेरठ जनपद हेतु)	01	30 जुलाई, 2019	मंगलवार
15	*ईदुज्जुहा (बकरीद)	01	12 अगस्त, 2019	सोमवार
16	स्वतन्त्रता दिवस/रक्षा बंधन	01	15 अगस्त, 2019	गुरुवार
17	जन्माष्टमी	01	23 अगस्त, 2019	शुक्रवार
18	*मोहर्रम	01	10 सितम्बर, 2019	मंगलवार
19	महात्मा गाँधी जयन्ती	01	02 अक्टूबर, 2019	बुधवार
20	दशहरा (महानवमी)	01	07 अक्टूबर, 2019	सोमवार
21	दशहरा (विजय दशमी)	01	08 अक्टूबर, 2019	मंगलवार
22	नरक चतुर्दशी	01	26 अक्टूबर, 2019	शनिवार
23	दीपावली	01	27 अक्टूबर, 2019	रविवार
24	गोवर्धन पूजा	01	28 अक्टूबर, 2019	सोमवार
25	भैया दूज/चित्रगुप्त जयन्ती	01	29 अक्टूबर, 2019	मंगलवार
26	*ईद-ए-मिलाद/बारावफात	01	10 नवम्बर, 2019	रविवार
27	गुरु नानक जयन्ती/कार्तिक पूर्णिमा	01	12 नवम्बर, 2019	मंगलवार
28	गुरु तेग बहादुर शहीद दिवस	01	24 नवम्बर, 2019	रविवार
29	चौधरी चरण सिंह जयन्ती	01	23 दिसम्बर, 2019	सोमवार
30	क्रिसमस डे	01	25 दिसम्बर, 2019	बुधवार

*यह त्योहार स्थानीय चन्द्र दर्शन के आधार पर मनाये जायेंगे और जिला मजिस्ट्रेट इन अवकाशों की तारीख यदि आवश्यकता पड़े तो पुनः निर्दिष्ट कर सकते हैं।

निर्बन्धित अवकाश

निम्नलिखित निर्बन्धित अवकाश में से कर्मचारी कोई भी दो अवकाश चुन सकता है। प्रत्येक कार्यालय अधिकारी अपने कार्यालय में रजिस्टर रखेंगे कि कर्मचारीगण इन अवकाश में से कोई भी दो से अधिक अवकाश न ले सकें।

क्रमांक	त्योहारों के नाम	अवधि	निर्धारित कैलेण्डर के अनुसार तिथि	सप्ताह के दिन
01	नव वर्ष दिवस	01	01 जनवरी, 2019	मंगलवार
02	मकर संक्रान्ति	01	15 जनवरी, 2019	मंगलवार
03	जननायक कर्पूरी ठाकुर जन्म दिवस	01	24 जनवरी, 2019	गुरुवार
04	बसंत पंचमी	01	10 फरवरी, 2019	रविवार
05	संत रविदास जयन्ती	01	19 फरवरी, 2019	मंगलवार
06	होली	01	22 मार्च, 2019	शुक्रवार
07	महर्षि कश्यप एवं महाराजा निषाद राज गुहा जयन्ती	01	05 अप्रैल, 2019	शुक्रवार
08	चेटी चन्द	01	06 अप्रैल, 2019	शनिवार
09	*हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी गरीब नवाज रह० का उर्स	01	14 अप्रैल, 2019	रविवार
10	चन्द्रशेखर जयन्ती	01	17 अप्रैल, 2019	बुधवार
11	ईस्टर सैटर-डे	01	20 अप्रैल, 2019	शनिवार
12	*शब-ए-बारात	01	21 अप्रैल, 2019	रविवार
13	ईस्टर मण्डे	01	22 अप्रैल, 2019	सोमवार
14	महर्षि परशुराम जयन्ती	01	07 मई, 2019	मंगलवार
15	[illegible] महाराणा प्रताप जयन्ती	01	09 मई, 2019	गुरुवार
16	*जमात-उल-विदा (अलविदा) रमजान का अन्तिम शुक्रवार	01	31 मई, 2019	शुक्रवार
17	*ईद-उल-फितर	01	06 जून, 2019	गुरुवार
18	*ईदुज्जुहा (बकरीद)	01	13 अगस्त, 2019	मंगलवार
19	*मोहर्रम	01	11 सितम्बर, 2019	बुधवार
20	अनन्त चतुर्दशी	01	12 सितम्बर, 2019	गुरुवार
21	विश्वकर्मा पूजा	01	17 सितम्बर, 2019	मंगलवार
22	महाराजा अग्रसेन जयन्ती	01	29 सितम्बर, 2019	रविवार
23	दशहरा (महा अष्टमी)	01	06 अक्टूबर, 2019	रविवार
24	महर्षि बाल्मीकि जयन्ती	01	13 अक्टूबर, 2019	रविवार
25	*चेहल्लुम	01	19 अक्टूबर, 2019	शनिवार
26	नरक चतुर्दशी	01	26 अक्टूबर, 2019	शनिवार
27	सरदार वल्लभ भाई पटेल एवं आचार्य नरेन्द्र देव जयन्ती	01	31 अक्टूबर, 2019	गुरुवार
28	छठ पूजा पर्व	01	02 नवम्बर, 2019	शनिवार
29	वीरांगना ऊदा देवी शहीद दिवस	01	16 नवम्बर, 2019	शनिवार
30	क्रिसमस ईव	01	24 दिसम्बर, 2019	मंगलवार

* यह त्योहार स्थानीय चन्द्र दर्शन के आधार पर मनाये जायेंगे और जिला मजिस्ट्रेट इन अवकाशों की तारीख यदि आवश्यकता पड़े तो पुनः निर्दिष्ट कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

पत्रांक : सामान्य-II/884 दिनांक : 31/12/2018 दिनांक कुलसचिव

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ प्रेषित :

1. प्राचार्य/प्राचार्या, समस्त सम्बद्ध महाविद्यालय एवं संस्थान, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
2. विश्वविद्यालय के समस्त शैक्षणिक विभाग तथा प्रशासनिक अनुभाग।

सहा० कुलसचिव (सामान्य)

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय
स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर

DURGA PRASHD
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय
स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर

COLLEGE ANOOPSHAHAR
ANAND BHAWAN
Sn. NCC BULANDSHAHAR

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलेज अनूपशहर

INVESTOR AWARENESS PROGRAMME
UNDER THE AEGIS OF
INVESTOR EDUCATION & PROTECTION FUND (IEPF)
OF MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA

D.P.B.S. (P.G.) COLLEGE ANOOPSHAHAR

D.P.B.S. P.G. COLLEGE ANOOPSHAHAR
41 UP Bn.
BULAND SHAHAR

सत्र 2017-18 के हमारे प्रतिभाशाली विद्यार्थी

मोनिका चौधरी
एम.एस-सी. द्वितीय (भौतिकी)
82.95%

वैशाली शर्मा
एम.एस-सी. द्वितीय (रसायन विज्ञान)
77.30%

गीता भारद्वाज
एम.ए. द्वितीय (संस्कृत)
74.25%

अंजू माहुर
बी.एस-सी. तृतीय
82.25%

गीतिका शर्मा
बी.कॉम. तृतीय
71.90%

मानसी गर्ग
बी.सी.ए. तृतीय
75.58%

योगिता सिंह
बी.ए. तृतीय
64.09%

रमा शर्मा
बी.एड., द्वितीय
80.71%

HAPPY TEACHERS

साहित्य संवेदना

ANAND BHAWAN

उपस्थिति-भाषण

Design & Print : Deekay P